

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५५

मैथिलीक समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान

५५

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५५

मैथिलीक समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान

आशीष अनचिन्हार | विदेह • २०२६

स्रोताधारित साहित्यिक आ भाषिक अध्ययन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ५५ । सम्पादक: आशीष अनचिन्हार ।

प्रथम प्रकाशन: २०२६ । भाषा: मैथिली । मुद्रित आकार: ६ × ९ इन्च । © २०२६

Gajendra Thakur / Preeti Thakur ।

एहि खण्डमे ठेठी-अंगिका, बज्जिका आ मैथिलीक व्याकरण-रचना तथा समानान्तर भाषा-विज्ञानक विवेचन अछि ।

मूल ग्रन्थक लेखकीय कथनकेँ आलोचनाक निष्कर्ष बुझि नहि छापल गेल अछि । उद्धरण, उदाहरण, क्षेत्रीय रूप, वर्तनी-विकल्प आ मूल लेखकीय शैलीक प्रमाण-स्थिति सुरक्षित राखल गेल अछि ।

सम्पादकीय भूमिका : पाठ, प्रमाण आ समीक्षा

साहित्यिक सम्पादनमे भाषा-सुधारक अधिकार स्वतन्त्र लेखक-स्वरकेँ मिटेबाक अधिकार नहि दैत अछि । “आएल/आयल”, “नहि/नै”, “कएल/कयल” आ “होयत/होएत/हएत” सभ मान्य लेखकीय विकल्प; एकरूपताक निर्णय संदर्भ-सापेक्ष अछि ।

ध्वनि, पद, वाक्य, अर्थ, शिल्प, कोश, शिक्षा, अनुसन्धान आ डिजिटल माध्यमक सम्बन्ध क्रमशः देखल जाए; एकटामे प्रमाणित तथ्यकेँ दोसरा विधा वा भाषापर स्वतः लागू नहि मानल जाए ।

मूल ग्रन्थक अध्याय-विन्यासक संग पाठ-सन्दर्भ आ आलोचनात्मक विवेचन प्रस्तुत अछि ।

विस्तृत अनुक्रम : खण्ड ५५

एहि अनुक्रममे मूल ग्रन्थक विभाग आ विषयसभ अपन क्रममे प्रस्तुत अछि ।

- १. समानान्तर व्याकरणक परियोजना
- २. चारि मुख्य खण्डक विन्यास
- ३. ठेठी-अंगिका : ध्वनि आ रूप-विचार
- ४. ठेठी-अंगिका : वाक्य आ रचना

- ५. वज्जिका : स्थानीय स्वरक अधिकार
- ६. मैथिली : व्याकरणसँ रचना धरि
- ७. भाषा-विज्ञान : पद्धतिक विस्तार
- ८. कॉर्पस, डिजिटल पाठ आ पुनरुत्पादन
- ९. विद्यालय, अनुवाद आ स्वाध्याय
- १०. समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष
- अध्याय १-२० : ठेठी-अंगिका
- अध्याय २१-६९३ : मैथिली व्याकरण आ रचना
- अध्याय ६९४-७६८ : भाषा-विज्ञान आधार
- अध्याय ७६९-८१३ : भाषा-विज्ञान विस्तृत अध्ययन
- अध्याय ८१४-९२६ : कॉर्पस आ प्रकारिकी विस्तार
- भाग/परिशिष्ट आधारित अतिरिक्त पूर्ण आवरण

प्रथम भाग — विषयवार विस्तृत समालोचना

१. समानान्तर व्याकरणक परियोजना

एहि ग्रन्थक मूल विशेषता ई अछि जे मैथिलीक वर्णनकेँ एकाकी मानकक रूपमे नहि, पड़ोसक जीवित भाषा-रूपसभक संग एक साझा अध्ययन-क्षेत्रमे राखल गेल अछि। “समानान्तर” शब्दक महत्त्व प्रतिस्पर्धामे नहि, तुलनाक पद्धतिमे अछि: एकहि व्याकरणिक प्रश्न तीन भाषा-रूपमे कोना अलग उत्तर पवैत अछि, से देखब आवश्यक अछि। समीक्षाक पहिल कसौटी ई अछि जे तुलनाक नामपर अलग भाषाक व्याकरणिक प्रत्यय एक-दोसरापर नहि थोपाल जाय। स्रोतक रूप, ओकर स्थानीय प्रसंग, पाठक स्तर आ उदाहरणक दर्जा अलग-अलग चिन्हित रहलासँ तुलनात्मक अध्ययन शोधोपयोगी बनैत अछि।

तुलनात्मक प्रतिपादनमे समानता आ भिन्नताक दूनू पक्ष व्यवस्थित प्रमाणसहित राखल जाए। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककेँ क्रमसँ राखल गेल अछि।

प्रमाण-प्राप्त क्षेत्र आ अप्राप्त क्षेत्रक सीमा स्पष्ट करब वैज्ञानिक निष्ठाक आधार अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

अन्तरसम्बन्धक दृष्टिसँ एहि प्रकरणक पाठकेँ एकरे लगक खण्डसभ, मूल पोथीक अनुक्रम आ विदेहक अभिलेखीय परम्परासँ जोड़िकऽ पढ़ब उपयोगी अछि। एहन पठनसँ भाषा, साहित्य, इतिहास, पहुँच आ सम्पादनक प्रश्न परस्पर सम्बादमे अबैत अछि, मुदा अलग स्रोतक भेद नहि मेटैत।

२. चारि मुख्य खण्डक विन्यास

मूल पोथी चारि बृहत्तर समूहमे विभक्त अछि: ठेठी-अंगिका व्याकरण आ रचना, बज्जिका व्याकरण आ रचना, मैथिली व्याकरण आ रचना, तथा तीनूकेँ जोड़ैत भाषा-विज्ञान। तेसर भागमे अध्याय २१-६९३ आ चारिम भागमे अध्याय ६९४-९२६क क्रम स्रोतक विषय-सूचीमे निर्दिष्ट अछि। एहन विस्तारक मूल्य केवल अध्यायक संख्यासँ नहि, पाठककेँ दिशा देबासँ निर्धारित होइत अछि। प्रारम्भिक व्याकरण, उन्नत रूप-विचार, रचना-कौशल, कॉर्पस अध्ययन आ क्षेत्रकार्यक स्तर

परस्पर पहिचानल जाए, तँ विद्यार्थी आ शोधकर्ता दुनू लेल प्रवेश-बिन्दु बनैत अछि।

एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

३. ठेठी-अंगिका : ध्वनि आ रूप-विचार

ठेठी-अंगिका खण्डक आरम्भ भाषा-परिचय, ध्वनितत्त्व, शब्द-विचार, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आ क्रिया सन आधारभूत विषयसँ होइत अछि। भाषिक पहचान केवल किछु विशिष्ट शब्द नहि, छोट अव्यय, सर्वनाम, कारक-संबंध आ क्रियाक मेलसँ व्यक्त होइत अछि। स्वर-मात्रा आ नासिकता शिक्षणमे लिखित रूप आ मौखिक चलनक अन्तर अलग देखेबाक चाही। स्थानीय वाणीकें एकहि रोमन वा देवनागरी प्रतिमे बाँधि देब ध्वनि-साक्ष्यकें कम करि सकैत अछि; स्रोतग्रहणक अवस्था स्पष्ट होएब जरूरी अछि। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

ध्वन्यात्मक मान्यता आ लिप्यन्तरणक साक्ष्यकें एक-दोसरासँ अलग देखबाक आवश्यकता अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

वक्ता, क्षेत्र, उच्चारण-सन्दर्भ आ न्यूनतम युग्मक आधारपर एहि प्रतिपादनक पुनर्परीक्षण होयबाक चाही। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

४. ठेठी-अंगिका : वाक्य आ रचना

मूल ग्रन्थमे वाक्य-विचार, मुहावरा, लोकोक्ति, पत्र-लेखन, संवाद, छन्द आ अलंकारक स्वतंत्र अध्याय अछि। ताहिसँ व्याकरणक नियम विद्यालयक वाक्य-उदाहरणमे सीमित नहि रहि रचनाक व्यवहार धरि पहुँचैत अछि। रचनाक

समीक्षा करैत समय कोनो वाक्यकेँ “शुद्ध” सिद्ध करवाक पूर्व पात्रक बोली, कथनक उद्देश्य आ पाठकक सामाजिक सम्बन्ध बुझब जरूरी अछि। लोकप्रयोगक प्रामाणिकता नष्ट कऽ कृत्रिम मानकीकरण करब व्याकरण-शिक्षणक उद्देश्य नहि भऽ सकैत अछि।

वाक्यक संरचना केवल पदक्रम नहि, सूचना-केंद्र, निषेध, प्रश्न आ उपवाक्य-संबंधक क्रियाशील संयोजन अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककेँ क्रमसँ राखल गेल अछि।

वास्तविक पाठसँ कर्ता-कर्म-क्रिया, विराम आ परोक्ष कथनक भेद जाँचल जाए। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

५. बज्जिका : स्थानीय स्वरक अधिकार

बज्जिका खण्ड ध्वनि, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, गिनती, क्रिया, परसर्ग, निपात, वाक्य-रचना आ अनुच्छेद-संवाद सहित व्यवहारिक शिक्षण प्रस्तुत करैत अछि। सर्वनाम आ सहायक-क्रियामे आदर, दूरी आ सम्बोधनक सम्बन्धकेँ विशेष सतर्कतासँ देखल जाएब चाही। बज्जिकाकेँ मैथिली वा भोजपुरीक केवल छाया रूप बुझि ग्रन्थ पढ़लासँ एकर भाषिक तथ्य ढकाएत। साझा शब्द विरासतक प्रमाण भऽ सकैत अछि, मुदा साझा शब्दसँ सम्पूर्ण वाक्यरचना एक नहि सिद्ध होइत अछि; रूपक उपयोग क्षेत्र, प्रसंग आ अर्थक संग जाँचल जाए।

६. मैथिली : व्याकरणसँ रचना धरि

मैथिली भागक अध्याय-विस्तार मूल संरचनाक सर्वाधिक पैघ शैक्षिक क्षेत्र अछि। एतय केवल पद-परिचय नहि, कारक, सम्मानसूचकता, क्रिया-पक्ष, वाक्य-प्रकार, अर्थसम्बन्ध, विराम, साहित्यिक रचना आ अभ्यासक अलग स्तर सम्भव बनैत अछि। सम्पादकीय पुनर्पाठमे वर्णनात्मक तथ्य आ नियामक सुझावक भेद अनिवार्य अछि। दू स्वीकार्य लेखकीय वर्तनी रूपमे एकटा चुनब सुविधा भऽ सकैत अछि, किन्तु चयनक सुविधा ओकर दोसर रूपकेँ अशुद्ध सिद्ध नहि करैत अछि। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए।

उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

रचनाक शिल्पमे अनुच्छेद, लक्ष्यपाठक, विधा, कथन-स्वर आ अर्थ-क्रम एक-दोसराक पूरक अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

सम्पादनमे वास्तविक लेखकीय स्वरकें बचबैत शैलीक स्पष्टता जाँचल जाए। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

७. भाषा-विज्ञान : पद्धतिक विस्तार

अध्याय ६९४-९२६क स्रोत-विभाजनमे आरम्भिक भाषा-विशिष्ट तुलना, संरचनात्मक आ प्रयोगात्मक विवेचन, आ पछाति कॉर्पस, क्षेत्रकार्य, डिजिटल, समाजभाषिक, ऐतिहासिक तथा प्रकारिक विस्तार निहित अछि। एहि क्रमसँ व्याकरणक नियमक आगाँ प्रश्न उठैत अछि: रूपक वितरण, समाजमे ओकर काम आ समयमे परिवर्तन की अछि? क्षेत्रीय रूपक दावा लेल वक्ता, स्थान, काल, संकलन-विधि आ नमूना स्पष्ट होएब चाही। केवल निर्मित उदाहरण शैक्षिक रूपसँ उपयोगी होएत, मुदा ओकरा प्रत्यक्ष क्षेत्र-अध्ययनक प्रमाणक समान स्थान नहि देल जाए।

तुलनात्मक प्रतिपादनमे समानता आ भिन्नताक दूनू पक्ष व्यवस्थित प्रमाणसहित राखल जाए। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

प्रमाण-प्राप्त क्षेत्र आ अप्राप्त क्षेत्रक सीमा स्पष्ट करब वैज्ञानिक निष्ठाक आधार अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

८. कॉर्पस, डिजिटल पाठ आ पुनरुत्पादन

डिजिटल कॉर्पसक उपयोग ध्वनि-सम्भावना, क्रियारूप, सहप्रयोग आ विकल्पक आवृत्ति देखेबाक लेल उपयोगी अछि। मुदा आवृत्ति निर्णायक मानक नहि; कोन पाठ, के लेखक, कोन विधा, आ कुन संपादकीय रूपपर गणना भेल अछि, एहि

सबहक अभिलेख चाही। मूल DOCX/मुद्रित साक्ष्य सुरक्षित राखि खोजयोग्य सामान्यीकृत प्रति अलग बनाउ। देवनागरीक मात्रा, नुक्ता, चन्द्रबिन्दु, संयुक्ताक्षर, अवग्रह आ शून्य-चौड़ाई अक्षर पर यान्त्रिक प्रक्रिया चलबासँ पहिले पाठक अखण्डता जाँचब चाही।

कॉर्पसक आवृत्ति वर्णनात्मक प्रमाण अछि, वैधानिक वर्तनी-निर्णय नहि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

नमूना-चयन, पाठ-लाइसेन्स, सामान्यीकरण, annotation आ पुनरुत्पादनीय प्रक्रियाक विवरण देल जाए। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

९. विद्यालय, अनुवाद आ स्वाध्याय

एहि पोथीक व्यवहारिक मूल्य तीनटा मार्गमे देखल जा सकैत अछि—नव विद्यार्थी लेल परिचय, शिक्षक लेल उदाहरण-आधारित व्याकरण, आ शोधार्थी लेल तुलना-पद्धतिक आधार। भाषा बीच अनुवादमे शब्दक समतुल्यता पर्याप्त नहि; सम्मान, सामाजिक दूरी, समय आ क्रियाक पक्ष सेहो बदलि सकैत अछि। अभ्यासक उत्तरमे एकमात्र रूपक अपेक्षा करबासँ बेसी उपयोगी अछि कारणसहित विकल्प-निर्णय। जँ दू रूप मान्य अछि, तँ कोन प्रसंगमे कोन रूप उपयुक्त भेल, से स्पष्ट करब सीखबाक आवश्यक भाग अछि। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

शब्द-प्रतिशब्द समानता अनुवादक पर्याप्त कसौटी नहि; अर्थ, विधा, लक्षित पाठक आ सांस्कृतिक संकेत साथ रहैत अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

स्रोत आ लक्ष्यपाठक समानान्तर खण्डसँ अर्थ-हानि, अनावश्यक विस्तार आ शैली-विचलन चिन्हब जरूरी अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ

अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

१०. समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

ग्रन्थक व्यापक आकार एकर सामर्थ्य सेहो अछि आ सम्पादकीय चुनौती सेहो। चहुँ दिशाक सामग्रीकेँ वर्गीकृत करैत समय तत्त्वक पुनरावृत्ति, उदाहरणक स्रोत, शब्दक वर्तनी आ भाषिक परम्पराक भेद देखल जाएब चाही। एहि खण्डक सम्पादकीय मूल्याङ्कन ग्रन्थकेँ अन्तिम भाषावैज्ञानिक निर्णय नहि मानैत; ई शिक्षण, शोध आ तुलनात्मक प्रश्नक एक विस्तृत मंच मानैत अछि, जकर कसौटी नव स्रोत आ खुला समीक्षा होइत रहत।

द्वितीय भाग — मूल ग्रन्थक चारि प्रमुख विभाग

ठेठी-अंगिका : व्याकरण आ रचना

मूल अनुक्रम — अध्याय १-२०; मूल भाषा-परिचय, ध्वनि-विचार, सर्वनाम, क्रिया, रचना, छन्द-अलंकार आ स्वाध्याय।

आलोचनात्मक विवेचन — स्थानीय ध्वनि आ शब्दरूपक नमूना केवल आभूषण नहि; ई स्वतंत्र व्याकरणिक प्रमाणक प्रश्न अछि। लेखक-वर्णन आ लोक-वाचिक पाठक अन्तर बचब एहि भागक आलोचनात्मक कसौटी अछि।

बज्जिका : व्याकरण, रचना आ व्यवहारिक पोथी

मूल अनुक्रम — भाग-आधारित ध्वनि, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, वाक्य, रचना; मुहावरा, शब्दकोश, अभ्यास-पुस्तिका आ व्यवहारिक मार्गदर्शिका।

आलोचनात्मक विवेचन — बज्जिकाक प्रमाणित स्थानीय रूपकेँ मैथिली अथवा भोजपुरीक तयार संरचनामे बदलब तटस्थ सम्पादन नहि; एकर भाषा-संरचनाक अपव्याख्या होएत।

मैथिली : व्याकरण आ रचना

मूल अनुक्रम — अध्याय २१-६९३; ध्वनि-संरचना, शब्दवर्ग, कारक, सर्वनाम, क्रिया, वाक्य, शब्दार्थ, छन्द, सम्पादन, व्यवहारिक लेखन आ अभ्यास।

आलोचनात्मक विवेचन — अल्पविस्तृत विद्यालयी परिभाषासँ आगू बहुसंख्यक अभ्यास, पाठ-पुनर्लेखन आ प्रायोगिक उपविभागक जाल विकसित कएल गेल अछि; दोहरावकें शिक्षण-अवधारणाक क्रममे देखल जाए।

समानान्तर आधुनिक भाषा-विज्ञान

मूल अनुक्रम — अध्याय ६१४-९२६; ध्वनिविज्ञान, रूपविज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थ-प्रयोग, समाजभाषाविज्ञान, इतिहास, कॉर्पस आ डिजिटल अनुसन्धान।

आलोचनात्मक विवेचन — समानान्तर विश्लेषणक वैज्ञानिक मूल्य तभी बढ़त जखन उदाहरणक भाषा, वक्ता, स्रोत आ जाँचयोग्य डेटा अलग चिन्हित हो; अन्यथा तुलना अनुमान बनि रहि जाएत।

तेसर भाग — सम्पूर्ण ९२६ अध्यायक क्रमवार आलोचनात्मक पञ्जी

अध्याय १-२० : ठेठी-अंगिका : मूल बीस अध्याय

अध्याय १ — भूमिका : ठेठी-अंगिका भाषा के परिचय

मूल पाठक अंश — अंग-प्रदेश, बेगूसराय, खगड़िया, मुंगेर, नौगछिया · मैथिली-विदेह प्रस्तुति

अध्याय २ — ध्वनितत्व (ध्वनि आरो वर्ण)

मूल पाठक अंश — भाषा के मूल ध्वनि के प्रतीक चिन्ह केँ “वर्ण” कहावै छै; वर्ण केँ ही “अक्षर” भी कहावै छै। ई वर्ण आकि अक्षर के फेनू कोय खंड नै करलों जाय सकै छै — जेना “दाम” केँ द-आ-म-अ में बाँटलों जाय सकै छै, मतरकि एकरों फेनू खंड नै होय।

ध्वन्यात्मक मान्यता आ लिप्यन्तरणक साक्ष्यकें एक-दोसरासँ अलग देखबाक आवश्यकता अछि। वक्ता, क्षेत्र, उच्चारण-सन्दर्भ आ न्यूनतम युग्मक आधारपर एहि प्रतिपादनक पुनर्परीक्षण होयबाक चाही।

अध्याय ३ — शब्द-विचार (शब्द-भेद आरो शब्द-रचना)

मूल पाठक अंश — उत्पत्ति के आधार पर ठेठी-अंगिका के शब्द चार भाग में बाँटलें जाय छै : ठेठी-अंगिका के एगो बड़ी खास लच्छन ई छै कि एतुका संज्ञा-शब्द के तीन रूप मिलै छै — लघु (ह्रस्व), गुरु (दीर्घ) आरो अतिरिक्त ।

शब्दक अर्थ, पद-श्रेणी आ प्रयोगक्षेत्रकें स्थिर कोशीय लेबलमे सीमित करब कठिन अछि । सहप्रयोग, वाक्य-सन्दर्भ, क्षेत्रविशेष आ ऐतिहासिक स्रोत जाँचिकऽ निर्णय करब समीचीन अछि ।

अध्याय ४ — संज्ञा (लिंग . वचन . कारक)

मूल पाठक अंश — कोनो व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, ठाम आकि भाव के नाम कें “संज्ञा” कहावै छै । ठेठी-अंगिका में संज्ञा के तीन भेद छै — व्यक्तिवाचक (जेना राम, भागलपुर), जातिवाचक (जेना घऽर, गाय, बूतरू) आरो भाववाचक (जेना मिठास, बुढ़ापा, पढ़ाई) ।

कारकक अर्थक सम्बन्ध आ ओकर प्रत्यक्ष परसर्ग-संकेत हमेशा एक-एक अनुपातमे नहि भेटैत अछि । कर्तृत्व, साधन, सम्प्रदान, स्रोत आ स्थानक अर्थकें अलग उदाहरणसँ परखब आवश्यक अछि ।

अध्याय ५ — सर्वनाम (Pronoun)

मूल पाठक अंश — जे शब्द सब नाम (संज्ञा) के बदला में आवै छै, ऊ “सर्वनाम” छैकै । ठेठी-अंगिका में आठ प्रकार के सर्वनाम मिलै छै — (१) पुरुषवाचक, (२) निश्चयवाचक, (३) सम्बन्धवाचक, (४) नित्यसम्बन्धबोधक, (५) प्रश्नवाचक, (६) अनिश्चयवाचक, (७) निजवाचक आरो (८)...

व्यक्ति, दूरी, सामाजिक सम्बन्ध आ सम्मानक बहुस्तरीय व्यवस्था एहि विषयक वास्तविक केन्द्रीय प्रश्न अछि । एकहि व्यक्तिक रूपभेदकें वाक्यमे ओकर व्याकरणिक भूमिका आ सामाजिक प्रसंगसँ जोड़िकऽ पढ़ल जाए ।

अध्याय ६ — विशेषण (Adjective)

मूल पाठक अंश — जे शब्द संज्ञा आकि सर्वनाम के गुण, दोष, संख्या आकि परिमाण बतावै छै, ऊ “विशेषण” छैकै; आरो जेकर बारे में बतावलों जाय ऊ “विशेष्य” छैकै।

अध्याय ७ — क्रिया (Verb)

मूल पाठक अंश — जे शब्द सें कोनो काम के करना आकि होना के पता चलै, ओकरा “क्रिया” कहावै छै। ठेठी-अंगिका के मुख्य सहायक क्रिया सिनी छैकै — छी, छै, छिऐ, छीक, छिकै, छिका, छेलियै, छलै, छलै, रही, रहिऐ, रहै, रहैं।

काल, पक्ष, भाव आ आदरकें एकटा मात्र प्रत्यय-सारणीमे समेटलासँ अर्थभेद ओझराएत। प्रत्येक क्रियारूपकें कर्ता, प्रसंग, पूर्ण वाक्य आ स्रोतसहित मिलेनाइ जरूरी अछि।

अध्याय ८ — अव्यय (आरो निपात)

मूल पाठक अंश — व्याकरण के हिसाब सें जौन शब्द में कारक, लिंग, वचन आकि पुरुष के कारण कोय विकार (परिवर्तन) नै होय, ओकरा “अव्यय” कहावै छै; जेना—आबें, तबें, आरो, मुतर, पर।

अध्याय ९ — समास (Compound)

मूल पाठक अंश — दू अथवा दू सें बेसी शब्द (पद) जबें आपनों-आपनों विभक्ति, प्रत्यय आरो कारक-चिन्ह छोड़ी कें मिली जाय छै, तबें वै मेल कें “समास” कहावै छै। “समास” के माने ही छैकै — “संक्षेप”। समास मुख्य रूप सें छह प्रकार के होय छै।

अध्याय १० — शब्द-निर्माण (उपसर्ग . प्रत्यय)

मूल पाठक अंश — नया शब्द बनावै लेली मूल शब्द के आगू आकि पीछू कुछ शब्दांश जोड़लों जाय छै। शब्द के आगू में जुड़ी कें जे ओकर माने में विकार लावै, ओकरा “उपसर्ग” कहावै छै। ठेठी-अंगिका में संस्कृत, हिन्दी आरो उर्दू — तीनू के उपसर्ग चलै छै।

अध्याय ११ — वाक्य-विचार (आरो विराम-चिन्ह)

मूल पाठक अंश — मन के पूरा भाव कें बतावै वाला शब्द-समूह कें “वाक्य” कहावै छै। हर वाक्य के दू अंग होय छै — उद्देश्य (जेकरा बारे में कुछ कहल जाय) आरो विधेय (जे कुछ कहल जाय)। जेना “राम भात खाय छै” में “राम” उद्देश्य आरो “भात खाय छै” विधेय छैकै।

वाक्यक संरचना केवल पदक्रम नहि, सूचना-केंद्र, निषेध, प्रश्न आ उपवाक्य-संबंधक क्रियाशील संयोजन अछि। वास्तविक पाठसँ कर्ता-कर्म-क्रिया, विराम आ परोक्ष कथनक भेद जाँचल जाए।

अध्याय १२ — रचना कला : गद्य-विधा

मूल पाठक अंश — आपनों भाव आरो विचार कें सुन्दर, सरस आरो प्रभावशाली ढंग सें लिखै-कहै के कला कें “रचना कला” कहावै छै। रचना मुख्य रूप सें दू ढंग के होय छै — गद्य (जे बोलचाल के नाँखी सीधा चलै) आरो पद्य (जे लय-छन्द में बन्हलौ रहै)।

रचनाक शिल्पमे अनुच्छेद, लक्ष्यपाठक, विधा, कथन-स्वर आ अर्थ-क्रम एक-दोसराक पूरक अछि। सम्पादनमे वास्तविक लेखकीय स्वरकें बचबैत शैलीक स्पष्टता जाँचल जाए।

अध्याय १३ — रचना कला : पद्य (कविता · छन्द · रस · अलंकार)

मूल पाठक अंश — रचना कला : पद्य (कविता · छन्द · रस · अलंकार) भाव आरो कल्पना कें लय के संगे प्रकट करै वाला रचना कें “कविता” कहावै छै। अक्षर, मात्रा, यति आरो गति के नियम में बन्हलौ पद्य कें “छन्द” कहावै छै।

अध्याय १४ — मुहावरा आरो लोकोक्ति

मूल पाठक अंश — जे वाक्यांश आपनों सीधा (शाब्दिक) अर्थ छोड़ी कें कोनो खास, लाक्षणिक अर्थ देय, ओकरा “मुहावरा” कहावै छै। मुहावरा भाषा कें सजीव आरो असरदार बनावै छै। जेना — “थूकी कें चाटबों” (कहलौ बात सें पलटना), “दही में मसुर” (कोनो चीज में गड़बड़ी)।

अध्याय १५ — शब्द-अर्थ विवेचन (उन्नत)

मूल पाठक अंश — १५.१ अर्थ-ग्रहण के साधन (संकेतग्रह) कोनो शब्द के अर्थ मन में केना बैठै छै — एकरा “संकेतग्रह” कहावै छै। परम्परा में एकर आठ साधन मानलौ गेलौ छै — (१) व्याकरण, (२) उपमान, (३) कोश, (४) आप्त वाक्य, (५) व्यवहार, (६) व्याख्या, (७) विवृत्ति...

अध्याय १६ — अनुच्छेद आरो निबन्ध-लेखन

मूल पाठक अंश — कोनो एक विचार आकि बात कें एके पैराग्राफ में, क्रम सें आरो संक्षेप में लिखना “अनुच्छेद” कहावै छै। नीक अनुच्छेद के तीन बात — एक ही मुख्य विचार पर टिकलौ रहौ, बात कें सधलौ क्रम में रखौ, आरो भाषा सटीक-संक्षिप्त राखौ।

अध्याय १७ — पत्र-लेखन

मूल पाठक अंश — दूर बैठलौ केकरो सें आपनौ मन के बात लिखी कें पहुँचावै के साधन “पत्र” छेकै। पत्र मुख्य रूप सें दू तरह के होय छै — व्यक्तिगत (घर-परिवार, दोस्त-नाता लेली) आरो औपचारिक (दफ्तर, आवेदन, व्यापार आकि अखबार लेली)।

अध्याय १८ — संवाद-लेखन

मूल पाठक अंश — दू आकि दू सें बेसी पात्र के बीच के बातचीत कें लिखी कें देखावै वाला रचना “संवाद” छेकै। नाटक, कहानी आरो फिल्म में संवाद के बड़ी महत्व छै; संवादे पात्र कें जीवन्त करै छै आरो कथा कें आगू बढ़ावै छै।

अध्याय १९ — छन्द (विस्तृत)

मूल पाठक अंश — अक्षर, मात्रा, यति आरो गति के नियम में बन्हलौ पद्य-रचना कें “छन्द” कहावै छै। छन्द सें कविता में लय आरो संगीत आवै छै, आरो ओकरा याद रखना सोझ होय छै। ठेठी-अंगिका के लोकगीत आरो कविता — दुनू में छन्द के समृद्ध परम्परा छै।

अध्याय २० — अलंकार (विस्तृत)

मूल पाठक अंश — जेना गहना सें शरीर के शोभा बढ़ै छै, ओहने काव्य के शोभा बढ़ावै वाला तत्व के “अलंकार” कहावै छै। अलंकार के दू मुख्य भेद होय छै — शब्दालंकार (शब्द के चमत्कार पर) आरो अर्थालंकार (अर्थ के चमत्कार पर)।

अध्याय २१-६९३ : मैथिली : व्याकरण, रचना आ अनुप्रयोग

अध्याय २१ — भाषा, व्याकरण आ मैथिली — परिचय

मूल पाठक अंश — भाषा मनुष्यक भाव, विचार आ अनुभवकेँ दोसरा धरि पहुँचयबाक साधन थिक। जखन हम अपन मनक बात ध्वनि, शब्द आ वाक्यक माध्यमसँ दोसरकेँ बुझा दैत छी, तखन ओ प्रक्रिया भाषा कहबैत अछि।

अध्याय २२ — वर्णमाला — स्वर आ व्यंजन

मूल पाठक अंश — भाषाक सभसँ छोट ध्वनि-इकाई, जकर आगाँ आर टुकड़ा नहि कयल जा सकैत अछि, ओकरा वर्ण कहल जाइत अछि। जेना 'कमल' शब्दमे क्, अ, म्, अ, ल्, अ—ई छहटा वर्ण अछि। वर्ण भाषाक मूल आधार थिक; वर्णसँ अक्षर, अक्षरसँ शब्द आ शब्दसँ वाक्य बनैत अछि।

अध्याय २३ — उच्चारण आ ध्वनि-नियम

मूल पाठक अंश — बाजल भाषाक प्राण उच्चारणमे बसैत अछि। एकहि वर्णक थोड़बो अशुद्ध उच्चारणसँ शब्दक अर्थ बदलि सकैत अछि। जेना—'पान' आ 'वान', 'काल' आ 'गाल'—एहिमे मात्र एक व्यंजनक अन्तरसँ पूरा अर्थ भिन्न भऽ जाइत अछि।

अध्याय २४ — संधि

मूल पाठक अंश — दुइ वर्णक परस्पर मेलसँ जे ध्वनि-विकार (परिवर्तन) होइत अछि, ओकरा संधि कहल जाइत अछि। जेना—देव + आलय = देवालय। एतऽ 'देव' क अन्तिम 'अ' आ 'आलय' क आदि 'आ' मिलि कऽ 'आ' भऽ गेल।

अध्याय २५ — शब्द-विचार

मूल पाठक अंश — एक वा बेसी वर्णक एहन सार्थक समूह, जकर कोनो अर्थ निकलैत अछि, ओकरा शब्द कहल जाइत अछि। जेना—'गाम', 'पानि', 'सुख', 'पढ़ब'—ई सभ शब्द थिक, कारण एकर स्पष्ट अर्थ अछि। एकर विपरीत, 'कखग', 'लगप' सन निरर्थक ध्वनि-समूह शब्द नहि थिक।

अध्याय २६ — संज्ञा

मूल पाठक अंश — कोनो व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी, गुण, भाव वा अवस्थाक नामकें संज्ञा (Noun) कहल जाइत अछि। संक्षेपमे—जे कोनो चीजक 'नाम' थिक, ओ संज्ञा थिक। अर्थक आधारपर संज्ञाक पाँच भेद कयल जाइत अछि।

अध्याय २७ — लिंग

मूल पाठक अंश — संज्ञाक जे रूप ओकर पुरुष-जाति वा स्त्री-जातिक बोध करबैत अछि, ओकरा लिंग (Gender) कहल जाइत अछि। जेना—'बालक' शब्दसँ पुरुष-जातिक आ 'बालिका' शब्दसँ स्त्री-जातिक बोध होइत अछि।

अध्याय २८ — वचन

मूल पाठक अंश — संज्ञा वा सर्वनामक जे रूप ओकर संख्या—एक अथवा एकसँ बेसी—क बोध करबैत अछि, ओकरा वचन (Number) कहल जाइत अछि। जेना—'गाछ' सँ एक गाछक आ 'गाछ सभ' सँ अनेक गाछक बोध होइत अछि। एकवचन (Singular): एक वस्तु वा व्यक्तिक बोध करबय वला।

अध्याय २९ — कारक

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय ३० — सर्वनाम

मूल पाठक अंश — संज्ञाक बदलामे प्रयुक्त होबय वला शब्दकें सर्वनाम (Pronoun) कहल जाइत अछि। एकर उद्देश्य एकहि संज्ञाकें बेर-बेर दोहराबासँ बचब थिक।

अध्याय ३१ — विशेषण

मूल पाठक अंश — जे शब्द संज्ञा वा सर्वनामक विशेषता (गुण, दोष, संख्या, परिमाण आदि) बतबैत अछि, ओकरा विशेषण (Adjective) कहल जाइत अछि। जकर विशेषता बताओल जाइत अछि, ओ संज्ञा विशेष्य कहबैत अछि। अर्थक आधारपर विशेषणक चारि प्रमुख भेद अछि।

अध्याय ३२ — क्रिया

मूल पाठक अंश — जे शब्द कोनो काजक करब वा कोनो अवस्थाक होएबक बोध करबैत अछि, ओकरा क्रिया (Verb) कहल जाइत अछि। जेना—पढ़ब, लिखब, दौड़ब, सुतब, होएब। क्रिया वाक्यक प्राण थिक, कारण एकरा बिना कोनो पूर्ण वाक्य नहि बनैत।

अध्याय ३३ — क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — जे शब्द क्रियाक विशेषता बतबैत अछि, ओकरा क्रियाविशेषण (Adverb) कहल जाइत अछि। जेना विशेषण संज्ञाक विशेषता बतबैत अछि, तहिना क्रियाविशेषण क्रियाक विशेषता बतबैत अछि।

अध्याय ३४ — अव्यय

मूल पाठक अंश — जाहि शब्दक रूप लिंग, वचन, कारक वा कालक अनुसार कहियो नहि बदलैत, ओकरा अव्यय (Indeclinable) कहल जाइत अछि। 'अव्यय' शब्दक अर्थ थिक—'जकर व्यय (क्षय/परिवर्तन) नहि होइत'। ई हर स्थितिमे एकहि रूपमे बनल रहैत अछि।

अध्याय ३५ — वाक्य — संरचना आ पदक्रम

मूल पाठक अंश — पदक एहन सार्थक समूह, जे कोनो पूर्ण अर्थ प्रकट करैत अछि, ओकरा वाक्य (Sentence) कहल जाइत अछि। जेना—"बच्चा विद्यालय जाइत अछि।"—ई एकटा पूर्ण वाक्य थिक, कारण एहिसँ एकटा पूर्ण बात बुझल जाइत अछि। पद अकेला अधूरा रहैत अछि;

अध्याय ३६ — वाच्य

मूल पाठक अंश — क्रियाक जे रूप ई बतवैत अछि जे वाक्यमे प्रधानता कतऽ अछि—कर्तापर, कर्मपर, अथवा केवल भावपर—ओकरा वाच्य (Voice) कहल जाइत अछि। वाच्यक अनुसार क्रियाक रूप आ ओकर सामञ्जस्य (agreement) बदलैत अछि।

अध्याय ३७ — वाक्य-भेद आ उपवाक्य

मूल पाठक अंश — वाक्यकें दुइ भिन्न दृष्टिसँ बाँटल जाइत अछि—एक, ओकर रचना (बनावट) क आधारपर; आ दोसर, ओकर अर्थ (भाव) क आधारपर। दुनू वर्गीकरण स्वतन्त्र थिक—एकहि वाक्य दुनू दृष्टिसँ अपन-अपन कोटिमे अवैत अछि।

अध्याय ३८ — पत्र-लेखन

मूल पाठक अंश — आइ दूरभाष आ अन्तर्जालक (internet) युगमे सेहो पत्र-लेखनक अपन महत्त्व अछि। कार्यालयीन प्रार्थना, आवेदन, निमन्त्रण आ पारिवारिक सम्बन्ध—सभमे पत्रक उपयोग होइत अछि। नीक पत्र लिखबाक कला व्यक्तिक भाषा, विचार आ शिष्टाचार—तीनूक परिचय दैत अछि।

अध्याय ३९ — निबन्ध-लेखन

मूल पाठक अंश — कोनो एक विषयपर क्रमबद्ध, सुसंगठित आ सुविचारित रूपसँ लिखल गेल विचारक प्रस्तुतिकें निबन्ध (Essay) कहल जाइत अछि। नीक निबन्ध लेखकक ज्ञान, चिन्तन आ भाषा-सामर्थ्य—तीनूक परिचय दैत अछि।

अध्याय ४० — संवाद, अनुवाद आ संक्षेपण

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायमे तीन प्रायोगिक रचना-कौशलक विवेचन अछि—संवाद-लेखन, अनुवाद आ संक्षेपण। ई तीनू दैनिक व्यवहार आ परीक्षा—दुनूमे अत्यन्त उपयोगी अछि।

शब्द-प्रतिशब्द समानता अनुवादक पर्याप्त कसौटी नहि; अर्थ, विधा, लक्षित पाठक आ सांस्कृतिक संकेत साथ रहैत अछि। स्रोत आ लक्ष्यपाठक समानान्तर खण्डसँ अर्थ-हानि, अनावश्यक विस्तार आ शैली-विचलन चिन्हब जरूरी अछि।

अध्याय ४१ — विराम-चिह्न

मूल पाठक अंश — लेखनमे कतऽ रुकब, कतऽ थमब आ कोन भाव प्रकट करब — ई सभ देखयबा हेतु जे चिह्न प्रयुक्त होइत अछि, ओकरा विराम-चिह्न (Punctuation) कहल जाइत अछि। 'विराम' शब्दक अर्थे थिक—रुकब वा ठहरब। विराम-चिह्न लेखनकें स्पष्ट आ अर्थपूर्ण बनबैत अछि।

अध्याय ४२ — छन्द

मूल पाठक अंश — वर्ण वा मात्राक नियमित आ व्यवस्थित गणनासँ युक्त पद्य-रचनाकें छन्द (Metre) कहल जाइत अछि। छन्द पद्यकें लय, गति आ संगीतात्मकता प्रदान करैत अछि। जेना गद्यक प्राण अर्थमे, तहिना पद्यक प्राण छन्दमे बसैत अछि।

अध्याय ४३ — अलंकार

मूल पाठक अंश — जे तत्त्व काव्य वा भाषाक शोभा बढ़बैत अछि, ओकरा अलंकार (Figure of Speech) कहल जाइत अछि। जेना आभूषण शरीरक शोभा बढ़बैत अछि, तहिना अलंकार भाषाक सौन्दर्य आ प्रभावकें बढ़बैत अछि। 'अलंकार' शब्दक अर्थे थिक—'शोभा बढ़बय वला'।

अध्याय ४४ — भाषा, व्याकरण आ रचना

मूल पाठक अंश — मनुष्य अपन विचार, अनुभव, इच्छा, प्रश्न, आदेश, भावना आ ज्ञान दोसर व्यक्ति धरि पहुँचयबाक लेल जे व्यवस्थित ध्वनि अथवा लिखित संकेतक प्रयोग करैत अछि, ओकर मुख्य साधन भाषा अछि। हम घर जाइत छी। अहाँ कतय जा रहल छी? आइ वर्षा भऽ सकैत अछि।

अध्याय ४५ — वाक्य

मूल पाठक अंश — जे शब्द अथवा शब्दसमूह प्रसङ्गानुसार पूर्ण अथवा पर्याप्त विचार व्यक्त करए, ओकरा वाक्य कहल जाइत अछि। प्रसङ्ग रहला पर एक शब्दो पूर्ण कथनक काज कऽ सकैत अछि—“आउ”, “नहि”, “किएक?” आदि।

अध्याय ४६ — मैथिली वाक्यक सामान्य पदक्रम

मूल पाठक अंश — साधारण विधानवाचक मैथिली वाक्यमे सामान्य प्रवृत्तिः कर्ता + कर्म/पूरक + क्रिया। अंग्रेजीमे सामान्य क्रम Subject + Verb + Object होइत अछि; मैथिलीमे बहुधा Subject + Object/Complement + Verb। ई तुलना केवल शिक्षण-सुविधा लेल अछि।

अध्याय ४७ — अर्थानुसार वाक्यक प्रकार

मूल पाठक अंश — पृथ्वी सूर्यक चारूकात घूमैत अछि। हमर भाई पटना गेल अछि। काल्हि विद्यालय बन्द रहत। अहाँ घर जाएब? ओ एतय छथि? के आयल? अहाँ कतय जाइत छी? ई ककर पोथी अछि? बैस। बैसू। कृपया बैसू। ध्यानसँ पढ़।

अध्याय ४८ — शब्दक व्याकरणिक वर्ग

मूल पाठक अंश — वाक्यक सभ शब्द एक्के प्रकारक काज नहि करैत अछि। “राम आइ बजारसँ एकटा नीक पोथी अनलनि”मे राम व्यक्ति, आइ समय, बजारसँ स्रोत, एकटा निर्धारण/गणना, नीक गुण, पोथी वस्तु आ अनलनि क्रिया व्यक्त करैत अछि।

अध्याय ४९ — संज्ञाक आरम्भिक परिचय

मूल पाठक अंश — जे शब्द व्यक्ति, स्थान, वस्तु, पदार्थ, समूह, गुण, अवस्था, घटना अथवा विचारक नाम बुझाबए, ओकरा संज्ञा कहल जा सकैत अछि। व्यक्ति—सीता, विद्यापति, शिक्षक। स्थान—मिथिला, जनकपुर, दरभङ्गा। वस्तु—पोथी, घर, कलम। पदार्थ—पानि, दूध, सोन।

अध्याय ५० — सर्वनामक आरम्भिक परिचय

मूल पाठक अंश — संज्ञाक पुनरावृत्ति घटेबाक लेल अथवा व्यक्ति-वस्तुक संकेत करबाक लेल सर्वनाम प्रयुक्त होइत अछि। मोहन विद्यालय गेल। ओ शिक्षकसँ भेटल आ हुनका पोथी देलक। प्रथम पुरुष—हम, हम सभ। द्वितीय पुरुष—तू, अहाँ, अपने आदि।

अध्याय ५१ — क्रियाक आरम्भिक परिचय

मूल पाठक अंश — क्रिया कार्य, अवस्था, परिवर्तन, अनुभव वा घटना व्यक्त करैत अछि। राम दौडैत अछि। बच्चा सूतल अछि। पानि गरम भऽ गेल। हमरा ठण्ड लगैत अछि। सीता पोथी पढ़ैत छथि। — “पोथी” कर्म अछि। बच्चा सूतैत अछि। सूर्य उगल। हम जाएब।

अध्याय ५२ — विशेषण

मूल पाठक अंश — जे शब्द संज्ञा वा सर्वनामक गुण, अवस्था, संख्या, आकार अथवा प्रकार स्पष्ट करए, ओ विशेषण अछि। नीक विद्यार्थी, पैघ घर, मीठ आम, पाँचटा पोथी, पुरान मन्दिर। ई घर पैघ अछि। — “पैघ” विधेयात्मक विशेषण।

अध्याय ५३ — क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — जे पद मुख्यतः क्रिया, विशेषण वा दोसर क्रियाविशेषणक अर्थ अधिक स्पष्ट करए, ओकरा क्रियाविशेषण कहल जाइत अछि। समय—आइ, काल्हि, आब, पहिने। स्थान—एतय, ओतय, आगाँ, पाछाँ। रीति—धीरे, ध्यानसँ। मात्रा—बहुत, कम, अत्यन्त।

अध्याय ५४ — परसर्ग

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे संज्ञा अथवा सर्वनामक दोसर पदसँ सम्बन्ध बताबयवला अनेक रूप संज्ञा वा सर्वनामक बाद अबैत अछि। घरमे, गामसँ, रामक संग, बच्चाक लेल, पटना धरि। अंग्रेजी in the house / with Ram जकाँ preposition संज्ञासँ पहिने अबैत अछि;

अध्याय ५५ — समुच्चयबोधक

मूल पाठक अंश — जे शब्द दू शब्द, पदसमूह वा वाक्यकें जोड़ए, ओ समुच्चयबोधक अछि। राम आ श्याम आयल। हम जाएब, मुदा आइ नहि। जँ वर्षा होयत तँ हम घरमे रहब। समुच्चयबोधक कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५६ — पदसमूह

मूल पाठक अंश — एकसँ अधिक शब्द मिलि वाक्यमे एक इकाई जकाँ काज करए तँ ओकरा पदसमूह बुझल जा सकैत अछि। गामक ओ पुरान लाल घर आब खाली अछि। — “गामक ओ पुरान लाल घर” संज्ञा-पदसमूह अछि; मुख्य शब्द “घर”।

अध्याय ५७ — उपवाक्य

मूल पाठक अंश — उपवाक्य एहन शब्दसमूह अछि जाहिमे क्रियात्मक संरचना रहैत अछि आ जे पैघ वाक्यक भाग बनि सकैत अछि। हम जनैत छी जे ओ काल्हि आएत। जे विद्यार्थी मेहनत करैत अछि, से आगाँ बढ़ैत अछि। जँ अहाँ मेहनत करब तँ सफल होयब। जखन वर्षा रुकत, तखन हम जाएब।

अध्याय ५८ — सरल, संयुक्त आ मिश्र वाक्य

मूल पाठक अंश — राम आयल। हमर गामक पुरान विद्यालयक सभ विद्यार्थी आइ सबेरे प्रतियोगितामे भाग लेबाक लेल दरभङ्गा गेल। सरल वाक्य छोट होएब आवश्यक नहि; मुख्य क्रियात्मक केन्द्र एकटा रहैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “सरल, संयुक्त आ मिश्र वाक्य” अछि।

अध्याय ५९ — व्याकरण आ अर्थ

मूल पाठक अंश — क्रियाक रूप बदलला पर समय, अवस्था, पूर्णता, सम्भावना, शर्त आदि अर्थ बदलि सकैत अछि। ओ जाइत अछि। ओ जा रहल अछि। ओ गेल। ओ जा चुकल अछि। ओ जाएत। ओ जाइत तँ नीक होइत। काल, पक्ष आ भावकें एक्के वस्तु नहि मानब;

अर्थ-निर्माण शब्दकोशक परिभाषामात्र नहि; सन्दर्भ, निहितार्थ आ वक्ताक अभिप्रायसँ बनैत अछि। समरूप शब्द, बहुअर्थक प्रयोग आ अनुवाद-चयनक प्रमाणित पाठसँ जाँच करी।

अध्याय ६० — व्याकरण आ सामाजिक सम्बन्ध

मूल पाठक अंश — मैथिली वाक्य बनबैत समय वक्ता, श्रोता आ उल्लिखित व्यक्तिक सामाजिक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि। आदर केवल शिष्टाचारक विषय नहि; सर्वनाम आ क्रिया-रूपक चुनावपर सेहो प्रभाव पड़ैत अछि।

अध्याय ६१ — शुद्ध वाक्य बनाबयक पाँच आधार

मूल पाठक अंश — अस्पष्ट: ओ ओकरा कहल जे ओ आएत। स्पष्ट: रमेश मोहनकेँ कहलनि जे सीता आएती। दुर्बल: हम विद्यालय गेलहुँ वर्षा भेल। सुधार: जखन हम विद्यालय पहुँचलहुँ, तखन वर्षा शुरू भेल। दुर्बल: ई पोथी बहुत नीक पोथी अछि आ एहि पोथीमे बहुत नीक कथा अछि।

अध्याय ६२ — संज्ञाक विस्तृत स्वरूप

मूल पाठक अंश — संज्ञा केवल “नाम” नहि; वाक्यमे ओ व्यक्ति, वस्तु, स्थान, पदार्थ, समूह, घटना, गुण वा अमूर्त धारणा केँ सन्दर्भित करैत अछि। एक्के संज्ञा अलग प्रसङ्गमे सामान्य वर्ग, निश्चित वस्तु अथवा विशेष सामाजिक इकाई बुझा सकैत अछि।

अध्याय ६३ — वचन आ बहुलता

मूल पाठक अंश — 20.1 अंग्रेजी सन अनिवार्य बहुवचन नहि मैथिली संज्ञामे अंग्रेजी जकाँ प्रत्येक बहुवचन संज्ञाकेँ अनिवार्य रूपेँ रूपान्तरित करबाक नियम नहि अछि। बहुलता संख्या, परिमाण, “सभ” आदि शब्द, प्रसङ्ग अथवा मानव-सूचक समूह-पदसँ स्पष्ट भऽ सकैत अछि।

अध्याय ६४ — संख्या, “टा/गोटा” आ गणना

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे संख्या आ गणनीय संज्ञाक बीच “टा”, “गोटा/गोट” आदि रूप बहुधा प्रयुक्त होइत अछि। शिक्षण-सुविधा लेल एकरा गोटा-वाचक वा गणना-सूचक पद कहल जा सकैत अछि। एकटा पोथी दूटा कलम तीनटा आम एक गोट प्रश्न पाँच गोट आदमी

अध्याय ६५ — कारक, कारक-चिह्न आ परसर्ग

मूल पाठक अंश — व्यावहारिक व्याकरणमे निम्न तीन बात अलग राखब उपयोगी अछि: वाक्यमे संज्ञा-पदसमूहक कार्य—कर्ता, कर्म, ग्रहणकर्ता, साधन, स्रोत, स्थान, सम्बन्ध आदि। संज्ञा वा सर्वनामपर जुड़यवला बन्धित कारक-चिह्न वा रूप-परिवर्तन।

अध्याय ६६ — कर्ता आ कर्म

मूल पाठक अंश — सामान्य विधानवाचक वाक्यमे कर्ता प्रायः बिना विशेष कारक-चिह्नक अबैत अछि। नोकर पानि अनैत अछि। मोहन पोथी पढ़लनि। बालक आयल। “कै” मनुष्य-सूचक, सर्वनामिक, निश्चित अथवा विशिष्ट प्रत्यक्ष कर्मक संग प्रमुख रूपेँ भेटैत अछि।

अध्याय ६७ — “सँ”: साधन, स्रोत, तुलना आ संगति

मूल पाठक अंश — माए चक्कूँसँ आम छीललनि। हम हाथसँ लिखलहुँ। ओ बससँ पटना गेल। एतय “सँ” कार्यक साधन वा माध्यम व्यक्त करैत अछि। गाछसँ पात खसल। हम दरभङ्गासँ आबि रहल छी। हुनकासँ समाचार भेटल। एतय “सँ” आरम्भ-बिन्दु, स्रोत वा अलगावक अर्थ दैत अछि।

तुलनात्मक प्रतिपादनमे समानता आ भिन्नताक दूनू पक्ष व्यवस्थित प्रमाणसहित राखल जाए। प्रमाण-प्राप्त क्षेत्र आ अप्राप्त क्षेत्रक सीमा स्पष्ट करब वैज्ञानिक निष्ठाक आधार अछि।

अध्याय ६८ — सम्बन्ध : “क/अक”

मूल पाठक अंश — सम्बन्ध-चिह्न संज्ञा-पदसमूहकेँ विशेषण-जकाँ दोसर संज्ञाक विशेषक बनबैत अछि। साधारण लिखित रूपमे स्वरान्त शब्दक बाद “क” आ व्यंजनान्त आधारक संग “अक/क”क रूप-भिन्नता देखल जा सकैत अछि; व्यवहारमे स्थापित शब्दरूपक अनुसरण आवश्यक अछि।

अध्याय ६९ — स्थान : “मे” आ “पर”

मूल पाठक अंश — “मे” भीतर, अन्तर्गत, क्षेत्र, अवधि, मूल्य-सन्दर्भ आदि अनेक अर्थ व्यक्त कऽ सकैत अछि। घरमे माए छथि। बोरामे चाउर अछि। चाहमे चीनी कम अछि। ई काज दू दिनमे होयत।

अध्याय ७० — दिशा, सीमा, प्रयोजन आ अभाव

मूल पाठक अंश — विद्यालय धरि पैदल गेलहुँ। साँझ धरि काज करू। “धरि/तक” स्थानिक वा कालिक सीमा व्यक्त करैत अछि। शैली आ क्षेत्रक अनुसार विकल्प भेटि सकैत अछि। ई पोथी बच्चाक लेल अछि। हम पढ़बाक लेल पुस्तकालय गेलहुँ।

अध्याय ७१ — सम्बोधन

मूल पाठक अंश — पारम्परिक व्याकरणमे सम्बोधनकेँ कारक कहल जाइत अछि, मुदा आधुनिक वर्णनमे सम्बोधन-पद वा सम्बोधन-कणकेँ अलग प्रकारेँ बुझब उपयोगी अछि। “यौ”, “हौ”, “रौ” आदि रूप सामाजिक सम्बन्ध आ आदर-स्तर व्यक्त करैत अछि; प्रयोग अत्यन्त प्रसङ्ग-संवेदी अछि।

अध्याय ७२ — संज्ञा-पदसमूहक आन्तरिक क्रम

मूल पाठक अंश — संज्ञा अकेले नहि, निर्धारक, संख्या, विशेषण, सम्बन्धसूचक पद आदि संग मिलि पैघ संज्ञा-पदसमूह बनबैत अछि। ई तीनटा पुरान मैथिली पोथी हमर दूटा नीक कलम गामक ओ पैघ पोखरि सामान्य प्रवृत्ति:
[संकेत/सम्बन्ध] + [संख्या/गणना] + [विशेषण] + मुख्य...

अध्याय ७३ — अंग्रेजीसँ व्यावहारिक तुलना

मूल पाठक अंश — अनुवादमे शब्द-दर-शब्द नकल नहि; अर्थ आ व्याकरणिक कार्यक समकक्ष संरचना चुनू। अंग्रेजीसँ व्यावहारिक तुलना पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर...

अध्याय ७४ — सामान्य अशुद्धि आ सुधार

मूल पाठक अंश — दुर्बल/अप्राकृतिक: हम तीन पोथीसभ किनलहुँ। सुधार: हम तीनटा पोथी किनलहुँ। / हम पोथी सभ किनलहुँ। कारण: संख्या आ बहुलता एक्के ठाम अनावश्यक दोहराओल जा सकैत अछि; प्रसङ्गानुसार स्वाभाविक रूप चुनू।

अध्याय ७५ — सर्वनामक स्वरूप आ कार्य

मूल पाठक अंश — 32.1 सर्वनाम केवल संज्ञाक विकल्प नहि “राम आयल। राम बैसल। राम पोथी खोललक।” एहन पुनरावृत्ति स्वाभाविक गद्यकेँ भारी बना दैत अछि। सर्वनाम एहि पुनरावृत्तिक घटबैत अछि: “राम आयल। ओ बैसल आ पोथी खोललक।” मुदा सर्वनामक काज एतबे नहि।

अध्याय ७६ — प्रथम पुरुष :हम,हमरा,हमर

मूल पाठक अंश — वक्ता अपन विषयमे “हम”क प्रयोग करैत अछि। मैथिलीमे “हम” एकवचन वक्ताक सामान्य रूप अछि। स्पष्ट समूह व्यक्त करबाक लेल “हम सभ” अत्यन्त सामान्य अछि। कर्ता-रूप “हम”क बदला अनेक कर्म, अनुभवकर्ता आ परसर्गीय प्रसङ्गमे “हमरा” अबैत अछि।

अध्याय ७७ — द्वितीय पुरुष आ आदरक स्तर

मूल पाठक अंश — द्वितीय पुरुष मैथिली व्याकरणक अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र अछि, कारण अंग्रेजीक एक्के “you”क बदला मैथिलीमे सामाजिक सम्बन्ध आ आदरक अनुसार एकाधिक रूप भेटैत अछि। विद्वत् वर्णनमे चारि स्तर धरि विश्लेषण भेटैत अछि;

अध्याय ७८ — तृतीय पुरुष :निकटता,दूरी आ आदर

मूल पाठक अंश — निकट व्यक्ति वा वस्तुक सामान्य सन्दर्भमे “ई” प्रयुक्त होइत अछि। तिर्यक् रूप “एकरा” आ सम्बन्धरूप “एकर” अछि। 35.2 दूर अथवा पूर्वोक्त सामान्य सन्दर्भ दूर अथवा पहिने उल्लेखित व्यक्ति/वस्तुक लेल “ओ/ऊ” प्रकारक रूप भेटैत अछि।

अध्याय ७९ — तिर्यक् रूपक प्रणाली

मूल पाठक अंश — सर्वनाम परसर्ग, कर्म, अनुभवकर्ता अथवा अन्य गैर-कर्ता कार्यमे अबैत काल प्रायः विशेष रूप लैत अछि। एहि रूपकें एहि पोथीमे “तिर्यक् रूप” कहल जा रहल अछि।

अध्याय ८० — सम्बन्धसूचक सर्वनामरूप

मूल पाठक अंश — सम्बन्धरूप ककर वस्तु, व्यक्ति, विचार, नातेदारी, रचना, संस्था वा अन्य सम्बन्ध अछि, से बतबैत अछि। 37.1 “अपन” आ सामान्य सम्बन्धरूपक अन्तर “राम अपन घर गेल”मे “अपन” रामक स्वयं घर बतबैत अछि। “राम ओकर घर गेल”मे घर दोसर व्यक्तिक अछि।

अध्याय ८१ — संकेतवाचक रूप :ई,ओ,एहि,ओहि

मूल पाठक अंश — संज्ञा परसर्गीय अथवा विशेष सम्बन्धमे हो तँ “एहि/ओहि” प्रकारक रूप अत्यन्त सामान्य अछि।

अध्याय ८२ — निजवाचकता : अपन, अपना, स्वयं

मूल पाठक अंश — “अपन” सामान्यतः वाक्यक प्रमुख सहभागी दिस लौटि कऽ “अपन स्वयं”क सम्बन्ध व्यक्त करैत अछि। “अपना” तिर्यक्/स्व-सम्बन्धी रूपमे परसर्गक संग आबि सकैत अछि। मनुष्यकै अपना सँ प्रश्न करबाक चाही।

अध्याय ८३ — प्रश्नवाचक सर्वनाम आ प्रश्न-पद

मूल पाठक अंश — “के” सामान्यतः व्यक्ति पूछैत अछि; “की” वस्तु, विषय, कथ्य अथवा क्रियात्मक सामग्री। “के आयल?” मुदा “की भेल?” “की” खुला प्रश्न अछि: “अहाँ की पढ़ैत छी?” “कोन” विकल्पक समूहमे चयन पूछैत अछि: “अहाँ कोन पोथी पढ़ैत छी?”

अध्याय ८४ — सम्बन्धवाचक आ सहसम्बन्धी रचना

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे सम्बन्धवाचक रचना बहुधा जोड़ामे व्यवस्थित होइत अछि—जे...से, जकर...तकर, जतय...ततय, जखन...तखन आदि। ई प्रणाली अंग्रेजीक who/which/that सँ संरचनात्मक रूपें भिन्न अछि। अंग्रेजीमे “who” आ “which/that”क भेद अछि;

अध्याय ८५ — अनिश्चित सर्वनाम

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी some/any जकाँ मैथिलीमे प्रत्येक प्रसङ्ग लेल दू कठोर अलग सर्वनाम आवश्यक नहि। “केओ”, “किछु”, “कोनो” आदि पदक अर्थ सकारात्मक, प्रश्नवाचक वा नकारात्मक प्रसङ्गसँ बदलि सकैत अछि।

अध्याय ८६ — आदर आ क्रियासामञ्जस्यक प्रवेश

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे सर्वनाम चुननाइ केवल शब्द-चयन नहि; क्रिया-रूप सेहो व्यक्ति आ आदरक संग जुड़ैत अछि। एहि जटिल सामञ्जस्यक पूर्ण विवेचन अगिला इकाईमे होयत।

अध्याय ८७ — सर्वनाम-लोप, पुनरावृत्ति आ सन्दर्भ

मूल पाठक अंश — आज्ञार्थक वाक्यमे श्रोता स्पष्ट रहला पर द्वितीय-पुरुष सर्वनाम प्रायः छोड़ल जा सकैत अछि: “बैसू”, “देखू”, “लिखू”। संवादमे सेहो

प्रसङ्ग स्पष्ट रहला पर कर्ता दोहराएब आवश्यक नहि। 44.2 अस्पष्टता हो तँ सर्वनाम छोड़ नहि

अध्याय ८८ — अंग्रेजी सर्वनामसँ संरचनात्मक तुलना

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी “you” देखिते “अहाँ” लिखि देब अनेक औपचारिक प्रसङ्गमे ठीक हो सकैत अछि, मुदा नाटक, संवाद, बाल-संवाद, घनिष्ठ सम्बन्ध, अपमान, ऐतिहासिक प्रसङ्ग आदि मे सामाजिक सम्बन्ध बुझब आवश्यक अछि।

अध्याय ८९ — सर्वनामक सामान्य अशुद्धि आ सुधार

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय ९० — क्रिया की?

मूल पाठक अंश — जे पद कार्य, अवस्था, घटना, परिवर्तन, अनुभव अथवा अस्तित्व व्यक्त करए, ओकरा क्रिया कहल जाइत अछि। जे क्रिया-रूप व्यक्ति, आदर, काल वा भावक अनुसार वाक्यकेँ पूर्ण करैत अछि, ओकरा शिक्षणक सुविधा लेल सीमित क्रिया कहल जा सकैत अछि।

अध्याय ९१ — धातु, क्रियामूल आ शब्दकोशीय रूप

मूल पाठक अंश — क्रियाक ओ मूल आधार जाहिपर अलग-अलग रूप बनैत अछि, क्रियामूल कहल जा सकैत अछि। विद्यालयी अभ्यासमे शब्दकोशीय -ब रूपसँ मूल चिन्हब सरल अछि। सावधानी: धातु निकालबाक नियमकेँ केवल अक्षर काटबाक यान्त्रिक नियम नहि बुझू।

अध्याय ९२ — सकर्मक, अकर्मक आ क्रियाक अपेक्षा

मूल पाठक अंश — जे क्रिया सामान्यतः प्रत्यक्ष कर्म ग्रहण करए, ओ सकर्मक प्रयोग अछि। जे क्रिया बिना प्रत्यक्ष कर्मक पूर्ण विधान बना सकए, ओ अकर्मक प्रयोग अछि।

अध्याय १३ — क्रिया-समूह आ सहायक क्रिया

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे बहुत रचनामे मुख्य क्रिया अर्थक मूल भाग दैत अछि, आ सहायक क्रिया काल, पक्ष, व्यक्ति वा आदरक व्याकरणिक सूचना वहन करैत अछि। सामान्य पदक्रममे सहायक क्रिया मुख्य क्रियाक बाद अबैत अछि। अंग्रेजी “is reading”मे auxiliary पहिने अछि;

अध्याय १४ — काल, पक्ष आ भाव:तीनटा अलग प्रश्न

मूल पाठक अंश — क्रिया बुझबाक लेल तीनटा प्रश्न अलग राखू: अंग्रेजी विद्यालयी व्याकरणमे “tense” नामक अन्तर्गत जे अनेक रूप पढाओल जाइत अछि, मैथिलीमे ओकरा काल + पक्ष + सहायक + सामञ्जस्यक संयुक्त संरचनाक रूपमे बुझब अधिक उपयोगी अछि।

अध्याय १५ — अपूर्ण/अभ्यस्त पक्ष: “-इत/करैत” प्रकार

मूल पाठक अंश — एहि प्रकारक रूप आदत, सामान्य सत्य, नियमित क्रिया अथवा प्रसङ्गानुसार वर्तमान चलित अर्थ व्यक्त कऽ सकैत अछि। अर्थ केवल प्रत्ययसँ नहि, समय-सूचक पद आ सन्दर्भसँ स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय १६ — प्रगतिशील पक्ष: “रहल” संरचना

मूल पाठक अंश — एखन चलि रहल क्रिया विशेष रूपेँ स्पष्ट करबाक लेल मुख्य क्रियाक संग “रहल” आधारित संरचना बहुत उपयोगी अछि। “हम पढैत छी” आदत/सामान्य वर्तमान सेहो बुझा सकैत अछि; “हम पढ़ि रहल छी” वर्तमान क्षणक चालू क्रिया अधिक स्पष्ट करैत अछि।

अध्याय १७ — पूर्णता आ पूर्ण पक्ष

मूल पाठक अंश — क्रिया पूर्ण भऽ चुकल, परिणाम उपस्थित अछि, अथवा घटना पूर्वकालमे समाप्त भेल—ई सब अर्थ अलग-अलग साधनसँ व्यक्त भऽ सकैत अछि। मैथिलीमे केवल अंग्रेजी “have + past participle”क एकटा यान्त्रिक समकक्ष नहि खोजू।

अध्याय १८ — भूतकालक व्यावहारिक प्रयोग

मूल पाठक अंश — प्राध्यापक जखन पहुँचलाह, विद्यार्थी सभ लिखि रहल छल। भूतकालक अर्थ समय-सूचक पद (“काल्हि”, “ओहि समय”, “पहिने”) आ सहायक/मुख्य क्रिया दुनू मिलि स्पष्ट करैत अछि। व्यक्ति आ आदरक अनुसार भूत रूप बदलि सकैत अछि;

भाषाक वास्तविक प्रयोग नियमक अपवाद नहि, कतेको बेर नियमक सीमा स्पष्ट करैत अछि। उद्धरण, संवाद, शिक्षण आ शोधमे एकहि रूपक भिन्न स्वीकृति-स्थिति सुस्पष्ट राखू।

अध्याय १९ — भविष्य

मूल पाठक अंश — भविष्य क्रियामे आगाँ होयवला घटना, अनुमान, योजना वा वचन व्यक्त भऽ सकैत अछि। “हम जाएब” सामान्य भविष्य/निश्चय व्यक्त कऽ सकैत अछि। “हम जायब चाहैत छी” इच्छा अछि। दुनूकें एक नहि मानू। भविष्य केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय १०० — व्यक्ति, आदर आ क्रियासामञ्जस्य

मूल पाठक अंश — मैथिली क्रिया-व्यवस्थाक एकटा विशेष लक्षण व्यक्ति आ आदर-सूचकताक सामञ्जस्य अछि। आधुनिक क्रियामे वचनक भेद प्रायः स्वतंत्र क्रिया-अन्त्यसँ नहि देखाओल जाइत; “हम” आ “हम सभ” जकाँ कर्ता-रूप बदललासँ संख्या स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय १०१ — नकार

मूल पाठक अंश — मानक लिखित मैथिलीमे नकारक सामान्य रूप “नहि” अछि। ई प्रायः क्रिया वा क्रिया-समूहक ठीक पहिने अबैत अछि। सामान्यतः “नहि” पूरा विधेयकेँ नकारैत अछि; मुदा जोर बदललासँ विशेष पदक विरोध सेहो व्यक्त भऽ सकैत अछि।

अध्याय १०२ — आज्ञा, अनुरोध, सलाह आ निषेध

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे आज्ञार्थक रूप तत्काल काज आ बादमे करबाक निर्देशक बीच सूक्ष्म रूपभेद देखा सकैत अछि। व्यावहारिक गद्यमे समय-पद

जोड़ि अर्थ स्पष्ट करब सुरक्षित अछि—“एखन जाउ”, “काल्हि अवश्य आउ”, “काज पूरा कऽ पठाउ” ।

अध्याय १०३ — सम्भावना, क्षमता, इच्छा आ बाध्यता

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि ।

अध्याय १०४ — संयुक्त क्रिया

मूल पाठक अंश — दू क्रियामूल मिलि एकटा संयुक्त अर्थ बनबैत अछि तँ पहिल क्रिया मुख्य घटना दैत अछि आ दोसर क्रिया पूर्णता, दिशा, लाभ, आकस्मिकता, निरन्तरता आदि अर्थक छाया जोड़ि सकैत अछि ।

अध्याय १०५ — असीमित क्रिया-रूप आ वाक्य-जोड़

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि ।

अध्याय १०६ — क्रियाक सामान्य अशुद्धि आ सुधार

मूल पाठक अंश — अस्वाभाविकः प्राध्यापक बोलि रहल अछि । जँ भविष्य योजना अभिप्रेत अछिः हम काल्हि जाएब / हम काल्हि जाएबाक योजना बना रहल छी । दुर्बलः हम पुस्तकालय पढ़ब लेल गेलहुँ । सुधारः हम पढ़बाक लेल पुस्तकालय गेलहुँ ।

अध्याय १०७ — प्रयोगमूलक काल-पक्ष सारणी

मूल पाठक अंश — नीचाँ “पढ़ब” क्रियाक सहायतासँ एकटा शिक्षण-सारणी देल जा रहल अछि । ई सम्पूर्ण रूपावली नहि, प्रयोगक मानचित्र अछि । प्रयोगमूलक काल-पक्ष सारणी केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि ।

अध्याय १०८ — क्रिया-समूहक विश्लेषण

मूल पाठक अंश — “प्राध्यापक काल्हि व्याख्यान देताह ।” प्राध्यापक — आदरसूचक तृतीय पुरुष कर्ता ।

अध्याय १०९ — विशेषणः परिचय

मूल पाठक अंश — जे पद संज्ञा वा सर्वनामक गुण, अवस्था, आकार, रंग, प्रकार, मूल्य, आयु, संख्या अथवा परिमाण स्पष्ट करए, ओकरा विशेषण कहल जाइत अछि। संज्ञासँ पहिने: “नीक पोथी”, “पैघ घर”, “लाल फूल”। विधेयमे: “ई पोथी नीक अछि।” “घर पैघ अछि।” “फूल लाल अछि।”

अध्याय ११० — विशेषणक रूप आ सामञ्जस्य

मूल पाठक अंश — अर्थात् अंग्रेजी big house / big houses जकाँ adjective स्वयं संख्या नहि चिह्नित करैत; संख्या संज्ञा, संख्या-पद, “सभ” अथवा प्रसङ्गसँ स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय १११ — विशेषणक अर्थानुसार प्रकार

मूल पाठक अंश — एक संज्ञा एकसँ अधिक विशेषण ग्रहण कऽ सकैत अछि: “ओ पुरान पैघ लाल घर”, “ई तीनटा उपयोगी मैथिली पोथी”। पदक्रम अर्थ, जोर आ शैलीक अनुसार बदलि सकैत अछि; अतः अंग्रेजी adjective-orderक कठोर सूची मैथिलीपर नहि थोपू।

अध्याय ११२ — निर्धारक: संज्ञाकेँ चिन्हबयवला पद

मूल पाठक अंश — निर्धारक ओ पद अछि जे संज्ञाक सन्दर्भ सीमित वा निश्चित करैत अछि—कौन वस्तु, ककर वस्तु, कतेक वस्तु, कोन चयन आदि। अंग्रेजीक the, this, my, some, every आदि संग तुलना उपयोगी अछि, मुदा मैथिलीमे “the”क स्वतंत्र अनिवार्य समकक्ष नहि अछि।

अध्याय ११३ — संकेतवाचक निर्धारक

मूल पाठक अंश — “ई” आ “ओ” सर्वनाम सेहो भऽ सकैत अछि—“ई नीक अछि”, “ओ आयल”—आ संज्ञाक आगाँ निर्धारक/विशेषण जकाँ सेहो—“ई पोथी”, “ओ विद्यार्थी”। कार्य वाक्यगत स्थानसँ चिन्हू। 70.2 संकेत + संख्या + विशेषण + संज्ञा ई पदक्रम शिक्षणक सुरक्षित सामान्य ढाँचा अछि;

अध्याय ११४ — सम्बन्धवाचक/स्वामित्वसूचक निर्धारक

मूल पाठक अंश — सम्बन्धसूचक रूप संज्ञाकैँ ककर, कोन संस्था/स्थानक, अथवा कोन वस्तुसँ सम्बन्धित अछि से बतबैत अछि। “रामक पुरान घर”मे “रामक” घरक सम्बन्ध बतबैत अछि आ “पुरान” ओकर गुण। दुनू मिलि “घर”कैँ सीमित करैत अछि।

अध्याय ११५ — संख्या आ गणनासूचक रूप

मूल पाठक अंश — आधुनिक लेखनमे क्षेत्रीय उच्चारणक अनुसार किछु संख्या-रूपमे रूपान्तर भेटि सकैत अछि। औपचारिक गद्यमें एकरूपता राखू। गणनायोग्य संज्ञाक संग “टा” आ “गोटा/गोट” प्रकारक गणनासूचक रूप बहुत सामान्य अछि। संख्या + गणनासूचक + संज्ञा सामान्य क्रम अछि।

अध्याय ११६ — क्रमवाचक संख्या

मूल पाठक अंश — क्रमवाचक संख्या वस्तु वा व्यक्तिक क्रम बतबैत अछि— पहिल, दोसर, तेसर आदि। पहिल किछु क्रमवाचक रूप अनियमित अछि; पाँचसँ आगाँ “म” आधारित रूप व्यापक अछि।

अध्याय ११७ — परिमाणबोधक पद

मूल पाठक अंश — जे पद गणना नहि बल्कि मात्रा, विस्तार वा समग्रता बतबैत अछि, ओकरा परिमाणबोधक/मात्रासूचक कहल जा सकैत अछि। गणनीय: बहुत विद्यार्थी, किछु पोथी, अनेक प्रश्न। अगणनीय/मात्रात्मक: बहुत पानि, कम समय, किछु दूध।

अध्याय ११८ — तुलना: अधिक, कम आ समानता

मूल पाठक अंश — मैथिली हमरा हिन्दी सँ बेसी सहज लगैत अछि। तुलनाक मानक/आधार “सँ” द्वारा व्यक्त होइत अछि। “राम मोहनसँ पैघ अछि”क अर्थ —रामक पैघाई मोहनक अपेक्षा अधिक अछि।

अध्याय ११९ — उत्कृष्टता/सर्वोच्च तुलना

मूल पाठक अंश — किसी समूहमे सर्वोच्च गुण व्यक्त करबाक लेल “सभसँ” अत्यन्त उपयोगी अछि। सीता कक्षामे सभसँ तेज विद्यार्थी छथि। शुद्ध मैथिली

गद्यमें हिन्दी “सबसे”क बदला “सभसँ” स्वाभाविक मैथिली रूप अछि। “बहुत नीक” = अत्यन्त/बेसी नीक;

अध्याय १२० — विशेषणक तीव्रता आ गुणक स्तर

मूल पाठक अंश — विशेषणक गुण कम-बेसी देखाबय लेल तीव्रतासूचक क्रियाविशेषण प्रयोग होइत अछि। “बहु”, “बहुत”, “अत्यन्त” समान प्रसङ्गमे पूर्णतः पर्याय नहि; बोलचाल, औपचारिकता आ जोरक स्तरक अनुसार चयन करू।

अध्याय १२१ — विशेषण बनाम क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी quick/quickly जकाँ प्रत्येक विशेषणक स्वतंत्र “-ly” रूप मैथिलीमे नहि; “सँ”, “जकाँ”, संज्ञात्मक रूप अथवा प्रसङ्गानुसार मूल पदसँ क्रियाविशेषणीय अर्थ बनि सकैत अछि।

अध्याय १२२ — संज्ञा-पदसमूहक व्यावहारिक पदक्रम

मूल पाठक अंश — बहु-विशेषक संज्ञा-पदसमूह लिखैत समय निम्न क्रम एकटा सुरक्षित शिक्षण-ढाँचा अछि; ई कठोर सार्वभौम नियम नहि। जँ एक्के संज्ञाक आगाँ बहुत विशेषक जमा भऽ जाए, वाक्य भारी भऽ सकैत अछि। ओहि दशामे सम्बन्धवाचक उपवाक्य अथवा अलग वाक्य उपयोग करू।

अध्याय १२३ — सामान्य अशुद्धि आ सुधार

मूल पाठक अंश — स्वाभाविक मैथिली: नीक बालिका / नीक लड़की। केवल संख्या अभिप्रेत हो तँ: तीनटा विद्यार्थी आयल।

अध्याय १२४ — अंग्रेजी adjective/determiner प्रणालीसँ तुलना

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय १२५ — क्रियाविशेषण की?

मूल पाठक अंश — जे अविकारी पद मुख्यतः क्रिया, विशेषण, दोसर क्रियाविशेषण अथवा पूरा वाक्यक अर्थकें समय, स्थान, रीति, मात्रा, आवृत्ति

आदि दृष्टिसँ सीमित अथवा स्पष्ट करए, ओकरा क्रियाविशेषण कहल जाइत अछि। 82.2 क्रियाविशेषण केवल क्रियाकें नहि बदलैत अछि

अध्याय १२६ — मूल आ व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — किछु पद अपने मूल रूपें समय, स्थान वा रीति बतबैत अछि—एखन, आइ, काल्हि, एतय, ओतय, फेर, धीरे आदि। 83.2 दोसर पदसँ बनल क्रियाविशेषणीय रचना मैथिलीमे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण वा पदसमूह परसर्ग अथवा अन्य रचनाक सहायतासँ क्रियाविशेषणीय काज करि...

अध्याय १२७ — समयवाचक क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — काल्हि — प्रसङ्गानुसार बीतल अथवा अगिला दिन; क्रिया-रूप अर्थ स्पष्ट करैत अछि। सबेरे, दुपहर, साँझमे, रातिमे — दिनक भाग। जहिया अहाँ आबि जाएब, तहिया बैठक करब।

अध्याय १२८ — स्थानवाचक क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — आगाँ, पाछाँ, ऊपर, नीचाँ, भीतर, बाहर, लग, दूर। “एतय/ओतय” अपने क्रियाविशेषण अछि; “घरमे”, “मेजपर”, “गामसँ”, “विद्यालय धरि” परसर्गीय पदसमूह अछि, मुदा वाक्यमे ई सभ स्थान अथवा दिशाक क्रियाविशेषणीय कार्य करि सकैत अछि।

अध्याय १२९ — रीतिवाचक क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — रीति अथवा वितरण स्पष्ट करबाक लेल पुनरुक्ति उपयोगी अछि: “धीरे-धीरे”, “साफ-साफ”, “अलग-अलग”, “एक-एक कऽ”। मुदा औपचारिक गद्यमें अनावश्यक पुनरुक्ति नहि करू। एक्के रूप अलग वाक्यगत कार्य करि सकैत अछि; वर्गीकरण अर्थ आ कार्य देखिकऽ करू।

अध्याय १३० — आवृत्तिवाचक क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — कहियो — कोनो समय; नकारसँ “कहियो नहि” = एक बेरो नहि। प्रतिदिन / प्रत्येक सप्ताह / मासमे दू बेर — निश्चित आवृत्ति।

अध्याय १३१ — मात्रा आ स्तरवाचक क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — बहुत लोक आयल। — परिमाणबोधक निर्धारक। ओ बहुत धीरे बोलैत अछि। — क्रियाविशेषणक स्तर।

अध्याय १३२ — वाक्यगत क्रियाविशेषण

मूल पाठक अंश — किछु पद एकटा क्रियाकेँ नहि, पूरा कथनक प्रति वक्ताक दृष्टिकोण व्यक्त करैत अछि। रचनामे एहन पद उपयोगी अछि, मुदा प्रत्येक वाक्य “वास्तवमे”, “निश्चय”, “स्पष्ट रूपेँ” आदि सँ भरि देब गद्यकेँ बोझिल बनबैत अछि।

अध्याय १३३ — क्रियाविशेषणक पदक्रम

मूल पाठक अंश — बहु-पद वाक्यमे कठोर सूत्र नहि, मुदा आरम्भिक अभ्यास लेल ई क्रम उपयोगी अछि: कर्ता + समय + स्थान + रीति + कर्म/पूरक + क्रिया। हम आइ पुस्तकालयमे ध्यानसँ ई अध्याय पढ़ब। विद्यार्थी सभ काल्हि सभागारमे शान्तिपूर्वक परीक्षा देताह।

अध्याय १३४ — निपात आ बलसूचक पद

मूल पाठक अंश — निपात एहन छोट अविकारी पद अछि जे कथनमे जोर, विरोध, सीमा, समावेश, अपेक्षा अथवा भावक सूक्ष्म अर्थ जोड़ैत अछि। ओकर अर्थ शब्दकोशीय अर्थसँ बेसी प्रसङ्गपर निर्भर रहि सकैत अछि। हम तऽ काल्हि जाएब। — “हम” वा अपन निर्णय पर विरोध/जोर।

अध्याय १३५ — फोकस: वाक्यमे मुख्य जोर कतय?

मूल पाठक अंश — वाक्यमे जे सूचना वक्ता विशेष रूपेँ नवी, विरोधी, सुधारात्मक अथवा महत्त्वपूर्ण रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, ओ फोकस होइत अछि। फोकस केवल निपातसँ नहि; पदक्रम, उच्चारण-जोर, पुनरावृत्ति आ प्रसङ्गसँ सेहो व्यक्त होइत अछि।

अध्याय १३६ — निषेध: “नहि”क स्थान आ व्याप्ति

मूल पाठक अंश — लिखित मानक मैथिलीमे “नहि” सामान्य नकारक पद अछि; बोलचालमे “नै” रूप व्यापक भेटि सकैत अछि। औपचारिक गद्यमें एहि ग्रन्थमे “नहि”कें प्रधानता देल गेल अछि।

अध्याय १३७ — निपातक व्याप्ति आ अर्थभेद

मूल पाठक अंश — एक्के निपात अलग पदक बाद राखला पर फोकस बदलि सकैत अछि। एहि कारण निपातकें “कहाँ लगाओल गेल” ई अर्थक मुख्य हिस्सा अछि। राम तऽ आएत। — रामक विषयमे जोर/विरोध। काल्हि तऽ बैठक होयत। — काल्हिक समयपर जोर। ई बात सेहो लिखू।

अध्याय १३८ — अंग्रेजी adverb/particle आ मैथिली: व्यावहारिक तुलना

मूल पाठक अंश — अनुवादक मुख्य नियम: अंग्रेजी adverb वा particle देखिते ओकर एकटा स्थायी मैथिली “समकक्ष” नहि चुनू; पहिने ओकर वाक्यगत कार्य, व्याप्ति आ अर्थ निर्धारित करू। एहि अध्यायक केन्द्र “अंग्रेजी adverb/particle आ मैथिली: व्यावहारिक तुलना” अछि।

अध्याय १३९ — सामान्य अशुद्धि आ सुधार

मूल पाठक अंश — सुधार: ओ प्राय: नहि अबैत अछि / ओ प्राय: अबैत नहि अछि—अर्थ-जोर अनुसार; सामान्यत: सरल वाक्य चुनू। सुधार: हम मात्र/केवल दूटा प्रश्न पूछब। जँ संख्या सीमित अछि: हम मात्र दूटा प्रश्न पूछब। जँ वक्ता सीमित अछि: मात्र हम दूटा प्रश्न पूछब।

अध्याय १४० — परसर्गक उन्नत परिचय

मूल पाठक अंश — परसर्ग संज्ञा, सर्वनाम अथवा संज्ञा-पदसमूहक सम्बन्ध दोसर पद वा क्रियासँ स्पष्ट करैत अछि। स्थान, दिशा, स्रोत, संगति, साधन, प्रयोजन, सीमा, अभाव आदि अनेक अर्थ परसर्गीय रचनासँ व्यक्त होइत अछि।

अध्याय १४१ — सरल आ संयुक्त परसर्ग

मूल पाठक अंश — कतेको सम्बन्ध एक शब्दक बदला संज्ञा + सम्बन्धचिह्न + स्थान/सम्बन्धसूचक पदसँ व्यक्त होइत अछि।

अध्याय १४२ — स्थान, दिशा आ सीमा

मूल पाठक अंश — “घरमे” स्थिर स्थान बुझा सकैत अछि; “घर दिस” दिशा बुझवैत अछि। “पटना धरि” लक्ष्य-सीमा स्पष्ट करैत अछि। एहि अर्थसभकें एक्के “to/in/at”क नकलसँ नहि लिखू। एहि अध्यायक केन्द्र “स्थान, दिशा आ सीमा” अछि।

अध्याय १४३ — “सँ”क बहुअर्थी प्रयोग

मूल पाठक अंश — एक्के “सँ”क अंग्रेजी अनुवाद प्रसङ्गानुसार from, with, by, than आदि भऽ सकैत अछि। एहि कारण अनुवादमे अंग्रेजी शब्द नहि, सम्बन्धक अर्थ पहिने चिन्हू। “सँ”क बहुअर्थी प्रयोग कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय १४४ — परसर्ग आ सर्वनामक रूप

मूल पाठक अंश — सर्वनाम परसर्गक संग आवि कतेको बेर तिर्यक् वा सम्बन्धरूप ग्रहण करैत अछि। इकाई ३ मे एकर मूल रूप पढ़ल गेल अछि; एतय ओकर वाक्यगत प्रयोग देखू। सावधानी: सर्वनामक रूप क्षेत्र आ आदर-स्तर अनुसार बदलि सकैत अछि।

अध्याय १४५ — समुच्चयबोधक: समान स्तरक इकाई जोड़ब

मूल पाठक अंश — जे पद समान व्याकरणिक स्तरक शब्द, पदसमूह वा वाक्यकें जोड़ए, ओ समुच्चयबोधक कहल जाइत अछि। मुख्य अर्थगत प्रकार—जोड़, विरोध, विकल्प आ नकारात्मक विकल्प। औपचारिक गद्यमें “तथा”, “अथवा” आदि रूप सेहो भेटैत अछि;

अध्याय १४६ — “आ” सँ जोड़

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय १४७ — विरोध: “मुदा” आ विरोधी संरचना

मूल पाठक अंश — दू कथनक अपेक्षा, परिणाम वा गुणमे विरोध हो तँ “मुदा” उपयोगी अछि। “मुदा”क काज विरोध देखायब अछि; कारण बतावय लेल कारणसूचक रचना चाही। “वर्षा भेल, मुदा सड़क भीजल” तर्कतः सामान्य कारण-परिणाम अछि; बेहतर—“वर्षा भेल, एहि कारण सड़क भीजि गेल।”

अध्याय १४८ — विकल्प: “वा”, “अथवा”, “कि”

मूल पाठक अंश — विकल्प देवाक लेल “वा/अथवा” उपयोगी अछि। प्रश्नमे “कि” दू विकल्पक बीच स्वाभाविक रूपेँ आवि सकैत अछि। “कि” विकल्पसूचक हो सकैत अछि, मुदा कतहु पूरक/उद्धरण-जकाँ रचनामे सेहो भेटि सकैत अछि। प्रसङ्ग बिना एकरा केवल “or” नहि मानू।

अध्याय १४९ — नकारात्मक समन्वय

मूल पाठक अंश — दू विकल्पक दुनू भाग नकारवाक लेल “न...न” संरचना उपयोगी अछि। औपचारिक गद्यमें अस्पष्टता हो तँ अलग-अलग पूर्ण नकारात्मक वाक्य लिखब सेहो उचित अछि: “राम नहि आयल। श्याम सेहो नहि आयल।

अध्याय १५० — समन्वयमे समानता आ समान्तरता

मूल पाठक अंश — जुड़ल इकाई सभ व्याकरणिक रूपेँ समान स्तरक हो तँ वाक्य अधिक स्पष्ट होइत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “समन्वयमे समानता आ समान्तरता” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय १५१ — कारण आ परिणाम

मूल पाठक अंश — हम घरमे रहलहुँ, कारण जे बाहर तेज वर्षा छल। किएक तँ वर्षा छल, हम यात्रा स्थगित कएलहुँ। तेज वर्षा भेल; एहि कारण सड़कपर पानि जमि गेल। ओ नियमित अभ्यास कएलक; परिणामस्वरूप ओकर लेखन सुधरल। कारण पहिने अथवा बादमे आवि सकैत अछि।

अध्याय १५२ — शर्त: “जँ...तँ”

मूल पाठक अंश — शर्त आ परिणामक सम्बन्ध मैथिलीमे “जँ...तँ” युग्मसँ बहुत स्पष्ट रूपेँ व्यक्त होइत अछि। प्रसङ्ग स्पष्ट रहला पर परिणाम-वाक्यमे “तँ” छूटि सकैत अछि, मुदा शिक्षण आ औपचारिक गद्यमें जटिल शर्तक ठाम “जँ...तँ” दुनू राखलासँ सम्बन्ध अधिक स्पष्ट...

अध्याय १५३ — सम्बन्धवाचक-सहसम्बन्धवाचक “जे...से”

मूल पाठक अंश — मैथिली जटिल वाक्यक एक केन्द्रीय पद्धति सम्बन्धवाचक पद आ ओकर सहसम्बन्धवाचक उत्तर-पदक युग्म अछि। जे पोथी अहाँ देलहुँ, से हम पढ़ि लेलहुँ। जकर परिश्रम बेसी, तकर परिणाम प्रायः नीक होइत अछि।

अध्याय १५४ — समय, स्थान, रीति आ मात्रा: युग्म-रचना

मूल पाठक अंश — ई युग्म अंग्रेजी when...then, where...there, as...so, as much...that much जकाँ कार्य करैत अछि, मुदा शब्दक्रम आ रूप मैथिलीक अपन अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “समय, स्थान, रीति आ मात्रा: युग्म-रचना” अछि।

अध्याय १५५ — समयसूचक अधीनस्थ वाक्य

मूल पाठक अंश — जखन हम पहुँचलहुँ, बैठक शुरू भऽ चुकल छल। भोर होएबासँ पहिने यात्री सभ निकलि गेल। समयसूचक उपवाक्य मुख्य वाक्यसँ पहिने वा बादमे आबि सकैत अछि। पहिने रखला पर सामान्यतः अल्पविरामसँ सीमा स्पष्ट करब उपयोगी अछि।

अध्याय १५६ — प्रयोजन, शर्त, कारण आ विरोधक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — “यद्यपि...तथापि” औपचारिक लिखित शैलीक रूप अछि। सामान्य गद्यमें दू कथनक विरोध “मुदा” सँ सरलतापूर्वक व्यक्त कएल जा सकैत अछि। “प्रयोजन, शर्त, कारण आ विरोधक उपवाक्य” विषयक नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए।

अध्याय १५७ — अधीनता आ वाक्यक्रम

मूल पाठक अंश — अधीनस्थ उपवाक्य मुख्य वाक्यक संज्ञा, विशेषण वा क्रियाविशेषण-जकाँ काज कऽ सकैत अछि। एहि इकाईमे मुख्यतः सम्बन्धसूचक आ क्रियाविशेषणीय उपवाक्यक व्यवहार देखाओल गेल अछि। जे ओ आएत, ई बात हम जनैत छी। — कथ्य/विषयक संरचना।

अध्याय १५८ — विरामचिह्न आ वाक्य-जोड़

मूल पाठक अंश — दू निकट सम्बन्धित स्वतंत्र वाक्य बहुत लम्बा हो तँ अर्धविराम उपयोगी भऽ सकैत अछि: “प्रथम दल समयपर पहुँचल; दोसर दल मार्गमे अटकल रहल।” सामान्य छोट वाक्यमे पूर्णविराम अधिक सरल अछि। विरामचिह्न अर्थ-संरचनाक सहायक अछि।

अध्याय १५९ — अंग्रेजी preposition/conjunction सँ तुलना

मूल पाठक अंश — अनुवादक नियम: पहिने सम्बन्ध चिन्हू, तकर बाद मैथिली रचना चुनू। अंग्रेजी शब्दक क्रम नकल करब प्रायः अस्वाभाविक परिणाम दैत अछि। अंग्रेजी preposition/conjunction सँ तुलना केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय १६० — सामान्य अशुद्धि आ सुधार

मूल पाठक अंश — सुधार: हम नहि गेलहुँ, कारण जे वर्षा छल। / वर्षाक कारण हम नहि गेलहुँ। अधिक स्पष्ट: जँ वर्षा होयत तँ हम घरमे रहब। दुर्बल: जे मेहनत करैत अछि, ओ सफल होइत अछि। शिक्षणार्थ सहसम्बन्ध स्पष्ट: जे मेहनत करैत अछि, से सफल होइत अछि।

अध्याय १६१ — वाक्य-प्रकारक आधुनिक दृष्टि

मूल पाठक अंश — वाक्यक “रूप” आ “कार्य” एक्के बात नहि। विधानात्मक रूप प्रायः सूचना दैत अछि, प्रश्नात्मक रूप प्रश्न करैत अछि, आज्ञार्थक रूप आदेश वा अनुरोध करैत अछि; मुदा प्रसङ्गमे एक रूप दोसर कार्य सेहो कऽ सकैत अछि।

अध्याय १६२ — विधानवाचक वाक्य

मूल पाठक अंश — “आइ वर्षा होयत” भविष्यवाणी/विश्वास हो सकैत अछि; “आइ वर्षा भऽ सकैत अछि” सम्भावना अछि। दुनू विधानात्मक रूप अछि, मुदा वक्ताक निश्चयक स्तर अलग अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “विधानवाचक वाक्य” अछि।

अध्याय १६३ — प्रश्नवाचक वाक्य: चारि व्यावहारिक प्रकार

मूल पाठक अंश — व्याकरणिक विश्लेषणमे रूप, वाक्यगत कार्य आ अर्थ तीनूकें अलग चिन्हब उपयोगी अछि। एक पदक रूप देखिकऽ ओकर काज तुरन्त तय नहि कएल जाए; ओकर स्थान, संग लगल परसर्ग/सहायक क्रिया, सामञ्जस्य आ पूरा वाक्यक अर्थ देखल जाए।

अध्याय १६४ — हाँ/नहि प्रश्न

मूल पाठक अंश — एहि रूपमे विधानात्मक शब्दक्रम प्रायः बनल रहैत अछि; बोलचालमे अन्तिम स्वराघात प्रश्नक संकेत दैत अछि। लिखित रूपमे प्रश्नचिह्न पर्याप्त सहायक संकेत अछि। एतय “कि” प्रश्नसूचक पदक काज करैत अछि।

अध्याय १६५ — सूचना-प्रश्न

मूल पाठक अंश — 122.1 प्रश्नपद सामान्यतः अपन व्याकरणिक स्थानक निकट मैथिलीमे प्रश्नपदकें अंग्रेजी जकाँ अनिवार्य रूपेँ वाक्यक आरम्भमे आनब आवश्यक नहि। “अहाँ कतय जाइत छी?” प्राकृतिक अछि।

अध्याय १६६ — विकल्प-प्रश्न आ पुष्टि-प्रश्न

मूल पाठक अंश — विकल्प स्पष्ट हो तँ “कि/वा/अथवा” प्रयोग कएल जा सकैत अछि। “कि” प्रश्नसूचक आ विकल्पसूचक दुनू काज करैत अछि; स्थानसँ अर्थ स्पष्ट होइत अछि। पुष्टि माँगब लेल मैथिलीमे अनेक बोलचाली/क्षेत्रीय पद्धति अछि।

अध्याय १६७ — नकारात्मक आ आलंकारिक प्रश्न

मूल पाठक अंश — नकारात्मक प्रश्न केवल सूचना नहि, आश्चर्य, अपेक्षा वा पुष्टि सेहो व्यक्त कऽ सकैत अछि। प्रसङ्ग अर्थ निर्धारित करैत अछि।

आलंकारिक प्रश्नक उद्देश्य उत्तर माँगब नहि, बल्कि कथनकें बल देब होइत अछि।

अध्याय १६८ — आज्ञा, अनुरोध, सलाह आ चेतावनी

मूल पाठक अंश — आज्ञार्थक वाक्यमे द्वितीय पुरुष कर्ता प्रायः व्यक्त नहि होइत अछि; क्रिया-रूपसँ सम्बोधनक आदर-स्तर बुझाईत अछि। सामान्य आज्ञामे कर्ता छोड़ल जाइत अछि। विरोध वा विशेष जोर हो तँ कर्ता लिखल जा सकैत अछि: “अहाँ एतय बैसू; हम ओतय बैसैत छी।”

अध्याय १६९ — सहभागी आग्रह, इच्छा आ कामना

मूल पाठक अंश — एहन रचना वक्ता आ श्रोता दुनूकें प्रस्तावित काजमे सम्मिलित करैत अछि; ई साधारण द्वितीय-पुरुष आज्ञासँ अलग अछि। कामनात्मक वाक्य तथ्यक दावा नहि, इच्छित स्थिति व्यक्त करैत अछि। साहित्यिक आ औपचारिक शैलीमे एकर क्रिया-रूप विविध भेटि सकैत अछि;

अध्याय १७० — विस्मयवाचक वाक्य

मूल पाठक अंश — विस्मयवाचक वाक्य सूचना मात्र नहि, वक्ताक तीव्र प्रतिक्रिया—आश्चर्य, आनन्द, दुःख, प्रशंसा, भय आदि—व्यक्त करैत अछि। 127.1 अपूर्ण वाक्य सेहो पूर्ण प्रतिक्रिया प्रसङ्ग स्पष्ट हो तँ पूर्ण कर्ता-क्रिया संरचना बिना सेहो विस्मयात्मक कथन...

अध्याय १७१ — मैथिलीक निष्पक्ष शब्दक्रम

मूल पाठक अंश — मुख्य वाक्यांशक निष्पक्ष क्रम सामान्यतः कर्ता + कर्म/पूरक + क्रिया अछि। विद्यार्थी सभ आइ विद्यालयमे परीक्षा देत। समय, स्थान, कर्म, रीति आदि घटकक क्रम प्रसङ्गानुसार बदलि सकैत अछि, मुदा मुख्य क्रिया प्रायः अन्त दिस रहैत अछि।

अध्याय १७२ — चिह्नित शब्दक्रम: विषय आ जोर

मूल पाठक अंश — निष्पक्ष SOV क्रम बदललासँ केवल “शैली” नहि, सूचना-संरचना सेहो बदलि सकैत अछि। एहि कारण बिना प्रसङ्गक असामान्य क्रमकें “शुद्ध” मानि अनावश्यक रूपेँ प्रयोग नहि करू।

अध्याय १७३ — विषय, टिप्पणी आ सूचना-केंद्र

मूल पाठक अंश — विषय ओ तत्व अछि जकर विषयमे वाक्य आगे किछु कहैत अछि। विषय सदिसन व्याकरणिक कर्ता नहि होइत अछि। एहि पोथीक विषयमे हम काल्हि चर्चा करब। मिथिलाक इतिहास—एहि विषयपर बहुत सामग्री उपलब्ध अछि।

अध्याय १७४ — बलसूचक निपात आ सूचना-केंद्र

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे तऽ, सेहो, मात्र/केवल, विशेष बलसूचक रूप आदि सूचना-केंद्र बदलि सकैत अछि। केवल राम आयल। — रामक अतिरिक्त केओ नहि। राम केवल आयल। — सन्दर्भानुसार “आयल मात्र”, दोसर काज नहि कएलक।

अध्याय १७५ — विधानसँ प्रश्न बनायब

मूल पाठक अंश — मुख्य नियम: अंग्रेजी जकाँ सहायक-कर्ता उलटाव नहि; जाहि जानकारीक उत्तर चाही, ओहि पदकेँ उपयुक्त प्रश्नपदसँ बदलू। विधानसँ प्रश्न बनायब केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय १७६ — सकारात्मक-नकारात्मक रूपान्तरण

मूल पाठक अंश — सकारात्मक वाक्यकेँ नकारात्मक बनबैत समय केवल “नहि” जोड़ब पर्याप्त नहि हो सकैत अछि। “सभ आयल”क नकार “सभ नहि आयल” दू अर्थ दे सकैत अछि—एक्को नहि आयल, वा सभ नहि आयल (किछु आयल)। स्पष्टता लेल लिखू: “केओ नहि आयल” अथवा “सभ लोक नहि आयल”;

अध्याय १७७ — सरल, संयुक्त आ मिश्र वाक्यक रूपान्तरण

मूल पाठक अंश — मिश्र: कारण जे वर्षा भऽ रहल छल, हम नहि गेलहुँ। संयुक्त: वर्षा भऽ रहल छल, तँ हम नहि गेलहुँ। मिश्र: जँ अहाँ मेहनत करब तँ सफल होयब। दू स्वतंत्र वाक्य: मेहनत करू; सफलताक सम्भावना बढ़त। रूपान्तरणक उद्देश्य केवल परीक्षा-अभ्यास नहि;

अध्याय १७८ — वाक्य-विस्तार, संक्षेपण आ समान्तरता

मूल पाठक अंश — मूल: “बालक दौड़ल।” विस्तार: “गामक छोट बालक आइ सबेरे विद्यालय पहुँचबाक लेल तेजी सँ सड़कपर दौड़ल।” विस्तार अर्थ जोड़ए, अनावश्यक शब्द नहि। दीर्घ: “वर्तमान समयमे आइक दिनमे लोक सभ मोबाइल फोनक बहुत बेसी प्रयोग करैत अछि।

अध्याय १७९ — विरामचिह्नक विस्तृत व्यावहारिक प्रयोग

मूल पाठक अंश — मैथिली देवनागरी गद्यमें “।” परम्परागत पूर्णविराम अछि; आधुनिक डिजिटल/वैज्ञानिक प्रकाशनमे “.” सेहो भेटैत अछि। एकहि ग्रन्थमे एकटा शैली चुनि निरन्तरता राखू। कर्ता आ क्रियाक बीच केवल साँस लेबाक आधारपर अल्पविराम नहि दिअ।

अध्याय १८० — अनुच्छेदमे वाक्य-विविधता

मूल पाठक अंश — सुगठित अनुच्छेद केवल सही वाक्यक ढेर नहि। वाक्यक लम्बाइ, प्रकार आ सम्बन्ध बदलि-बदलि विचारक गति बनाओल जाइत अछि। मुख्य विचार लेल स्पष्ट विधानवाचक वाक्य। कारण/शर्त/समय लेल आवश्यक मिश्र वाक्य। समान महत्त्वक विचार लेल संयुक्त वाक्य।

अध्याय १८१ — वाच्य: घटना केँ कोन दृष्टिसँ प्रस्तुत करैत छी?

मूल पाठक अंश — वाच्य वाक्यक एहन संगठन अछि जाहिमे एक्के घटना केँ अलग व्याकरणिक दृष्टिकोणसँ प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि। विद्यालयी अभ्यास लेल कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य आ कर्तारहित/भावप्रधान रचनाक भेद उपयोगी अछि।

अध्याय १८२ — कर्तृवाच्य

मूल पाठक अंश — जखन काज करनिहार कर्ता वाक्यक मुख्य व्याकरणिक केन्द्र हो, तखन वाक्य कर्तृवाच्य कहल जा सकैत अछि। विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर लिखि रहल छथि। कथा, बातचीत, विवरण आ अधिकांश सामान्य गद्यमें हम प्रायः ई बतबैत छी जे के की कएलक।

अध्याय १८३ — कर्मवाच्यक मूल संरचना

मूल पाठक अंश — कर्मवाच्यमे काजक परिणाम, प्रभावित वस्तु, नियम वा प्रक्रिया काज करनिहारसँ अधिक महत्त्वपूर्ण होइत अछि। आधुनिक औपचारिक मैथिलीमे भूत कृदन्त/पूर्ण रूप + “जायब” आधारित परिप्रयुक्त कर्मवाच्य अत्यन्त उपयोगी अछि।

अध्याय १८४ — मैथिली कर्मवाच्य आ अंग्रेजी passive: समानता आ अन्तर

मूल पाठक अंश — अंग्रेजीमे active object केँ passive subject बनायब एकटा प्रमुख व्याकरणिक रूपान्तरण अछि। मैथिलीमे केवल कर्ता-कर्मक स्थान बदलनाइ कर्मवाच्य नहि बनबैत; क्रिया-समूहक रूप निर्णायक अछि।

अध्याय १८५ — कर्मवाच्यक अर्थ: प्रक्रिया, परिणाम आ क्षमता

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय १८६ — कर्तृवाच्यसँ कर्मवाच्य: व्यावहारिक रूपान्तरण

मूल पाठक अंश — रूपान्तरणक पहिल उद्देश्य अर्थ सुरक्षित राखब अछि। निम्न क्रम उपयोगी अछि: देखू जे क्रियाकर्म वा परिणामकेँ केन्द्र बनायब वास्तवमे आवश्यक अछि कि नहि। उचित कर्मवाच्य क्रिया-समूह बनाउ: कएल गेल, लिखल गेल, देल जाएत, जाँचल जाएत आदि।

अध्याय १८७ — कर्मवाच्यक सीमा

मूल पाठक अंश — सभ क्रियाकेँ अंग्रेजी शैलीमे कर्मवाच्य बनायब उचित नहि। अकर्मक क्रियासँ मैथिलीमे विशेष निषेधात्मक/क्षमतासूचक कर्मवाच्य बनि सकैत अछि, मुदा ओकर अर्थ सामान्य अंग्रेजी passive सँ भिन्न होइत अछि। हम हँसलहुँ। → हमरासँ हँसल नहि गेल।

अध्याय १८८ — प्रेरणार्थक रचना: काज करब नहि, करायब

मूल पाठक अंश — जखन कर्ता स्वयं काज नहि करैत, बल्कि दोसर व्यक्ति वा कारणसँ काज करबैत अछि, तखन प्रेरणार्थक/कारक रचना बनैत अछि।

प्रेरणार्थक क्रियाक वास्तविक रूप धातुक प्रकृति आ परम्परागत ध्वनि-परिवर्तनपर निर्भर करैत अछि।

अध्याय १८९ — प्रेरक, करनिहार आ कर्म

मूल पाठक अंश — प्रेरणार्थक वाक्यमे सामान्यतः तीन प्रकारक सहभागी भऽ सकैत अछि: अकर्मक क्रियाक पहिल प्रेरणार्थक रूपमे मूल कर्ता animate रहला पर कै-सूचक कर्मक रूप लऽ सकैत अछि; मध्यस्थ/करनिहारकैँ सँ-सूचक रूप सेहो भेटैत अछि।

अध्याय १९० — प्रत्यक्ष आ मध्यस्थ प्रेरणा

मूल पाठक अंश — प्रेरक जखन सीधे करनिहारक गतिविधि प्रारम्भ करबैत अथवा नियंत्रित करैत अछि, तखन प्रत्यक्ष प्रेरणा बुझल जा सकैत अछि। जखन प्रेरक स्वयं सीधे नहि, बीचक व्यक्ति वा व्यवस्था द्वारा काज सम्पन्न करबैत अछि, तखन मध्यस्थ causationक अर्थ अबैत अछि।

अध्याय १९१ — प्रेरणार्थक रचनामे अर्थक सूक्ष्मता

मूल पाठक अंश — “करायब” सभ ठाम एक्के सामाजिक अर्थ नहि दैत अछि। प्रसङ्ग अनुसार ई अर्थ हो सकैत अछि: आदेश: अधिकारी कर्मचारीसँ प्रतिवेदन लिखौलक। सहायता/उपचार: ओ डॉक्टरसँ जाँच करौलक।

अध्याय १९२ — प्रत्यक्ष कथन

मूल पाठक अंश — प्रत्यक्ष कथनमे वक्ताक मूल शब्द यथासम्भव ज्यों-का-त्यों उद्धृत कएल जाइत अछि। व्यक्ति, काल, सम्बोधन आ सूचक पद मूल वक्ताक दृष्टिकोणमे रहैत अछि।

अध्याय १९३ — उद्धरणचिह्न आ विरामचिह्न

मूल पाठक अंश — आधुनिक मुद्रित गद्यमें प्रत्यक्ष कथन स्पष्ट करबाक लेल निम्न पद्धति अपनाओल जा सकैत अछि: कथन-सूचक भागक बाद अल्पविराम अथवा प्रसङ्गानुसार द्विविन्दु दिअ। उद्धृत वाक्य प्रश्न हो तँ प्रश्नचिह्न उद्धरणक भीतर राखू: “अहाँ कतय जाइत छी?”

अध्याय १९४ — परोक्ष कथन

मूल पाठक अंश — परोक्ष कथनमे वक्ताक शब्द ज्यों-का-त्यों नहि दोहराओल जाइत; कथनक आशय रिपोर्टरक वाक्यक भीतर समाहित कएल जाइत अछि। मैथिलीमे पूरक उपवाक्य शुरू करबाक लेल “जे”, “कि” आ “जे कि” तीनू भेटैत अछि; आधुनिक सामान्य प्रयोगमे “जे” बहुत स्वाभाविक अछि।

अध्याय १९५ — परोक्ष कथनमे व्यक्ति-परिवर्तन

मूल पाठक अंश — परोक्ष कथनक सर्वप्रथम नियम: सर्वनामकें मूल वक्ता नहि, रिपोर्टरक दृष्टिकोणसँ समझू। नाम दोहराएब अस्पष्ट सर्वनामसँ नीक। “ओ कहल जे ओ आएत”मे दुनू “ओ” अलग व्यक्ति हो सकैत अछि; आवश्यक हो तँ “मोहन कहल जे राम आएत” लिखू।

अध्याय १९६ — परोक्ष कथनमे काल: अंग्रेजी backshift नहि थोपू

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी विद्यालयी नियममे past reporting verbक बाद reported clauseक tense प्रायः पछाँ सरकैत अछि। मैथिलीमे एहन यान्त्रिक backshift आवश्यक नहि। reported clauseक काल वास्तविक समय-संबन्ध आ आशय अनुसार चुनल जाए।

अध्याय १९७ — समय, स्थान आ संकेत-पदक परिवर्तन

मूल पाठक अंश — प्रत्यक्षसँ परोक्ष कथन करैत समय आइ, काल्हि, एतय, ई, एहि जकाँ पद तखने बदलू जखन रिपोर्टिंगक समय/स्थान वा दृष्टिकोण बदलल हो। ई परिवर्तन अनिवार्य सूची नहि। जँ रिपोर्ट सेहो ओही दिन आ ओही स्थानपर होइत अछि तँ “आइ/एतय” यथावत् रहि सकैत अछि।

अध्याय १९८ — प्रश्नक परोक्ष कथन

मूल पाठक अंश — प्रत्यक्ष: ओ पुछलक, “अहाँ कतय जाइत छी?” परोक्ष: ओ पुछलक जे अहाँ कतय जाइत छी। प्रत्यक्ष: शिक्षक पुछलनि, “परीक्षा कहिया अछि?” परोक्ष: शिक्षक पुछलनि जे परीक्षा कहिया अछि। परोक्ष: मोहन पुछलक जे राम आएत कि नहि।

अध्याय १९९ — आदेश, अनुरोध आ सलाहक परोक्ष कथन

मूल पाठक अंश — आज्ञार्थक कथन रिपोर्ट करैत समय मैथिलीमे जे/कि-युक्त आज्ञार्थक उपवाक्य, आग्रह/आदेश + क्रियासंज्ञा, अथवा स्पष्ट पुनर्लेखन—तीनू उपाय उपलब्ध अछि। परोक्ष कथनमे मूल कथनक सभ्यता-स्तर आ आशय सुरक्षित राखू।

अध्याय २०० — कथन-सूचक क्रिया

मूल पाठक अंश — सही reporting verb चुनलासँ वाक्यक अर्थ अधिक स्पष्ट होइत अछि। “कथन-सूचक क्रिया” विषयक नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय २०१ — कथन-परिवर्तनमे सामान्य भूल

मूल पाठक अंश — जँ रिपोर्टर मोहन नहि: मोहन कहलक जे ओ अगिला दिन जाएत। स्वाभाविक: ओ पुछलक जे अहाँ कतय जाइत छी। दोष: शिक्षक कहलनि जे विद्यार्थी चुप रहल। जँ आदेश अभिप्रेत: शिक्षक कहलनि जे विद्यार्थी सभ चुप रहथि / चुप रहबाक आदेश देलनि।

अध्याय २०२ — वाच्य आ कथनक शैलीगत चयन

मूल पाठक अंश — जतय प्रक्रिया कर्तासँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि, कर्मवाच्य उपयोगी: “नमूना तीन बेर जाँचल गेल।” मुदा कर्ता जिम्मेवारी लेल महत्त्वपूर्ण हो तँ कर्तृवाच्य स्पष्ट: “समितिक तीन सदस्य नमूना जाँचलनि।” समाचारमे स्रोत स्पष्ट राखू।

अध्याय २०३ — मिश्रित कथन आ उद्धरण

मूल पाठक अंश — एकहि अनुच्छेदमे प्रत्यक्ष आ परोक्ष कथन दुहूक प्रयोग भऽ सकैत अछि, मुदा पाठकक आवाजक सीमा स्पष्ट बुझाओल जाए। एतय पहिल वाक्य सूचना सारांश रूपमे दैत अछि; दोसर वाक्य महत्त्वपूर्ण मूल शब्द सीधे उद्धृत करैत अछि।

अध्याय २०४ — मुख्य उपवाक्य आ अधीनस्थ उपवाक्य

मूल पाठक अंश — जे उपवाक्य वाक्यक मुख्य विधान वहन करैत अछि, ओ मुख्य उपवाक्य अछि। जे उपवाक्य अपन पूरा व्याकरणिक कार्य लेल मुख्य उपवाक्य वा कोनो संज्ञा/क्रियापर निर्भर अछि, ओ अधीनस्थ उपवाक्य अछि। अधीनस्थ उपवाक्यमे कर्ता आ क्रिया दुनू रहि सकैत अछि;

अध्याय २०५ — उपवाक्यक तीन मुख्य वर्ग

मूल पाठक अंश — एकहि उपवाक्यकें केवल आरम्भिक शब्द देखि वर्गीकृत नहि करू; पूरा वाक्यमे ओकर कार्य देखू। “जे” पूरकचिह्न सेहो भऽ सकैत अछि आ सम्बन्धवाचक सर्वनाम सेहो।

अध्याय २०६ — पूरक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — पूरक उपवाक्य मुख्य वाक्यक कोनो संज्ञा, भाव, अनुभूति वा क्रियाक अपेक्षित अर्थ पूरा करैत अछि। मैथिलीमे “जे”, “कि” आ “जे कि” पूरकचिह्न भेटैत अछि; सामान्य गद्यमें “जे” अत्यन्त स्वाभाविक अछि।

अध्याय २०७ — विषय-पूरक आ कर्म-पूरक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — जखन पूरा उपवाक्य वाक्यक विषय जकाँ काज करए, तखन ओकरा विषय-पूरक बुझल जा सकैत अछि। जे अहाँ समयपर पहुँचलहुँ, ई बहुत नीक भेल। जे परीक्षा स्थगित भऽ गेल, से सभ विद्यार्थीकें ज्ञात अछि। हम बुझैत छी जे एहि उपायसँ काज सरल होयत।

अध्याय २०८ — पूरक उपवाक्य आ प्रश्न

मूल पाठक अंश — परोक्ष प्रश्न सेहो पूरक उपवाक्यक काज करैत अछि। प्रश्नपद अपन स्वाभाविक स्थान राखैत अछि। हम सोचि रहल छी जे ई काज कोना पूरा होयत। हाँ/नहि प्रश्न रिपोर्ट करैत समय ‘कि नहि’ अर्थ स्पष्ट कऽ सकैत अछि: “हमरा नहि बुझाइत अछि, जे ओ आएत कि नहि।”

अध्याय २०९ — असीमित पूरक: -ब, -बाक, -नाइ

मूल पाठक अंश — जहाँ पूरा सीमित उपवाक्य आवश्यक नहि, मैथिली क्रियाकें संज्ञात्मक वा असीमित रूप दऽ सकैत अछि। ई रूप सभ ठाम परस्पर बदलाय

योग्य नहि। प्रचलित वाक्य-ढाँचा अनुसार रूप चुनू; केवल अंग्रेजी infinitive देखिकेँ एक्के प्रत्यय नहि लगाउ।

अध्याय २१० — सम्बन्धवाचक उपवाक्यक मूल रचना

मूल पाठक अंश — सम्बन्धवाचक उपवाक्य संज्ञा वा सर्वनामकेँ चिन्हैत, सीमित करैत वा ओकर विषयमे अतिरिक्त सूचना दैत अछि। मैथिलीमे सम्बन्धवाचक आधार 'जे' आ ओकर विभक्त रूपसभ अछि। जे लइका काल्हि आयल, से हमर विद्यार्थी अछि।

अध्याय २११ — जे...से आ सम्बन्ध-सहसम्बन्ध

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे सम्बन्धवाचक आ सहसम्बन्धी पदक जोड़ी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल भाग व्यक्ति/वस्तु/स्थिति चिन्हैत अछि, दोसर भाग मुख्य वाक्यमे ओकरा पुनः ग्रहण करैत अछि।

अध्याय २१२ — सीमासूचक आ अतिरिक्त-सूचनात्मक सम्बन्धवाचक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — जे उपवाक्य संज्ञाक सम्भावित समूहमे सँ ठीक व्यक्ति/वस्तु चुनैत अछि, ओ सीमासूचक अछि। जे विद्यार्थी प्रथम आयल, से पुरस्कार पाओत।

अध्याय २१३ — सम्बन्धवाचक उपवाक्यक स्थान

मूल पाठक अंश — मैथिली सम्बन्धवाचक रचना पदक्रमक दृष्टिसँ लचीली अछि। व्यावहारिक लेखनमे तीन ढाँचा बुझब उपयोगी अछि: दीर्घ वाक्यमे सम्बन्धवाचक उपवाक्यकेँ जकर संज्ञासँ सम्बन्ध अछि ओकर नजदीक राखू; नहि तँ अस्पष्टता उत्पन्न होयत।

अध्याय २१४ — संक्षिप्त सम्बन्धवाचक रचना

मूल पाठक अंश — कतेको सम्बन्धवाचक उपवाक्य कृदन्त/असीमित क्रिया-रूपसँ छोट कएल जा सकैत अछि। एहि सँ गद्य संक्षिप्त होइत अछि। संक्षेपण तखने करू जखन कर्ता आ सम्बन्ध अस्पष्ट नहि हो। लम्बा वा बहु-स्तरीय उपवाक्यकेँ जबरदस्ती कृदन्तमे नहि बदलू।

अध्याय २१५ — क्रियाविशेषणीय उपवाक्य: परिचय

मूल पाठक अंश — क्रियाविशेषणीय उपवाक्य मुख्य घटनाक समय, स्थान, रीति, कारण, परिणाम, प्रयोजन, समकालिकता, शर्त वा विरोधी परिस्थिति बतबैत अछि। क्रियाविशेषणीय उपवाक्य: परिचय केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय २१६ — समयसूचक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — समयक सम्बन्ध केवल 'कहिया' नहि, क्रम, अवधि आ सीमा सेहो बतबैत अछि। जखन हम पहुँचलहुँ, तखन बैठक शुरू भऽ चुकल छल। कतेको वाक्यमे 'जखन'क घटना कारणो बुझा सकैत अछि।

अध्याय २१७ — स्थानसूचक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — जतय पुस्तकालय अछि, ततय शांत वातावरण रहैत अछि। जतय-जतय अवसर भेटत, ततय-ततय सीखबाक प्रयास करू। स्थानसूचक उपवाक्य प्रायः सम्बन्ध-सहसम्बन्धी रचना अछि। 'जतय' अधीनस्थ भाग चिन्हैत अछि आ 'ततय/ओतय' मुख्य भागमे स्थान ग्रहण करैत अछि।

अध्याय २१८ — रीतिसूचक आ तुलना-सदृश उपवाक्य

मूल पाठक अंश — जहिना शिक्षक बुझौलनि, तहिना विद्यार्थी लिखलक। ओ एना बाजल जेना हमरा चिन्हैत नहि हो। जेना/जहिना वास्तविक समानता सेहो व्यक्त करैत अछि आ काल्पनिक 'मानू जे' अर्थ सेहो। काल्पनिकता रहला पर क्रियाभाव बदलि सकैत अछि।

अध्याय २१९ — कारणसूचक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — कारण स्पष्ट करबाक अनेक उपाय अछि; शैली अनुसार चयन करू। हम नहि गेलहुँ, किएक तँ वर्षा भऽ रहल छल। हम नहि गेलहुँ, कारण जे स्वास्थ्य नीक नहि छल। गाड़ी छूटि गेल, ताहि सँ हम ओतय रुकि गेलहुँ। व्याकरण कारणक सम्बन्ध बतबैत अछि;

अध्याय २२० — परिणामसूचक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — परिणामसूचक रचना कारणक बाद उत्पन्न फल बतवैत अछि। ‘ताहि सँ’, ‘एहि कारण’, ‘फलतः’ जकाँ पद उपयोगी अछि; कतेको रचनामे ‘जाहि सँ’ परिणाम अथवा प्रयोजन दुनू अर्थ दऽ सकैत अछि, तँ प्रसङ्ग स्पष्ट राखू। बहुत वर्षा भेल, ताहि सँ सड़क डूबि गेल।

अध्याय २२१ — प्रयोजनसूचक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — मुख्य आ प्रयोजन-वाचक भागक कर्ता एक्के हो तँ असीमित रूप अत्यन्त स्वाभाविक अछि। प्रयोजनक भागक कर्ता अलग हो तँ पूर्ण उपवाक्य अधिक स्पष्ट होइत अछि। ओ बहुत मेहनत करैत छथि जाहि सँ कि हुनकर परिवार सुखी रहय।

अध्याय २२२ — समकालिकता

मूल पाठक अंश — दू घटना एक्के समय चलि रहल हो तँ मैथिली पुनरुक्त अपूर्ण क्रिया-रूप अथवा सामान्य अधीनस्थ रचना प्रयोग कऽ सकैत अछि। जखन हम लिखि रहल छलहुँ, तखन ओ पढ़ि रहल छल। पहिल तीन उदाहरण संक्षिप्त समकालिक रचना अछि;

अध्याय २२३ — वास्तविक शर्त: जँ...तँ

मूल पाठक अंश — जँ/यदि/अगर शर्तक भाग चिन्हैत अछि आ तँ परिणामक भाग। सामान्य लिखित मैथिलीमे ‘जँ...तँ’ अत्यन्त उपयोगी जोड़ी अछि। संक्षिप्त गद्यमे ‘तँ’ लुप्त भऽ सकैत अछि—“जँ समय भेटत, हम आएब।” मुदा दीर्घ वाक्यमे ‘तँ’ राखलासँ संरचना साफ रहैत अछि।

अध्याय २२४ — काल्पनिक वा विपरीत-तथ्य शर्त

मूल पाठक अंश — जखन शर्त वास्तविक तथ्य नहि, बल्कि कल्पना, चुकल अवसर वा विपरीत परिस्थिति अछि, तखन सशर्त भावक -इत प्रकारक रूप महत्त्वपूर्ण होइत अछि। जँ हम अहाँक जगह रहितहुँ तँ एना नहि करितहुँ। एहन वाक्यमे शर्त-सूचक जँ कतेको प्रसङ्गमे लुप्त भऽ सकैत अछि;

अध्याय २२५ — स्वीकार-विरोधसूचक उपवाक्य

मूल पाठक अंश — एहन रचनामे अधीनस्थ भाग कोनो तथ्य स्वीकार करैत अछि, मुदा मुख्य भाग बतबैत अछि जे अपेक्षित परिणाम ताहि तथ्यक बावजूद नहि भेल। ओ हमर मित्रो भऽ कऽ हमरा सँ झगडा कएलक। औपचारिक गद्यमें ‘यद्यपि...तथापि’ स्पष्ट अछि;

अध्याय २२६ — संयोजक/संक्षिप्त क्रिया-उपवाक्य

मूल पाठक अंश — एक्के कर्ताक क्रमिक काजकें बारम्बार पूर्ण उपवाक्य बनायब आवश्यक नहि। ‘कऽ/करि’, कृदन्त आ असीमित रूप गद्यकें संक्षिप्त करैत अछि। दोषपूर्ण: “राम घर पहुँचि सीता भोजन बनौलक।” एतय ‘पहुँचि’क कर्ता राम कि सीता अस्पष्ट भऽ सकैत अछि।

अध्याय २२७ — जटिल वाक्यमे विरामचिह्न

मूल पाठक अंश — आरम्भिक दीर्घ अधीनस्थ उपवाक्यक बाद अल्पविराम पठनीयता बढ़बैत अछि: “जखन बैठक समाप्त भेल, तखन सभ सदस्य बाहर आयल।” छोट आ निकट उपवाक्यमे अल्पविराम अनिवार्य नहि: “हम जाएब जँ समय भेटत।

अध्याय २२८ — अंग्रेजी clause प्रणालीसँ व्यावहारिक तुलना

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी subordinating conjunctionक प्रत्येक शब्द लेल एकटा स्थायी मैथिली शब्द खोजब उचित नहि। पहिने विचारक सम्बन्ध चिन्हू, तकर बाद स्वाभाविक मैथिली संरचना चुनू।

अध्याय २२९ — जटिल वाक्यक सम्पादन: पाँचटा जाँच

मूल पाठक अंश — मुख्य विधान की अछि? एक वाक्यमे ओकरा स्पष्ट चिन्हि सकैत छी कि नहि? प्रत्येक अधीनस्थ उपवाक्य ककरा सँ जुड़ल अछि—क्रिया, संज्ञा कि पूरा वाक्य? सर्वनामक सन्दर्भ स्पष्ट अछि कि ‘ओ/ओकर/हुनकर’ सँ भ्रम होइत अछि?

अध्याय २३० — उपवाक्य-संक्षेपणक व्यावहारिक सिद्धान्त

मूल पाठक अंश — संक्षेपण सुन्दर तखने अछि जखन अर्थ नहि कटैत। कर्ता, समय वा तार्किक सम्बन्ध खोइत हो तँ पूर्ण उपवाक्य राखू। एहि अध्यायक केन्द्र “उपवाक्य-संक्षेपणक व्यावहारिक सिद्धान्त” अछि।

अध्याय २३१ — अनुच्छेदमे उपवाक्यक विविधता

मूल पाठक अंश — सुगठित अनुच्छेद केवल लम्बा मिश्र वाक्यक शृंखला नहि। छोट विधान, सम्बन्धवाचक वाक्य, कारणसूचक वाक्य, शर्त आ संक्षिप्त क्रिया-रचना सभकेँ संतुलित रूपेँ प्रयोग करू।

अध्याय २३२ — शब्द, मूल आ रूप

मूल पाठक अंश — एकटा शब्दकेँ बुझबाक लेल तीन स्तर उपयोगी अछि—मूल अर्थ, व्याकरणिक रूप आ व्युत्पन्न शब्द। “पढ़ैत” आ “पढ़ल” सामान्यतः एक्के क्रियाक रूप अछि; “पढ़निहार” वाक्यमे संज्ञा/विशेषण-जकाँ काज कऽ सकैत अछि।

अध्याय २३३ — मूल, आधार आ प्रत्यय

मूल पाठक अंश — जाहि रूपपर कोनो व्याकरणिक वा शब्द-निर्माणकारी तत्त्व जोड़ल जाए, ओकरा आधार कहल जा सकैत अछि। आधार सदिखन एक अक्षर वा एक धातु नहि होइत अछि; कतेको बेर पहिनेसँ बनल शब्दो नव निर्माणक आधार बनैत अछि। सावधानी: ऊपरक समीकरण शिक्षण-सुविधा लेल अछि।

अध्याय २३४ — व्याकरणिक रूप बनाम व्युत्पन्न शब्द

मूल पाठक अंश — ई भेद सम्पूर्णतः कठोर नहि; किछु रूप व्याकरण आ शब्दकोशक बीचक क्षेत्रमे रहैत अछि। व्यावहारिक लेखनमे मुख्य प्रश्न ई अछि—रूप वाक्यक व्याकरण पूरा करैत अछि कि नव शब्दार्थ बनबैत अछि? एहि अध्यायक केन्द्र “व्याकरणिक रूप बनाम व्युत्पन्न शब्द”...

अध्याय २३५ — उपसर्ग: प्रारम्भिक परिचय

मूल पाठक अंश — उपसर्ग शब्दक आगाँ जुड़ि ओकर अर्थमे परिवर्तन करैत अछि। आधुनिक मैथिलीक औपचारिक शब्दावलीमे अनेक संस्कृत-उत्पन्न उपसर्ग

सक्रिय रूपें भेटैत अछि। मुदा ई सभ उपसर्ग प्रत्येक देशज शब्दक संग मनमाना जोड़ल नहि जा सकैत अछि।

अध्याय २३६ — नकारात्मक आ अभावसूचक उपसर्ग

मूल पाठक अंश — अ-, अन-, निर-, नि- आदि अनेक औपचारिक शब्दमे अभाव वा नकारक अर्थ दैत अछि। मुदा ‘नहि’ वाक्यक नकार अछि; उपसर्ग शब्दक अर्थ बदलैत अछि। ‘अनीक’, ‘निसुन्दर’ जकाँ मनगढन्त रूप नहि बनाउ।

अध्याय २३७ — भाववाचक संज्ञा बनायब

मूल पाठक अंश — गुण, अवस्था वा सम्बन्धकें संज्ञारूप देबाक लेल मैथिलीमे अनेक स्थापित रूप उपलब्ध अछि। -पन अत्यन्त परिचित साधन अछि; औपचारिक शब्दावलीमे -ता, -त्व आदि संस्कृत-उत्पन्न रूप सेहो भेटैत अछि। जाहि रूपक प्रचलन अछि, ओही रूपकें प्राथमिकता दिअ।

अध्याय २३८ — करनिहार व्यक्ति: -निहार

मूल पाठक अंश — क्रियासँ ‘जे ई काज करैत अछि’ अर्थक व्यक्ति वा गुण बताबय लेल -निहार प्रकारक रचना मैथिलीमे उपयोगी अछि। ‘-निहार’ हर क्रियाक संग समान सहजता सँ नहि लगैत; जँ रूप बोझिल हो तँ ‘जे ... करैत अछि’ सम्बन्धवाचक रचना अधिक स्वाभाविक हो सकैत अछि।

अध्याय २३९ — गुणसूचक औपचारिक प्रत्यय

मूल पाठक अंश — औपचारिक, शैक्षिक आ तकनीकी मैथिलीमे -हीन, -युक्त, -मय जकाँ संस्कृत-उत्पन्न उत्तरांश अनेक स्थापित शब्द बनबैत अछि। एहन रूप औपचारिक रजिस्टरमे उपयोगी अछि, मुदा सामान्य बातचीतमे ‘अर्थ नहि’, ‘पानि बिना’, ‘आनन्दसँ भरल’ जकाँ वाक्यांश बेसी...

अध्याय २४० — क्रियासँ संज्ञा-जकाँ रूप

मूल पाठक अंश — क्रिया अनेक असीमित रूपक माध्यमसँ संज्ञा-जकाँ काज कऽ सकैत अछि। ई प्रक्रियाक किछु भाग शब्द-रचना आ किछु भाग वाक्य-

व्याकरणक सीमा पर अछि। एकर उपयोग अंग्रेजी infinitive वा gerundक यान्त्रिक अनुवाद नहि;

अध्याय २४१ — क्रियासँ विशेषण-जकाँ रूप

मूल पाठक अंश — पढ़ैत विद्यार्थी — जे विद्यार्थी पढ़ि रहल अछि/पढ़ैत अछि। लिखल पत्र — जे पत्र लिखल गेल/लिखल अछि। एहन कृदन्तीय रूप सम्बन्धवाचक उपवाक्यकेँ छोट करैत अछि। कर्ता वा काल अस्पष्ट हो तँ पूर्ण उपवाक्य बेहतर अछि।

अध्याय २४२ — समास आ संयुक्त शब्द: परिचय

मूल पाठक अंश — दू वा अधिक शब्द मिलि जखन एकटा स्थिर शब्दार्थ वा घनिष्ठ नाम बनबैत अछि, तखन संयुक्त शब्द/समासक स्थिति उत्पन्न होइत अछि। सामान्य पदसमूह आ स्थिर संयुक्त शब्दक सीमा सदिखन कठोर नहि।

अध्याय २४३ — समन्वयी संयुक्त रूप

मूल पाठक अंश — जखन दुनू भाग समान दर्जा रखैत अछि आ बीचमे 'आ' जोड़ल जा सकैत अछि, तखन समन्वयी संयुक्त रूप बनैत अछि। कतेको संयुक्त रूपक अर्थ व्यापक भऽ जाइत अछि। 'घर-दुआर' केवल घर आ दरबज्जा नहि, पूरा घरेलू परिवेश/सम्पत्ति बुझा सकैत अछि।

अध्याय २४४ — मुख्य-पदवाला संयुक्त शब्द

मूल पाठक अंश — कतेको संयुक्त शब्दमे एक भाग मुख्य अछि आ दोसर ओकर प्रकार, सम्बन्ध वा क्षेत्र बतबैत अछि। ग्रामसभा — गाम/ग्रामसँ सम्बन्धित सभा। राजमार्ग — प्रमुख/राजकीय मार्गक स्थापित औपचारिक शब्द। पुस्तकालय — पुस्तक रखबाक/पढ़बाक स्थानक स्थापित शब्द।

अध्याय २४५ — समास आ साधारण पदसमूहक भेद

मूल पाठक अंश — लेखन-वर्तनी तय करैत समय शब्दकोश, मानक प्रकाशन आ स्थापित परम्परा देखू। 'जे एक संग लिखल गेल से समास'—एहन उलटा नियम नहि बनाउ। समास आ साधारण पदसमूहक भेद पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ...

अध्याय २४६ — संयुक्त क्रिया आ संयुक्त शब्द

मूल पाठक अंश — ‘काज करब’, ‘निर्णय लेब’, ‘ध्यान देब’ जकाँ रचना शब्द-निर्माणक समास मात्र नहि; ई संज्ञा + क्रियाक स्थिर क्रियात्मक संयोजन अछि। इकाई ४ मे पढ़ल संयुक्त क्रिया (खा लेब, चलि जाएब) सेहो अलग व्याकरणिक प्रकार अछि।

अध्याय २४७ — पुनरुक्ति: रूप दोहराकऽ अर्थ बदलनाइ

मूल पाठक अंश — एक्के शब्द वा शब्दांश दोहराएब मैथिलीमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रूप-प्रक्रिया अछि। ई केवल अनावश्यक पुनरावृत्ति नहि; सन्दर्भ अनुसार वितरण, क्रमिकता, तीव्रता, विस्तार वा सामान्यता व्यक्त कऽ सकैत अछि।

अध्याय २४८ — वितरणात्मक आ क्रमिक पुनरुक्ति

मूल पाठक अंश — पुनरुक्ति हटौला पर मूल तथ्य रहि सकैत अछि, मुदा वितरण/क्रम/तीव्रताक सूक्ष्म अर्थ नष्ट भऽ सकैत अछि। “वितरणात्मक आ क्रमिक पुनरुक्ति” विषयक नियमक सूची मात्र नहि; भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय २४९ — पुनरुक्ति आ साधारण दोहराव

मूल पाठक अंश — सभ दोहराव पुनरुक्त शब्द-रचना नहि। वक्ता अटकला पर अनायास ‘हम... हम...’ कहए, ओ वाक्-अस्फुटता अछि; ‘एक-एक लोक’ जानि-बुझि बनाओल अर्थपूर्ण पुनरुक्ति अछि।

अध्याय २५० — ध्वन्यनुकरण आ अभिव्यंजक शब्द

मूल पाठक अंश — प्रकृति, वस्तु वा क्रियाक ध्वनिक अनुकरणसँ बनल शब्द ध्वन्यनुकरणात्मक कहल जा सकैत अछि। एहन रूप कथा, संवाद आ वर्णनमे जीवंतता बढ़बैत अछि। छम-छम — पायल अथवा तालबद्ध झंकारक ध्वनि।

अध्याय २५१ — आंशिक/प्रतिध्वनि-रूप

मूल पाठक अंश — मैथिलीक बोलचालमे पूर्ण पुनरुक्तिक अतिरिक्त आंशिक, ध्वनि-बदलल वा प्रतिध्वनि-जकाँ रूप सेहो भेटैत अछि। ई सामान्यतः अनौपचारिक, भावात्मक वा 'एहि प्रकारक अन्य वस्तु सेहो' अर्थ दऽ सकैत अछि। औपचारिक गद्यमें एहन रूपक प्रयोग सीमित राखू।

अध्याय २५२ — तत्सम, तद्भव आ स्थानीय शब्द

मूल पाठक अंश — मैथिलीक शब्दभण्डार अनेक ऐतिहासिक स्रोतसँ बनल अछि। संस्कृतसँ लगभग अपरिवर्तित रूपमे लेल शब्दकें तत्सम, ध्वनि-परिवर्तनक दीर्घ ऐतिहासिक क्रमसँ विकसित रूपकें तद्भव कहल जाइत अछि; स्थानीय/देशज स्रोतक शब्द सेहो बड़ी संख्या में अछि।

अध्याय २५३ — शब्द-चयन: बोलचाल, साहित्य आ शास्त्रीय गद्य

मूल पाठक अंश — शुद्धता लेल अर्थक स्पष्टता नहि त्यागू। पाठककें परिचित सरल शब्द उपलब्ध हो तँ दुर्लभ संस्कृत पर्याय केवल प्रदर्शन लेल नहि चुनू।

अध्याय २५४ — उधार शब्द आ मैथिली वाक्य

मूल पाठक अंश — भाषा सम्पर्कसँ शब्द लेनाइ सामान्य प्रक्रिया अछि। उधार शब्द मैथिली वाक्यमे आबि मैथिलीक कारक, परसर्ग, पदक्रम आ क्रिया-सामञ्जस्यक नियम मानैत अछि। फाइलमे — उधार संज्ञा + मैथिली परसर्ग। रिपोर्टक विषय — उधार संज्ञा + मैथिली सम्बन्धरूप।

अध्याय २५५ — नव पारिभाषिक शब्द बनायब

मूल पाठक अंश — नव शब्द बनाबय पड़ला पर निम्न क्रम अपनाउ: २. स्थापित भारतीय/शास्त्रीय पारिभाषिक शब्द व्यापक रूपेँ स्वीकृत हो तँ ओकरा अनावश्यक बदलू नहि। ४. उच्चारण कठिन, अत्यन्त लम्बा वा अनेक अर्थवला रूपसँ बचू।

अध्याय २५६ — मिश्रित नवशब्द आ सावधानी

मूल पाठक अंश — एक भाग अंग्रेजी, दोसर संस्कृत, तेसर मैथिली जोड़ि बनल रूप कतेको बेर संचारक बदला भ्रम उत्पन्न करैत अछि। मिश्रित रूप केवल

ओतय स्वीकारू जतय वास्तविक प्रयोगमे ओ स्थापित भऽ चुकल हो। स्थापित पारिभाषिक शब्दक रूप मनमाना नहि बदलू।

अध्याय २५७ — वर्तनी: एक संग, अलग कि योजकचिह्न?

मूल पाठक अंश — संयुक्त शब्दक वर्तनी अर्थ, परम्परा आ पठनीयतापर निर्भर अछि। एकटा सार्वभौम सूत्र सभ रूपपर लागू नहि। डिजिटल खोज आ सम्पादन लेल वर्तनीक एकरूपता विशेष महत्त्वपूर्ण अछि।

अध्याय २५८ — शब्द-परिवार

मूल पाठक अंश — एक आधारसँ सम्बन्धित शब्दसभकेँ शब्द-परिवारक रूपमे सीखला पर शब्दभण्डार तेजी सँ बढ़ैत अछि। ‘पढ़ाइ/लिखाइ’ जकाँ रूपक उच्चारण, अर्थ आ औपचारिकता क्षेत्र/रजिस्टर अनुसार बदलि सकैत अछि; पाठ्यपुस्तकमे वाक्यसहित सीखू।

अध्याय २५९ — शब्द-निर्माणक सामान्य अशुद्धि

मूल पाठक अंश — दोष: स्थापित रूप नहि देखि प्रत्येक शब्दपर एक्के प्रत्यय लगायब। सुधार: प्रयोग-प्रमाण देखू; आवश्यक हो तँ वाक्यांश प्रयोग करू। दोष: ‘नहि’क बदला मनगढन्त नकारात्मक उपसर्ग जोड़ब।

अध्याय २६० — अंग्रेजी word formation सँ व्यावहारिक तुलना

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी word-formationक नाम शिक्षणक तुलना लेल उपयोगी अछि; मैथिलीक शब्द बनायब अंग्रेजी ढाँचाक नकल नहि।

अध्याय २६१ — शुद्ध लेखनक मूल सिद्धान्त

मूल पाठक अंश — ५. वाक्य व्याकरणसम्मत आ स्वाभाविक मैथिली हो। Spell-check केवल अक्षर देखैत अछि; मुहावरा आ वाक्यविन्यास नहि। उदाहरणतः “हम ई पोथी लाइक करैत छी”क बदला “हमरा ई पोथी नीक लगैत अछि” स्वाभाविक मैथिली अछि।

अध्याय २६२ — देवनागरी आ मैथिली

मूल पाठक अंश — मैथिलीक ऐतिहासिक लिपि-परम्परामे मिथिलाक्षर/तिरहुता आ कैथी रहल अछि। आधुनिक शिक्षा, परीक्षा, प्रशासन आ अधिकांश मुद्रित-डिजिटल व्यवहारमे देवनागरी व्यापक अछि। एहि पोथीमे आधुनिक देवनागरी कार्यकारी आधार अछि।

अध्याय २६३ — स्वर-मात्रा आ स्थापित वर्तनी

मूल पाठक अंश — एके पुस्तकमे “मैथिली” जकाँ मूल शब्दक वर्तनी स्थिर राखू। पोथी, पानि, आइ, अहाँ जकाँ प्रचलित रूप अपन सम्पादकीय शब्दसूचीमे स्थिर राखू। व्यक्ति वा स्थानक नामक स्वीकृत वर्तनी उपलब्ध हो तँ ओहीकें मानू।

अध्याय २६४ — चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार

मूल पाठक अंश — चन्द्रबिन्दु (ँ) मुख्यतः स्वर-नासिक्यता देखबैत अछि; अनुस्वार (ं) नासिक्य व्यंजन अथवा स्थापित तत्सम/औपचारिक वर्तनीक भाग होइत अछि। दुनू चिन्हकें सीधा विकल्प नहि मानू।

अध्याय २६५ — संयुक्ताक्षर आ हलन्त

मूल पाठक अंश — संयुक्ताक्षर व्यंजनसमूह देखबैत अछि। प्रश्न, तत्त्व, स्वतन्त्र, विद्या, संस्कृति जकाँ स्थापित रूपकें मनमाना तोड़ू नहि। तत्सम आ पारिभाषिक शब्दमे स्थापित संयुक्ताक्षर सुरक्षित राखू।

अध्याय २६६ — नुक्ता आ उधार नाम

मूल पाठक अंश — फ़, ज़, ख़, ग़ जकाँ नुक्तायुक्त अक्षर देवनागरीमे उपलब्ध अछि; मैथिली उच्चारणमे कतेको बेर निकट ध्वनि फ, ज, ख, ग प्रयुक्त होइत अछि। सम्पादनमे एक नीति आवश्यक अछि। व्यक्ति/संस्थाक आधिकारिक देवनागरी रूप उपलब्ध हो तँ ओकर सम्मान करू।

अध्याय २६७ — कारक-चिह्न आ शब्द-सीमा

मूल पाठक अंश — क, कै, सँ, मे जकाँ बन्धित कारक-रूप प्रायः संज्ञा वा सर्वनामक संग जुड़ि लिखल जाइत अछि; जटिल परसर्गीय पदसमूह अलग

शब्द रखि सकैत अछि। एके लेखमे “घर मे” आ “घरमे” बिना कारण बदलैत नहि रहू।

अध्याय २६८ — योजकचिह्न

मूल पाठक अंश — राम-क घर, लाल-फूल, विद्यालय-मे जकाँ सामान्य व्याकरणिक सम्बन्धमे योजकचिह्न अनावश्यक अछि। “योजकचिह्न” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय २६९ — पूर्णविराम, अल्पविराम आ प्रश्नचिह्न

मूल पाठक अंश — देवनागरी गद्यमें “।” स्वाभाविक पूर्णविराम अछि। आधुनिक डिजिटल शैलीमे “.” सेहो भेटैत अछि; एक दस्तावेजमे एक मुख्य नीति चुनू। अल्पविराम सूची, आरम्भिक दीर्घ उपवाक्य आ अतिरिक्त सूचना अलग करैत अछि।

अध्याय २७० — अर्धविराम, द्विबिन्दु, डैश आ कोष्ठक

मूल पाठक अंश — साधारण गद्यमें पूर्णविराम बहुधा जटिल punctuation सँ अधिक स्पष्ट विकल्प अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “अर्धविराम, द्विबिन्दु, डैश आ कोष्ठक” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय २७१ — उद्धरणचिह्न

मूल पाठक अंश — प्रत्यक्ष कथन, शब्दक उल्लेख वा छोट उद्धरण लेल “ ” उपयोगी अछि। एक दस्तावेजमे “ ”, ‘ ’, " " मनमाना नहि मिलाउ। ऐतिहासिक उद्धरणक मूल वर्तनी बिना सूचना बदलू नहि। उद्धरणचिह्न कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय २७२ — संख्या, तिथि आ समय

मूल पाठक अंश — देवनागरी अंक वा 0-9 दुनू आधुनिक प्रकाशनमे भेटैत अछि। पोथीक शैली अनुसार एक मुख्य नीति चुनू। 12/08/26 जकाँ तिथि भ्रम

पैदा कऽ सकैत अछि; औपचारिक गद्यमें महीनाक नाम लिखब अधिक स्पष्ट अछि।

अध्याय २७३ — नाम, स्थान आ विदेशी शब्द

मूल पाठक अंश — २. एके नामक वर्तनी पूरा ग्रन्थमे स्थिर राखू। ४. वैज्ञानिक Latin species, code वा formula जँ मूल Roman रूपमे आवश्यक अछि, तँ ओकरा जसक तस राखू।

अध्याय २७४ — हिन्दी-प्रभावजन्य दोष

मूल पाठक अंश — हिन्दी आ मैथिलीमे साझा शब्द अपने सँ दोष नहि; अस्वाभाविक वाक्यविन्यास, क्रियारूप वा मुहावरा दोष अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “हिन्दी-प्रभावजन्य दोष” अछि।

अध्याय २७५ — अंग्रेजी-प्रभावजन्य दोष

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी-प्रभावजन्य दोष केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय २७६ — अनावश्यक संस्कृतीकरण आ बोलचालीकरण

मूल पाठक अंश — शुद्ध मैथिली = कठिन संस्कृत नहि। दार्शनिक/शास्त्रीय विषयमे तत्सम पारिभाषिक शब्द आवश्यक भऽ सकैत अछि, मुदा सामान्य गद्य सरल आ स्वाभाविक रहय। सरल शब्द उपलब्ध हो तँ दुर्लभ पर्याय केवल प्रदर्शन लेल नहि चुनू।

अध्याय २७७ — सर्वनाम-सन्दर्भक सम्पादन

मूल पाठक अंश — नामक पुनरावृत्ति सदिखन दोष नहि; अस्पष्ट सर्वनामसँ स्पष्ट पुनरावृत्ति बेहतर अछि। सर्वनाम-सन्दर्भक सम्पादन पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक...

अध्याय २७८ — पुनरावृत्ति हटाउ, तथ्य नहि

मूल पाठक अंश — लयात्मक, बलसूचक वा अर्थपूर्ण पुनरुक्ति सम्पादनक नामपर नहि हटाउ। एहि अध्यायक केन्द्र “पुनरावृत्ति हटाउ, तथ्य नहि” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय २७९ — लम्बा वाक्य छोट करब

मूल पाठक अंश — ४. प्रत्येक नव वाक्यमे सर्वनाम स्पष्ट राखू। ५. विरामचिह्नक भरोसापर व्याकरणिक अस्पष्टता नहि छोड़ू। दुर्बल: “जे विद्यार्थी काल्ह आयल छल जे शिक्षकसँ बात कएलक जे परीक्षा स्थगित अछि से आइ नहि आयल।

अध्याय २८० — समानान्तर रचना

मूल पाठक अंश — “समानान्तर रचना” विषयक नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि; तकर बाद रूप कोना बनैत अछि, वाक्य वा पाठमे कोन काज करैत अछि, आ प्रसङ्ग बदलला पर ओकर अर्थ/प्रयोग कोना बदलैत अछि—ई देखब...

अध्याय २८१ — काल आ आदरक संगति

मूल पाठक अंश — काल्ह हम विद्यालय गेलहुँ आ शिक्षक हमरा देखलनि। दोषपूर्ण: “अहाँ लिखैत छह” अथवा “प्राध्यापक बोलि रहल अछि” जकाँ आदर-मिश्रण बिना शैलीगत कारण नहि हो।

अध्याय २८२ — पारिभाषिक शब्दक संगति

मूल पाठक अंश — एके संकल्पना लेल एके मुख्य शब्द राखू। तालिका, अनुक्रमणिका आ मुख्य पाठमे नाम एकरूप राखू। अंग्रेजी मूल शब्द केवल तकनीकी पहचान लेल आवश्यक ठाम दिअ। एहि अध्यायक केन्द्र “पारिभाषिक शब्दक संगति” अछि।

अध्याय २८३ — शीर्षक आ अनुच्छेदक सम्पादन

मूल पाठक अंश — शीर्षक छोट, अर्थपूर्ण आ समान स्तरपर समान व्याकरणिक ढाँचा वाला हो। एक अनुच्छेदक एक प्रमुख विषय हो; विषय बदलला पर नव अनुच्छेद शुरू करू। २. मध्य वाक्य उदाहरण, कारण, प्रमाण वा विस्तार दे।

अध्याय २८४ — पुनर्लेखनक सीमा

मूल पाठक अंश — पुनर्लेखनक उद्देश्य मूल तथ्य सुरक्षित राखि भाषा स्पष्ट करब अछि। तथ्य घटेनाइ, नव तथ्य जोड़नाइ वा लेखकक मत बदलनाइ सम्पादन नहि। “पुनर्लेखनक सीमा” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए।

अध्याय २८५ — डिजिटल सम्पादन आ दृश्य-जाँच

मूल पाठक अंश — दूटा space, अनावश्यक tab आ पाँतिक अन्तक space हटाउ। Latin hyphen, en dash, em dashक अनियमित मिश्रण जाँचू। देवनागरी मात्रा टूटन वा font-परिवर्तन जाँचू। कॉपी-पेस्टसँ superscript, hyperlink वा अलग font बचल अछि कि नहि जाँचू।

अध्याय २८६ — सम्पादनक तीन चरण

मूल पाठक अंश — तीनू स्तर एके बेर करला पर त्रुटि छूटैत अछि। पहिने विचार-संरचना, तकर बाद वाक्य, अन्तमे अक्षर-स्तर जाँच अधिक प्रभावकारी अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “सम्पादनक तीन चरण” अछि।

अध्याय २८७ — सम्पादकीय शैली-पत्र

मूल पाठक अंश — शैली-पत्र भाषाकें कठोर बनायब नहि, एके पुस्तकक भीतर अनावश्यक असंगति रोकबाक औजार अछि। सम्पादकीय शैली-पत्र कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय २८८ — अन्तिम सम्पादकीय जाँचसूची

मूल पाठक अंश — २. शीर्षक आ अनुक्रमणिकाक नाम मेल खाइत अछि? ४. नाम, तिथि, संख्या आ उद्धरण जाँचल गेल? ७. उद्धरणचिह्न आ विरामचिह्न

एकरूप अछि? १०. हिन्दी/अंग्रेजी शब्दक्रमक अनचाहा प्रभाव अछि? ११.
अनावश्यक कठिन शब्द सरल कएल जा सकैत अछि?

अध्याय २८९ — सार्थक वाक्य

मूल पाठक अंश — सार्थक वाक्य ओ अछि जे प्रसङ्गानुसार एक स्पष्ट विचार, सूचना, प्रश्न, आदेश वा भावना व्यक्त करए। 257.1 छोट वाक्य सेहो पूर्ण भऽ सकैत अछि, प्रसङ्ग रहला पर एक शब्दो पूर्ण संप्रेषण कऽ सकैत अछि।

अध्याय २९० — वाक्यक एकता

मूल पाठक अंश — एक वाक्यमे परस्पर सम्बन्धित विचार रहबाक चाही। असम्बद्ध तथ्य केवल “आ” सँ जोड़ि देब वाक्यक एकता भंग करैत अछि। दू तथ्यक वास्तविक सम्बन्ध नहि हो तँ ओकरा अलग वाक्य बनाउ। सम्बन्ध हो तँ समय, कारण, विरोध, परिणाम आदि स्पष्ट करू।

अध्याय २९१ — आवश्यक शब्द आ अनावश्यक शब्द

मूल पाठक अंश — सार्थक वाक्यक प्रत्येक शब्द किछु काज करए। अर्थ नहि बढ़बैत शब्द हटेला पर वाक्य अधिक स्पष्ट होइत अछि। संक्षिप्तताक अर्थ सूचना काटब नहि। “बहुत बेसी” जकाँ अनावश्यक द्विरुक्ति हटाउ; आवश्यक मात्रा, समय वा कारण नहि हटाउ।

अध्याय २९२ — वाक्य-विस्तार

मूल पाठक अंश — मूल वाक्यमे आवश्यक प्रश्नक उत्तर जोड़ि ओकर अर्थ समृद्ध कएल जा सकैत अछि। विस्तृत: “गामक छोट बालक आइ सबेरे विद्यालय पहुँचबाक लेल सड़कपर तेजीसँ दौड़ल।” वाक्य बोझिल होइत हो तँ दू वाक्यमे बाँटू।

अध्याय २९३ — वाक्य-संक्षेपण

मूल पाठक अंश — संक्षेपणमे मूल तथ्य, सम्बन्ध आ आवश्यक विशेषता सुरक्षित राखि अनावश्यक शब्द हटाओल जाइत अछि। संक्षेपण तखने उचित जखन समय, कर्ता वा कारणक महत्त्वपूर्ण अर्थ नहि कटैत।

अध्याय २९४ — दू वाक्य जोड़ब

मूल पाठक अंश — दू छोट वाक्यक बीच सम्बन्ध स्पष्ट हो तँ ओकरा समन्वय, अधीनस्थ उपवाक्य वा असीमित क्रिया-रूपसँ जोड़ल जा सकैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “दू वाक्य जोड़ब” अछि।

अध्याय २९५ — एक लम्बा वाक्य तोड़ब

मूल पाठक अंश — जतय एक वाक्यमे अनेक स्वतन्त्र विचार, अनेक “जे”, अथवा अनेक कारण-परिणाम भरि गेल हो, ओतय वाक्य विभाजन पठनीयता बढ़बैत अछि। दुर्बल: “जे छात्र काल्हि आयल छल जे शिक्षकसँ बात कएलक जे परीक्षा स्थगित अछि से आइ विद्यालय नहि आयल कारण जे ओकरा ज्वर...”

अध्याय २९६ — वाक्य-विविधता

मूल पाठक अंश — एकहि आकारक वाक्य लगातार लिखला पर गद्य सपाट भऽ सकैत अछि। छोट, मध्यम आ कतेको दीर्घ वाक्यक संतुलित प्रयोग उपयोगी अछि। छोट जोरदार वाक्य: “निर्णय स्पष्ट छल।” मध्यम व्याख्यात्मक वाक्य: “समिति सभ प्रस्ताव पढ़ि अन्तिम निर्णय लेलक।”

अध्याय २९७ — अनुच्छेद की?

मूल पाठक अंश — अनुच्छेद परस्पर सम्बन्धित वाक्यसभक एहन समूह अछि जे एक मुख्य विषय वा विचार विकसित करैत अछि। सभ अनुच्छेदमे ई तीनू भाग स्पष्ट वाक्यरूपमे अनिवार्य नहि; मुदा विचारक एकता आ विकास अनिवार्य अछि।

अध्याय २९८ — विषय-वाक्य

मूल पाठक अंश — विषय-वाक्य पाठककेँ बतबैत अछि जे अनुच्छेद मुख्यतः ककर विषयमे अछि आ लेखक ओकर विषयमे की मुख्य बात कहय चाहैत अछि। “शिक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण अछि” एक छोट अनुच्छेद लेल बहुत व्यापक अछि।

अध्याय २९९ — समर्थक वाक्य

मूल पाठक अंश — विषय-वाक्यक बाद प्रत्येक वाक्य मुख्य विचारकें किछु प्रकारैं आगे बढ़ावय। तथ्य/विवरण: एकर रूप, मात्रा, स्थान, प्रक्रिया की? जे वाक्य एहि प्रश्नसभमे कोनो प्रकारैं मुख्य विषयसँ नहि जुड़ैत अछि, ओकर स्थान दोसर अनुच्छेदमे हो सकैत अछि।

अध्याय ३०० — अनुच्छेदक एकता

मूल पाठक अंश — अनुच्छेदक सभ वाक्य एक मुख्य विचारक सेवा करए— एकरे एकता कहल जाइत अछि। सम्बन्धित: पुस्तकक संग्रह, बैठबाक व्यवस्था, खुलबाक समय, अध्ययनक सुविधा। असम्बन्धित: विद्यालयक खेलमैदानक आकार—जँ पुस्तकालयसँ सम्बन्ध नहि।

अध्याय ३०१ — अनुच्छेदक सुसम्बद्धता

मूल पाठक अंश — एकता बतबैत अछि सभ वाक्य एक विषयक अछि; सुसम्बद्धता बतबैत अछि वाक्यसभ एक-दोसरसँ सहज जुड़ल अछि। कारण/परिणाम: कारण जे, ताहि कारण, फलत:। प्रत्येक वाक्यक आरम्भमे “अतः/तथापि/इसके बाद” जकाँ जोड़-पद भरि देब सुसम्बद्धता नहि;

अध्याय ३०२ — विचारक तार्किक क्रम

मूल पाठक अंश — विषय अनुसार अनुच्छेदक क्रम चुनल जाए। एहि अध्यायक केन्द्र “विचारक तार्किक क्रम” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ३०३ — समयक्रम

मूल पाठक अंश — घटना, प्रक्रिया, यात्रा, जीवनीक प्रसङ्ग वा निर्देश लिखैत समय समयक्रम पाठककें “पहिने की, बादमे की” स्पष्ट करैत अछि। अन्तमे प्राप्ति-पत्र सुरक्षित राखल गेल। समयक्रममे घटना कूदबासँ बचू; flashback आवश्यक हो तँ स्पष्ट संकेत दिअ।

अध्याय ३०४ — स्थानक्रम

मूल पाठक अंश — कोनो स्थान, भवन, दृश्य वा वस्तु वर्णन करैत समय एक स्थिर दृष्टि-मार्ग चुनू—बामसँ दहिनि, बाहरसँ भीतर, आगाँसँ पाछाँ, ऊपरसँ नीचाँ आदि। दृष्टि हर वाक्यमे अनियमित बदलला पर पाठक मानसिक नक्शा नहि बना पवैत अछि।

अध्याय ३०५ — सामान्यसँ विशेष

मूल पाठक अंश — व्याख्यात्मक अनुच्छेदमे पहिने व्यापक मुख्य बात, फेर ओकर भाग, उदाहरण वा प्रमाण देब सामान्य पद्धति अछि। दोसर: वाक्य-रचनाक स्वाभाविक ढाँचा परिचित होइत अछि। तेसर: अलग-अलग शैलीक अनुभव भेटैत अछि।

अध्याय ३०६ — उदाहरण-आधारित अनुच्छेद

मूल पाठक अंश — अमूर्त कथनकें ठोस उदाहरण पाठक लेल विश्वसनीय आ स्पष्ट बनवैत अछि। पहिने सामान्य बात स्पष्ट करू, फेर उदाहरण दिअ, आ अन्तमे उदाहरण मुख्य बातकें कोना प्रमाणित करैत अछि तकर सम्बन्ध स्पष्ट करू। एहि अध्यायक केन्द्र “उदाहरण-आधारित अनुच्छेद” अछि।

अध्याय ३०७ — परिभाषा-आधारित लेखन

मूल पाठक अंश — परिभाषा केवल “X कहल जाइत अछि” वाक्य नहि; आवश्यकतानुसार वर्ग, विशेषता, सीमा आ उदाहरण दैत अछि। परिभाषा-आधारित लेखन कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ३०८ — व्याख्या-आधारित लेखन

मूल पाठक अंश — व्याख्या पाठकक “ई कोना/किएक?” प्रश्नक उत्तर दैत अछि। ढाँचा: कथन → कारण/प्रक्रिया → उदाहरण → परिणाम/निष्कर्ष। “व्याख्या-आधारित लेखन” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ३०९ — वर्णन: देखल वस्तुकेँ भाषामे उपस्थित करब

मूल पाठक अंश — वर्णनमे पाठककेँ रूप, आकार, रंग, ध्वनि, गन्ध, गति, दूरी, वातावरण वा भावक आवश्यक संकेत देल जाइत अछि। सभ सूक्ष्म तथ्य लिखब वर्णन नहि। जे विवरण विषयक प्रभाव, पहचान वा प्रयोजन लेल महत्वपूर्ण अछि, ओही चुनू।

अध्याय ३१० — वस्तुनिष्ठ आ प्रभावात्मक वर्णन

मूल पाठक अंश — प्रतिवेदन, निर्देश वा तकनीकी लेखनमे वस्तुनिष्ठ विवरण प्रधान; कथा आ संस्मरणमे प्रभावात्मक विवरण अधिक उपयोगी भऽ सकैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “वस्तुनिष्ठ आ प्रभावात्मक वर्णन” अछि।

अध्याय ३११ — व्यक्ति-वर्णन

मूल पाठक अंश — व्यक्ति-वर्णन केवल आँखि, नाक, कपड़ा गिनेनाइ नहि। प्रसङ्ग अनुसार बाह्य रूप, व्यवहार, बोलबाक ढङ्ग, आदत आ क्रियासँ चरित्र उभरैत अछि। चरित्रक गुण “कहब”क संग “देखेबाक” उदाहरण जोड़ू।

अध्याय ३१२ — स्थान-वर्णन

मूल पाठक अंश — स्थान-वर्णन लेल स्थिर दृष्टिबिन्दु, स्थानक्रम आ प्रमुख वातावरण चुनू। ४. आवश्यक ध्वनि, गन्ध, प्रकाश वा गतिविधि जोड़ू। ५. वर्णनक उद्देश्यसँ असम्बद्ध विवरण हटाउ।

अध्याय ३१३ — प्रक्रिया-विवरण

मूल पाठक अंश — कोनो काज कोना पूरा होइत अछि, तकर चरणबद्ध व्याख्या प्रक्रिया-विवरण अछि। प्रत्येक चरणमे स्पष्ट क्रिया प्रयोग करू। सुरक्षा वा महत्वपूर्ण अपवाद हो तँ ठीक चरणपर लिखू।

अध्याय ३१४ — तथ्यात्मक विवरण आ प्रतिवेदनात्मक अनुच्छेद

मूल पाठक अंश — तथ्यात्मक विवरणमे निरीक्षण आ व्याख्याकेँ अलग राखब महत्वपूर्ण अछि। जँ व्याख्या अनुमान अछि, ओकरा तथ्य जकाँ नहि लिखू; “सम्भवतः”, “बुझाइत अछि”, “एहि आधारपर” जकाँ संकेत दिअ।

अध्याय ३१५ — तुलना-आधारित अनुच्छेद

मूल पाठक अंश — तुलनामे पहिने तुलना-कसौटी तय करू; एक वस्तुक रंगक तुलना दोसरक दामसँ नहि करू। अनुच्छेदक दू मुख्य ढाँचा: (क) पहिने A पूरा, फेर B; (ख) प्रत्येक कसौटीपर A-B साथ-साथ। छोट लेखनमे दोसर ढाँचा प्रायः स्पष्ट होइत अछि।

अध्याय ३१६ — कारण-परिणाम अनुच्छेद

मूल पाठक अंश — कारण-परिणाम लेखनमे सहसम्बन्धकेँ कारण मानि लेबासँ बचू। जे कारण लिखू, ओकर तार्किक सम्बन्ध स्पष्ट हो। समयसँ वर्षा नहि भेल → माटि सुखायल → रोपनीमे देरि → उपज घटबाक जोखिम।

अध्याय ३१७ — समस्या-समाधान अनुच्छेद

मूल पाठक अंश — व्यावहारिक रचनामे समस्या बतब, कारण चिन्हब, सम्भव समाधान देब आ समाधानक सीमा बतब उपयोगी ढाँचा अछि। समस्या-समाधान अनुच्छेद पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि...

अध्याय ३१८ — रूपरेखा बनाकऽ लिखब

मूल पाठक अंश — लिखबासँ पहिने छोट रूपरेखा बनौला पर पुनरावृत्ति घटैत अछि आ विचारक क्रम स्पष्ट रहैत अछि। २. सुविधा: पुस्तक, समाचारपत्र, बैठबाक स्थान। ४. सुधार: समय बढ़ेनाइ, नव पुस्तक जोड़नाइ। ५. निष्कर्ष: नियमित उपयोगसँ विद्यार्थी लाभान्वित।

अध्याय ३१९ — अनुच्छेदक प्रारूप बनायब

मूल पाठक अंश — रूपरेखासँ पहिल प्रारूप बनवैत समय तुरन्त प्रत्येक शब्द सुधारबामे नहि अटकू। पहिने विचार पूरा करू, फेर सम्पादन करू। २. पुनरावलोकन: क्रम, एकता, उदाहरण, अनुपस्थित बात जाँचू।

अध्याय ३२० — अनुच्छेदक आरम्भ

मूल पाठक अंश — आरम्भक वाक्य विषयक अनुसार सीधा कथन, परिस्थिति, प्रश्न वा ठोस दृश्य हो सकैत अछि। कृत्रिम सनसनी, असम्बद्ध उद्धरण वा अत्यधिक सामान्य कथनसँ बच्। “अनुच्छेदक आरम्भ” विषयकै नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए।

अध्याय ३२१ — अनुच्छेदक समापन

मूल पाठक अंश — समापन मुख्य विचारकें नव शब्दमे समेटि सकैत अछि, परिणाम बता सकैत अछि, अथवा अगिला अनुच्छेदक सेतु बनि सकैत अछि। सार: “एहि कारण नियमित पठन केवल परीक्षा लेल नहि, दीर्घकालीन भाषा-विकास लेल आवश्यक अछि।

अध्याय ३२२ — अनुच्छेद सम्पादनक सात प्रश्न

मूल पाठक अंश — ५. जोड़-पद वास्तविक सम्बन्ध देखबैत अछि? ६. कोनो बात अनावश्यक रूपेँ दोहराओल गेल अछि? ७. अन्तिम वाक्य अनुच्छेदकें उचित रूपेँ पूरा करैत अछि? एहि अध्यायक केन्द्र “अनुच्छेद सम्पादनक सात प्रश्न” अछि।

अध्याय ३२३ — कमजोर अनुच्छेदक सम्पूर्ण सुधार

मूल पाठक अंश — कमजोर प्रारूप: “हमर गाम नीक अछि। गाममे लोक रहैत अछि। ओतय पोखरि अछि। हमरा गाम नीक लगैत अछि। स्कूल सेहो अछि। बहुत लोक खेती करैत अछि। पोखरि पैघ अछि।” सुधार: “हमर गामक जीवन मुख्यतः खेती आ सामुदायिक गतिविधिक चारूकात संगठित अछि।

अध्याय ३२४ — रचनाक उद्देश्य, पाठक आ स्वर

मूल पाठक अंश — एके विषय अलग पाठक लेल अलग ढङ्गसँ लिखल जाएत। मित्रकें भेजल ई-पत्र, प्रधानाध्यापककें आवेदन, समाचार-विवरण आ कहानी—चारू मे भाषा आ विन्यास अलग होयत।

अध्याय ३२५ — कथा-वर्णन: घटना नहि, अनुभव बनाउ

मूल पाठक अंश — कथा-वर्णनमे केवल 'ई भेल, फेर ई भेल' पर्याप्त नहि। पाठककेँ पात्र, परिस्थिति, लक्ष्य, बाधा, परिवर्तन आ परिणाम बुझाईत रहबाक चाही। ४. विकास: पात्र की-की प्रयास करैत अछि? ७. समापन: परिणामक अर्थ, प्रतिध्वनि वा आगेक संकेत।

अध्याय ३२६ — घटनाक्रम आ काल-व्यवस्था

मूल पाठक अंश — घटना समयक्रममे लिखल जा सकैत अछि, मुदा कथा कखनो परिणामसँ शुरू भऽ अतीत दिस फेरि सकैत अछि। जे क्रम चुनू, पाठककेँ समयक स्थान स्पष्ट राखू। समय-संकेत: ओहि दिन, किछु देरि बाद, साँझ धरि, अगिला सबेरे, तीन दिन पछाति।

अध्याय ३२७ — दृश्य, सारांश आ गति

मूल पाठक अंश — कथामे प्रत्येक क्षण समान विस्तार नहि चाही। महत्त्वपूर्ण क्षण दृश्यरूपेँ, दीर्घ सामान्य अवधि सारांशरूपेँ लिखू। गति नियन्त्रणक अर्थ अनावश्यक विशेषण बढेनाइ नहि; जे क्षण कथाक अर्थ बदलैत अछि, ओतय ठोस क्रिया, संवाद आ चयनित विवरण बढ़ाउ।

अध्याय ३२८ — पात्र-वर्णन

मूल पाठक अंश — पात्रक गुण केवल घोषणा नहि, क्रियासँ देखाउ। 'ओ साहसी छल'क बदला एहन घटना दिअ जतय साहस प्रकट हो। शारीरिक वर्णन केवल ओतवे दिअ जतय कथा, वातावरण वा चरित्र-निर्माणमे काज करैत हो।

अध्याय ३२९ — संवादक कथात्मक उपयोग

मूल पाठक अंश — संवाद पात्रक आवाज, सम्बन्ध, संघर्ष आ सूचना प्रकट करैत अछि। जे बात कथावाचक एक पाँतिमे कहि सकैत अछि, ओकरा पाँच पाँतिक कृत्रिम संवाद नहि बनाउ। संवादक भीतर पात्रक सामाजिक सम्बन्ध अनुसार आदर-स्तर राखू। सभ पात्र एक्के शब्दावलीमे नहि बाजथि;

अध्याय ३३० — संवाद-लेखनः स्वतंत्र अभ्यास

मूल पाठक अंश — संवाद-लेखनमे लक्ष्य दू वा अधिक व्यक्तिक स्वाभाविक बातचीत प्रस्तुत करब अछि। विद्यालयी अभ्यासमे विषय स्पष्ट, उत्तर प्रासंगिक आ क्रम स्वाभाविक हो। विद्यार्थी: नमस्कार। आइ पुस्तकालय कतेक बजे धरि खुलल रहत?

अभ्यास-आधारित अध्याय नियम-स्मरणसँ आगू उपयोगी कौशल-परीक्षणक अवसर दैत अछि। प्रश्न, अपेक्षित उत्तर, सम्भव विकल्प आ मूल्याङ्कनक कसौटी अलग प्रमाणसहित राखू।

अध्याय ३३१ — कथावाचक संवाद आ प्रत्यक्ष संवाद

मूल पाठक अंश — तीनू रूप उपयोगी अछि। महत्त्वपूर्ण भावनात्मक क्षणमे प्रत्यक्ष संवाद; सामान्य सूचना लेल परोक्ष कथन वा सारांश अधिक संक्षिप्त हो सकैत अछि। कथावाचक संवाद आ प्रत्यक्ष संवाद केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ३३२ — समाचार-लेखनक मूल सिद्धान्त

मूल पाठक अंश — समाचारक प्रथम कर्तव्य सत्यापित तथ्य स्पष्ट करब अछि। समाचार कथा नहि; ओ घटनाकेँ रोचक बनाबय लेल तथ्य जोड़ि नहि सकैत अछि। ५. किएक/कोना भेल? — केवल जतेक सत्यापित हो। ६. परिणाम वा अगिला आधिकारिक कदम की अछि?

अध्याय ३३३ — शीर्षक, आरम्भिक अनुच्छेद आ समाचार-विन्यास

मूल पाठक अंश — शीर्षकमे जे दावा अछि, समाचारमे ओकर आधार हो। आरम्भिक अनुच्छेद समाचारक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य दैत अछि। पाठक केवल पहिल अनुच्छेद पढ़ि घटना बुझि सकए, एहन लक्ष्य राखू। महत्त्वपूर्ण तथ्य पहिने;

अध्याय ३३४ — नमूना समाचार

मूल पाठक अंश — नमूना शीर्षक: विद्यालयमे नव पुस्तकालय-कक्ष शुरू नगरक एकटा माध्यमिक विद्यालयमे सोमदिन नव पुस्तकालय-कक्षक उद्घाटन कएल

गेल। विद्यालयक अनुसार नव कक्षमे पाठ्यपुस्तक, सन्दर्भ-ग्रन्थ आ बाल-साहित्य लेल अलग-अलग खण्ड बनाओल गेल अछि।

अध्याय ३३५ — समाचारमे उद्धरण आ स्रोत

मूल पाठक अंश — कोनो मत, आरोप, संख्या वा विवादास्पद कथनक स्रोत स्पष्ट लिखू। लेखक अपन अनुमानकेँ ‘लोक कहलनि’ जकाँ अस्पष्ट स्रोतक पाछाँ नहि छिपाउ। समाचारमे उद्धरण आ स्रोत केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ३३६ — प्रतिवेदन: समाचारसँ अन्तर

मूल पाठक अंश — प्रतिवेदन कोनो कार्यक्रम, निरीक्षण, कार्य, समस्या वा अध्ययनक व्यवस्थित अभिलेख अछि। समाचार सामान्य पाठककेँ घटना बतबैत अछि; प्रतिवेदन प्रायः निर्णय, अभिलेख वा प्रशासनिक उपयोग लेल विस्तृत तथ्य प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय ३३७ — प्रतिवेदनक संरचना

मूल पाठक अंश — २.प्रेषक/प्राप्तकर्ता — जँ औपचारिक स्वरूप अपेक्षित हो। सिफारिशकेँ तथ्यसँ अलग राखू। ‘कक्षमे २५ कुर्सी अछि’ तथ्य; ‘१० कुर्सी आओर किनल जाए’ सिफारिश।

अध्याय ३३८ — नमूना लघु प्रतिवेदन

मूल पाठक अंश — शीर्षक: विद्यालय पुस्तकालयक उपयोगक एक-दिवसीय अवलोकन उद्देश्य: मध्याह्न अवकाशमे पुस्तकालयक उपयोगक सामान्य स्थिति देखब। अवधि: एक विद्यालय-दिवस, मध्याह्न अवकाशक समय।

अध्याय ३३९ — औपचारिक पत्र

मूल पाठक अंश — औपचारिक पत्रक लक्ष्य स्पष्ट सम्पर्क अछि। अनावश्यक प्रशंसा, भावुक विस्तार वा विषयसँ असम्बद्ध परिचय नहि जोड़ू। ६. मुख्य निवेदन: कारण + आवश्यक तथ्य + अपेक्षित कार्यवाई। डिजिटल/विद्यालयी अभ्यासमे टेगाना-स्वरूप संस्था अनुसार बदलि सकैत अछि;

अध्याय ३४० — नमूना औपचारिक पत्र

मूल पाठक अंश — सविनय निवेदन अछि जे परीक्षा-पूर्व सप्ताहमे अनेक विद्यार्थी विद्यालयक बाद पुस्तकालयमे अध्ययन करय चाहैत छथि। वर्तमान समय समाप्त भेला पर सन्दर्भ-पुस्तकक उपयोग लेल पर्याप्त समय नहि भेटैत अछि।

अध्याय ३४१ — आवेदन

मूल पाठक अंश — आवेदन औपचारिक पत्रक विशेष रूप अछि जाहिमे लेखक स्पष्ट रूपेँ अनुमति, अवकाश, प्रमाणपत्र, सुधार वा प्रशासनिक कार्यवाई मांगैत अछि। ‘कृपया उचित कार्यवाई करू’ मात्र लिखि पाठकपर समस्या बुझबाक भार नहि छोड़ू। मांग स्पष्ट लिखू।

अध्याय ३४२ — नमूना अवकाश-आवेदन

मूल पाठक अंश — सविनय निवेदन अछि जे पारिवारिक आवश्यकताक कारण हम १८ आ १९ अगस्त विद्यालयमे उपस्थित नहि भऽ सकब। अतः उक्त दू दिनक अवकाश स्वीकृत करबाक कृपा कएल जाए। छुटल पाठ हम घुरलाक बाद पूरा करब।

अध्याय ३४३ — व्यक्तिगत पत्र

मूल पाठक अंश — व्यक्तिगत पत्रमे स्वर आत्मीय हो सकैत अछि, मुदा रचना स्पष्ट रहय। आरम्भिक अभिवादन, मुख्य समाचार/उद्देश्य, प्रतिक्रिया वा प्रश्न, आ स्वाभाविक समापन उपयोगी अछि। बहुत औपचारिक संस्कृतनिष्ठ वाक्य मित्र-पत्रकेँ कृत्रिम बना सकैत अछि;

अध्याय ३४४ — ई-पत्र

मूल पाठक अंश — ई-पत्र पत्राचारक डिजिटल रूप अछि। औपचारिक ई-पत्रमे विषय-पाँति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि; पाठक inbox मे पहिने विषय देखैत अछि। “ई-पत्र” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ३४५ — नमूना औपचारिक ई-पत्र

मूल पाठक अंश — काल्हिक चर्चाक सन्दर्भमे बैठकक समयक पुष्टि लेल ई-पत्र पठा रहल छी। हमर नोट अनुसार बैठक २० अगस्त साँझ ४ बजे निर्धारित अछि। जँ समयमे कोनो परिवर्तन भेल हो तँ कृपया सूचित करू।

अध्याय ३४६ — सूचना

मूल पाठक अंश — सूचना बहुत छोट सार्वजनिक लेखन अछि। पाठक तुरन्त बुझि सकए—की, ककरा लेल, कहिया, कतय, आ की करबाक अछि। विद्यालय पुस्तकालयसँ निर्गत सभ पुस्तक २५ अगस्त धरि लौटा दिअ।

अध्याय ३४७ — घोषणा, सूचना आ विज्ञप्तिक भेद

मूल पाठक अंश — तीनू शब्दक संस्थागत प्रयोग बदलि सकैत अछि; दस्तावेजक label भन्दा अधिक महत्त्व ई अछि जे स्रोत, उद्देश्य आ अपेक्षित पाठक स्पष्ट हो। घोषणा, सूचना आ विज्ञप्तिक भेद केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ३४८ — सार-लेखन: मूल पाठक आत्मा सुरक्षित राखू

मूल पाठक अंश — सार मूल पाठक मुख्य विचार, आवश्यक तथ्य आ तार्किक क्रमकेँ छोट रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। सार लेखकक टिप्पणी, आलोचना वा कल्पना नहि। ४. उदाहरण, पुनरावृत्ति, अलंकार आ गौण विवरण अलग करू। ७. सार पढ़ि जाँचू—कोनो नब तथ्य जुड़ल तँ नहि?

अध्याय ३४९ — सारमे की हटायब?

मूल पाठक अंश — ‘छोट करब’ लेल एहन सीमा हटाउ नहि जे मूल दावाकेँ अधिक व्यापक बना दे। उदाहरणतः ‘अधिकांश विद्यार्थी’केँ ‘सभ विद्यार्थी’ लिखब सार नहि, तथ्य-विकृति अछि।

अध्याय ३५० — सार बनाम संक्षेपण

मूल पाठक अंश — दैनिक प्रयोगमे ‘सार’ आ ‘संक्षेपण’ एक-दोसरक निकट अछि, मुदा शिक्षणमे उपयोगी भेद ई राखि सकैत छी: जँ प्रश्न/संस्था विशेष

नियम दे—जेना एक-तिहाइ शब्द—तँ ओ निर्देश प्रधान अछि। बिना निर्देशक यान्त्रिक अनुपात नहि मानू।

अध्याय ३५१ — संक्षेपणक व्यावहारिक विधि

मूल पाठक अंश — ४. सूचीकेँ सामान्य वर्गमे बदलू—जँ अर्थ सुरक्षित रहय। ६. प्रत्यक्ष उद्धरणकेँ परोक्ष सारमे बदलू—जँ मूल शब्द आवश्यक नहि। ७. अन्तिम पाठक शब्दसंख्या आ तथ्य फेर जाँचू। संक्षेपणक व्यावहारिक विधि केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ३५२ — नमूना सार-अभ्यास

मूल पाठक अंश — विद्यालयक पुस्तकालयमे पाठ्यपुस्तकक अतिरिक्त कथा, विज्ञान, इतिहास आ जीवनीक पोथी अछि। किछु विद्यार्थी केवल परीक्षा-सम्बन्धी पोथी लैत छथि, मुदा किछु विद्यार्थी नियमित रूपेँ कथा आ जीवनी सेहो पढ़ैत छथि।

अध्याय ३५३ — शीर्षक देब

मूल पाठक अंश — सार, समाचार, प्रतिवेदन वा अनुच्छेदक शीर्षक मूल विषय चिन्हाबय, निष्कर्षक अनावश्यक प्रचार नहि करय। शीर्षक देब पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक...

अध्याय ३५४ — तथ्य-सुरक्षा आ नकलसँ बचाव

मूल पाठक अंश — रचना-कौशलमे भाषा बदलैत समय तथ्य नहि बदलू। विशेषतः समाचार, प्रतिवेदन, आवेदन आ सारमे लेखकक कल्पना जोड़ब गंभीर दोष अछि। अज्ञात कारणकेँ 'किएक तँ' लगा निश्चित नहि बनाउ। उद्धरण ज्यों-का-त्यों नहि अछि, तँ उद्धरणचिह्न हटाइ परोक्ष कथन बनाउ।

अध्याय ३५५ — रचना जमा करबाक पहिने अन्तिम जाँच

मूल पाठक अंश — ४. तिथि, नाम, संख्या आ तथ्य सत्य/प्रदत्त सामग्रीसँ मेल खाइत अछि? ५. वाक्य छोट, स्वाभाविक आ मैथिली पदक्रमानुसार अछि? ९.

विरामचिह्न आ अनुच्छेद-विभाजन उचित अछि? ११. मूल सामग्रीसँ बाहर कोनो दावा जुडल अछि?

अध्याय ३५६ — निबन्ध: केन्द्रित आ क्रमबद्ध विवेचन

मूल पाठक अंश — निबन्ध कोनो विषयपर क्रमबद्ध विचार-विस्तार अछि। केवल विषयसँ सम्बन्धित अनेक बात जोड़ि देब निबन्ध नहि; लेखकक एकटा स्पष्ट केन्द्र होएबाक चाही।

अध्याय ३५७ — निबन्धक प्रमुख प्रकार

मूल पाठक अंश — एक निबन्धमे एकसँ अधिक विधि आबि सकैत अछि; मुदा प्रधान उद्देश्य स्पष्ट रहबाक चाही। निबन्धक प्रमुख प्रकार पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर...

अध्याय ३५८ — विषय सीमित करब

मूल पाठक अंश — सीमित विषय तथ्यहीन सामान्य कथन घटबैत अछि आ अनुच्छेदक क्रम ठोस बनबैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “विषय सीमित करब” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ३५९ — मुख्य प्रतिपाद्य

मूल पाठक अंश — मुख्य प्रतिपाद्य ओ स्पष्ट विचार अछि जे पूरा निबन्धक दिशा निर्धारित करैत अछि। ई केवल विषयक नाम नहि, विषयक विषयमे लेखकक केन्द्रित कथन अछि। मुख्य प्रतिपाद्य केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ३६० — भूमिका, मुख्य भाग आ निष्कर्ष

मूल पाठक अंश — भूमिका विषय, प्रसङ्ग आ मुख्य प्रतिपाद्य धरि लऽ जाए। मुख्य भागक प्रत्येक अनुच्छेद एक मुख्य कार्य करए। निष्कर्ष नब प्रमाण नहि आनय; मुख्य विचारक अर्थ समेटय।

अध्याय ३६१ — तर्कपूर्ण लेख

मूल पाठक अंश — तर्कपूर्ण लेखमे मत मात्र पर्याप्त नहि; मतक कारण, आधार, सीमा आ विरोधी दृष्टिक उत्तर आवश्यक अछि। ४. सीमा/उत्तर — कोन परिस्थिति मे दावा सीमित अछि वा विरोधी पक्षक उचित बात की अछि? तर्कपूर्ण लेख पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी...

अध्याय ३६२ — दावा, कारण आ प्रमाण

मूल पाठक अंश — “सभ जानैत अछि” वा “शोध साबित कएलक” जकाँ वाक्य बिना स्रोतक प्रमाण नहि बनैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “दावा, कारण आ प्रमाण” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ३६३ — प्रमाणक स्तर

मूल पाठक अंश — प्रमाणक स्तर केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू। एहि ढंगसँ संकल्पना स्मरणक वस्तु नहि रहि विश्लेषणक औजार बनैत अछि।

अध्याय ३६४ — प्रतिपक्ष आ प्रत्युत्तर

मूल पाठक अंश — सशक्त तर्क विरोधी मतकेँ विकृत नहि करैत। पहिने उचित रूपमे प्रतिपक्ष प्रस्तुत करू, तकर बाद उत्तर दिअ। नमूना: “किछु शिक्षक कहि सकैत छथि जे स्वतंत्र पठन लेल अलग समय देलासँ पाठ्यक्रमक समय घटत। ई चिंता उचित अछि।

अध्याय ३६५ — सामान्य तर्क-दोष

मूल पाठक अंश — सामान्य तर्क-दोष पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक दक्षता नहि बनैत अछि।

अध्याय ३६६ — आलोचनात्मक अनुच्छेद

मूल पाठक अंश — आलोचनात्मक अनुच्छेद दोष खोजव मात्र नहि। ओ विचार, रचना, नीति वा तर्कक गुण, सीमा, आधार आ प्रभावक विवेचन करैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “आलोचनात्मक अनुच्छेद” अछि।

अध्याय ३६७ — सारांश आ आलोचनामे अन्तर

मूल पाठक अंश — सारांश आ आलोचनामे अन्तर केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ३६८ — समीक्षा

मूल पाठक अंश — पुस्तक, नाटक, शोधग्रन्थ, फिल्म, प्रदर्शनी वा अन्य कृतिक समीक्षा तथ्यात्मक परिचय, विश्लेषण आ मूल्यांकनक संयोजन अछि। कृतिक तथ्य, पात्र, अध्याय वा उद्धरण गढ़ू नहि। सामग्री उपलब्ध नहि हो तँ अनुमानित समीक्षा उचित नहि।

अध्याय ३६९ — पुस्तक-समीक्षाक ढाँचा

मूल पाठक अंश — पुस्तक-समीक्षाक ढाँचा पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक दक्षता नहि...

अध्याय ३७० — भाषण: लिखित पाठ जे सुनल जाएत

मूल पाठक अंश — भाषण कागजपर लिखल होइत अछि, मुदा श्रोताक कान लेल बनैत अछि। वाक्य निबन्धसँ छोट, संकेत स्पष्ट आ पुनरावृत्ति योजनाबद्ध हो सकैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “भाषण: लिखित पाठ जे सुनल जाएत” अछि।

अध्याय ३७१ — भाषणक आरम्भ आ श्रोता-संवाद

मूल पाठक अंश — “पहिल बात...”, “दोसर बात...”, “आब प्रश्न उठैत अछि...” जकाँ मौखिक संकेत उपयोगी। मनगढन्त उद्धरण, झूठ आँकड़ा वा अतिनाटकीय

डर भाषणकें अविश्वसनीय बनवैत अछि। भाषणक आरम्भ आ श्रोता-संवाद कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ३७२ — सम्पादकीय

मूल पाठक अंश — सम्पादकीय सार्वजनिक विषयपर संस्थागत वा सम्पादकीय दृष्टिकोणक तर्कपूर्ण लेख अछि। समाचार तथ्य बतवैत अछि; सम्पादकीय तथ्यक आधारपर दृष्टि, प्राथमिकता वा नीति सम्बन्धी तर्क प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय ३७३ — सम्पादकीयक ढाँचा

मूल पाठक अंश — सम्पादकीय मत रखैत अछि, मुदा तथ्य मनमाना नहि बदलैत। सम्पादकीयक ढाँचा पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम...

अध्याय ३७४ — प्रस्ताव

मूल पाठक अंश — प्रस्ताव भविष्यक कोनो कार्य, परियोजना वा सुधारक औपचारिक योजना अछि। पाठककें समस्या, उद्देश्य, गतिविधि, जिम्मेवारी आ सफलता जाँचबाक विधि स्पष्ट बुझाई। एहि अध्यायक केन्द्र “प्रस्ताव” अछि।

अध्याय ३७५ — उद्देश्य आ गतिविधिक भेद

मूल पाठक अंश — उद्देश्य आ गतिविधिक भेद कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकें एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ३७६ — प्रस्तावक नमूना रूपरेखा

मूल पाठक अंश — शीर्षक: विद्यालयमे साप्ताहिक स्वतंत्र पठन-समय समस्या: पुस्तकालय उपलब्ध रहितो नियमित स्वतंत्र पठनक निश्चित समय नहि। उद्देश्य: विद्यार्थीकें पाठ्यक्रम-बाह्य पठनक नियमित अवसर देब। गतिविधि: सप्ताहमे एक निर्धारित अवधि;

अध्याय ३७७ — कार्यवृत्त

मूल पाठक अंश — कार्यवृत्त बैठकमे की निर्णय भेल, कोन मुख्य विषयपर चर्चा भेल आ आगाँ कोन कार्य ककर जिम्मेमे देल गेल—ओकर संक्षिप्त आधिकारिक अभिलेख अछि। ई शब्दशः संवाद नहि। २. अध्यक्ष/उपस्थित सदस्य—संस्था अनुसार।

अध्याय ३७८ — कार्यवृत्तक भाषा

मूल पाठक अंश — “सभ सहमत छल” तखने लिखू जखन वास्तवमे एहन निर्णय दर्ज अछि। ककरा की काज देल गेल, स्पष्ट नाम/पद लिखू। नमूना: “निर्णय भेल जे पुस्तक-सूचीक प्रारूप २५ अगस्त धरि तैयार कएल जाए। ई कार्य समिति संयोजककें देल गेल।”

अध्याय ३७९ — जीवन-परिचय

मूल पाठक अंश — जीवन-परिचय कोनो व्यक्तिक जीवन, कार्य आ योगदानक तथ्यपरक संक्षिप्त प्रस्तुति अछि। प्रशस्ति-पत्र आ जीवन-परिचय एक्के नहि। २. जन्म/स्थान—जँ सत्यापित आ प्रासंगिक। जीवन-परिचय कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ३८० — जीवन-परिचयमे तथ्य आ मूल्यांकन

मूल पाठक अंश — “जीवन-परिचयमे तथ्य आ मूल्यांकन” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ३८१ — जीवन-वृत्त

मूल पाठक अंश — जीवन-वृत्त रोजगार, शैक्षिक आवेदन वा व्यावसायिक परिचय लेल तथ्यक सुव्यवस्थित सूची/दस्तावेज अछि। कथा नहि, शीघ्र पढल जा सकय एहन संरचना महत्वपूर्ण अछि। झूठ कौशल, बढ़ाओल पदनाम वा अप्रमाणित उपलब्धि नहि लिखू।

अध्याय ३८२ — छोटे व्यावसायिक परिचय

मूल पाठक अंश — कार्यक्रम, पुस्तक, वेबसाइट वा सम्मेलन लेल ५०-१०० शब्दक छोटे परिचय जीवन-वृत्तसँ अलग होइत अछि। ओ भूमिका-सापेक्ष तीन-चारि मुख्य तथ्य चुनैत अछि। जे तथ्य उपलब्ध नहि, रिक्त छोड़ू वा सत्यापित करू; परिचय पूर्ण देखेबाक लेल उपलब्धि गढ़ू नहि।

अध्याय ३८३ — अनुवाद-आधारित पुनर्लेखन

मूल पाठक अंश — अनुवाद-आधारित पुनर्लेखनमे मूल भाषाक अर्थ सुरक्षित राखि लक्ष्य भाषामे स्वाभाविक रचना बनाओल जाइत अछि। शब्द-दर-शब्द क्रम बचायब मुख्य उद्देश्य नहि; तथ्य, भाव, सम्बन्ध, शैली आ तकनीकी अर्थ सुरक्षित राखब मुख्य उद्देश्य अछि।

अध्याय ३८४ — शाब्दिक अनुवादक सामान्य दोष

मूल पाठक अंश — “शाब्दिक अनुवादक सामान्य दोष” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ३८५ — पुनर्लेखन आ भाव-सुरक्षा

मूल पाठक अंश — मूल लेखक निश्चित नहि छल तँ पुनर्लेखनमे निश्चितता नहि बढ़ाउ। सम्भावना, सीमा, शंका वा सावधानी-सूचक अर्थ सुरक्षित राखू। पुनर्लेखन आ भाव-सुरक्षा पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर...

अध्याय ३८६ — औपचारिक शैक्षिक लेखन

मूल पाठक अंश — शैक्षिक लेखनक उद्देश्य विषयक व्यवस्थित, प्रमाणाधारित आ जाँच योग्य विवेचन अछि। भाषा स्पष्ट हो, दावाक सीमा ज्ञात हो, स्रोत चिन्हित हो, आ तथ्य/मत/व्याख्या अलग बुझाइ। एहि अध्यायक केन्द्र “औपचारिक शैक्षिक लेखन” अछि।

अध्याय ३८७ — शैक्षिक परिचय

मूल पाठक अंश — ५. आवश्यक हो तँ पद्धति/सामग्रीक संकेत। शैक्षिक परिचय केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ३८८ — परिभाषा आ पारिभाषिक सीमा

मूल पाठक अंश — मुख्य शब्दक अर्थ स्पष्ट नहि रहला पर पूरा तर्क अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। एक बेर परिभाषा देलाक बाद अर्थ बीचमे मनमाना नहि बदलू। नमूना: “एहि अध्यायमे ‘स्वतंत्र पठन’सँ आशय परीक्षा-निर्देशित पाठ्यसामग्रीक अतिरिक्त स्वेच्छासँ चुनल पठनसामग्री अछि।”

अध्याय ३८९ — स्रोतक उपयोग

मूल पाठक अंश — २. मूल स्रोत उपलब्ध हो तँ द्वितीयक उद्धरणपर निर्भरता घटाउ। ४. पृष्ठ/अध्याय/आँकड़ा जँ आवश्यक हो, ठीक नोट करू। ५. स्रोतक मत आ अपन निष्कर्ष अलग राखू।

अध्याय ३९० — उद्धरण, पराभाषा आ सार

मूल पाठक अंश — केवल शब्दक क्रम बदलि मूल वाक्यक अधिकांश शब्द राखनाइ सच्चा पराभाषा नहि। एहि अध्यायक केन्द्र “उद्धरण, पराभाषा आ सार” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ३९१ — स्रोत-श्रेय आ बौद्धिक ईमानदारी

मूल पाठक अंश — दोसर लेखकक शब्द, विचार, आँकड़ा, अनुवाद वा विशेष विश्लेषण अपन मूल रचना जकाँ प्रस्तुत नहि करू। जँ स्रोत उपयोग कएल अछि, उपयुक्त श्रेय दिअ। सामान्य ज्ञान लेल प्रत्येक वाक्य सन्दर्भित करब आवश्यक नहि।

अध्याय ३९२ — शैक्षिक अनुच्छेदः दावा-आधार-विश्लेषण

मूल पाठक अंश — “शैक्षिक अनुच्छेदः दावा-आधार-विश्लेषण” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ३९३ — सावधानी-सूचक शैक्षिक भाषा

मूल पाठक अंश — प्रमाण सीमित हो तँ दावा सीमित लिखू। “सदा”, “सभ”, “निश्चित रूपँ”क बदला आवश्यकता अनुसार “बहुधा”, “एहि नमूनामे”, “ई संकेत दैत अछि” जकाँ रूप उपयोगी अछि।

अध्याय ३९४ — शैक्षिक निष्कर्ष

मूल पाठक अंश — निष्कर्ष प्रमाणसँ बेसी व्यापक नहि बनाउ। आवश्यक हो तँ सीमा आ अगिला प्रश्न स्पष्ट करू। एहि अध्यायक केन्द्र “शैक्षिक निष्कर्ष” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ३९५ — संक्षिप्त सार

मूल पाठक अंश — संक्षिप्त सार केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ३९६ — औपचारिक लेखनक शैली

मूल पाठक अंश — लम्बा वाक्य तखने जखन सम्बन्ध स्पष्ट। प्रथम पुरुष पूर्णतः निषिद्ध नहि; विधा/संस्था अनुसार नीति देखू। अनुवादित बोझिल ढाँचासँ बचि सीधा मैथिली लिखू।

अध्याय ३९७ — उन्नत रचनाक सम्पादकीय जाँच

मूल पाठक अंश — २. मुख्य प्रतिपाद्य/उद्देश्य स्पष्ट अछि? ५. विरोधी पक्ष न्यायपूर्ण रूपँ प्रस्तुत अछि? ९. अनावश्यक प्रशंसात्मक/आक्रामक विशेषण हटाओल गेल? १०. निष्कर्ष प्रमाणसँ बेसी व्यापक तँ नहि?

अध्याय ३९८ — शैली की अच्छि?

मूल पाठक अंश — एक्के अर्थ अनेक ढङ्गसँ कहल जा सकैत अछि। कोन रूप चुनल जाए, ई शैलीक प्रश्न अछि। तीनू रूपक व्याकरण सही भऽ सकैत अछि; प्रसङ्गक अनुकूलता ओकर शैलीगत शुद्धता तय करैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “शैली की अच्छि?” अछि।

अध्याय ३९९ — रजिस्टर: भाषा-प्रयोगक स्तर

मूल पाठक अंश — रजिस्टरसँ आशय विशेष सामाजिक/कार्यगत परिस्थिति लेल चुनल भाषा-रूप अछि। रजिस्टर: भाषा-प्रयोगक स्तर केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ४०० — औपचारिक आ अनौपचारिक मैथिली

मूल पाठक अंश — औपचारिकताक अर्थ कठिन तत्सम शब्द नहि। औपचारिक लेखनमे मुख्यतः स्पष्टता, विनम्रता, पूरा सन्दर्भ आ स्थिर शब्दावली बढ़ैत अछि। अत्यधिक औपचारिकता सेहो दोष बनि सकैत अछि। साधारण अनुरोधकेँ प्रशासनिक आदेश-जकाँ नहि लिखू।

अध्याय ४०१ — सामाजिक दूरी आ सम्बोधन

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे सर्वनाम आ क्रियारूप सामाजिक सम्बन्ध, आदर आ निकटता प्रकट करैत अछि। शैली बदलैत समय केवल संज्ञा नहि, पूरा वाक्यक आदर-सामञ्जस्य बदलू। तों/तौ प्रकारक घनिष्ठ रूप क्षेत्र आ सम्बन्ध अनुसार; औपचारिक लेखनमे सामान्यतः नहि।

अध्याय ४०२ — शब्द-सटीकता

मूल पाठक अंश — सटीक शब्द ओ अछि जे आवश्यक अर्थ दे, अनावश्यक अतिरिक्त दावा नहि जोड़ए। सटीकता लेल संख्या गढ़ू नहि। तथ्य नहि हो तँ दावा सीमित करू। एहि अध्यायक केन्द्र “शब्द-सटीकता” अछि।

अध्याय ४०३ — पर्याय सदिखन समान नहि

मूल पाठक अंश — शब्दकोशमे दू शब्द नजदीकी अर्थवला हो सकैत अछि, मुदा रजिस्टर, भाव, सहप्रयोग आ प्रसङ्ग अलग हो सकैत अछि। एक पारिभाषिक

शब्दकें शैलीगत विविधता लेल बारम्बार पर्यायसँ नहि बदलू। कथा मे पर्याय भाव बदलि सकैत अछि;

अध्याय ४०४ — ठोस आ अमूर्त भाषा

मूल पाठक अंश — अमूर्त शब्द विचार समेटैत अछि; ठोस शब्द पाठककें दृश्य/क्रिया देखबैत अछि। नीक गद्य दुनूक संतुलन राखैत अछि। “ठोस आ अमूर्त भाषा” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ४०५ — अनावश्यक शब्दभार

मूल पाठक अंश — दीर्घ वाक्य अपने सँ दोष नहि, मुदा एकहि अर्थ अनेक कमजोर पदसमूहमे दोहराएब गद्यकें बोझिल बनबैत अछि। अनावश्यक शब्दभार पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू...

अध्याय ४०६ — शब्दगत अस्पष्टता

मूल पाठक अंश — एक शब्दक अनेक सम्भावित अर्थ होएत आ प्रसङ्ग पर्याप्त नहि हो तँ अस्पष्टता बनैत अछि। ४. जानि-बुझि साहित्यिक बहुअर्थता हो तँ ओकरा बचायल जा सकैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “शब्दगत अस्पष्टता” अछि।

अध्याय ४०७ — वाक्यगत अस्पष्टता

मूल पाठक अंश — शब्द सही रहितो पदसमूह कोन शब्दसँ जुडल अछि, ई अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। वाक्यगत अस्पष्टता कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ४०८ — सूचना-केंद्र आ शैली

मूल पाठक अंश — वाक्यक कोन भाग पहिने, कोन भाग बादमे, आ कोन पदपर बल देल जाए—एहि सँ सूचना-केंद्र बदलैत अछि। चिह्नित पदक्रम प्रयोग करैत समय प्रसङ्ग आवश्यक अछि; केवल “जोर” लेल मनमाना उलटाव नहि।

अध्याय ४०९ — वाक्य-लय

मूल पाठक अंश — गद्यक लय वाक्यक लम्बाइ, विराम, पुनरावृत्ति आ ध्वनिक क्रमसँ बनैत अछि। पाठ्यपुस्तकमे लयक लक्ष्य मुख्यतः पठनीयता; साहित्यमे भावात्मक प्रभाव सेहो। लगातार दस दीर्घ वाक्य पाठक थकबैत अछि। लगातार बहुत छोट वाक्य गद्यकें खण्डित बना सकैत अछि।

अध्याय ४१० — वाक्य-लम्बाइमे विविधता

मूल पाठक अंश — एकहि अनुच्छेदमे वाक्य-लम्बाइ उद्देश्य अनुसार बदलू।
नमूना: “दिन भरि वर्षा भेल। सड़कपर पानि भरि गेलाक कारण विद्यालयक बस देरिसँ पहुँचल, मुदा सभ विद्यार्थी सुरक्षित घर घुरलाह। समस्या गंभीर छल। अगिला दिन मार्ग बदलल गेल।”

अध्याय ४११ — उद्देश्यपूर्ण पुनरुक्ति

मूल पाठक अंश — इकाई ११मे शब्द-रचना रूपेँ पुनरुक्ति पढ़ल गेल। शैलीमे सेहो जानि-बुझि दोहराव बल, लय वा संरचनात्मक समानता दऽ सकैत अछि।
“एक-एक विद्यार्थी” — वितरणात्मक व्याकरणिक अर्थ। भाषणमे मुख्य संदेशक सीमित पुनरावृत्ति — स्मरण/बल।

अध्याय ४१२ — समानान्तरता

मूल पाठक अंश — एकहि प्रकारक विचारकें समान व्याकरणिक ढाँचा देलासँ लय आ स्पष्टता बढ़ैत अछि। “समानान्तरता” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ४१३ — बल देबाक व्याकरणिक साधन

मूल पाठक अंश — जोर केवल बड़े अक्षर, अनेक विस्मयचिह्न वा मोट अक्षरसँ नहि। मैथिलीमे पदक्रम, तऽ, सेहो, मात्र, केवल, पुनरुक्ति आ छोट स्वतंत्र वाक्य शैलीगत बल दऽ सकैत अछि। एकहि वाक्यमे अनेक बलसूचक पद भरि देब गद्यकें कृत्रिम बना सकैत अछि।

अध्याय ४१४ — मुहावरा: रूढ अर्थवला पदसमूह

मूल पाठक अंश — मुहावरा एहन स्थिर वा अर्ध-स्थिर पदसमूह हो सकैत अछि जकर वास्तविक प्रयोगक अर्थ केवल प्रत्येक शब्दक शाब्दिक अर्थ जोड़ि पूर्ण रूपेँ नहि बुझल जाए।

अध्याय ४१५ — शाब्दिक अर्थ बनाम मुहावरेदार अर्थ

मूल पाठक अंश — एक पदसमूह कखनो शाब्दिक, कखनो रूढ अर्थमे आवि सकैत अछि। पाठक प्रसङ्गसँ अर्थ तय करैत अछि। शाब्दिक अर्थ बनाम मुहावरेदार अर्थ केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ४१६ — लोकोक्ति

मूल पाठक अंश — लोकोक्ति सामान्यतः पूर्ण वा लगभग पूर्ण कथन-जकाँ रूपमे सामुदायिक अनुभव, व्यंग्य, व्यवहारिक शिक्षा वा सांस्कृतिक दृष्टि व्यक्त करैत अछि। मुहावरा प्रायः वाक्यक भीतर पदसमूह जकाँ काज करैत अछि;

अध्याय ४१७ — लोकोक्तिक शैलीगत प्रयोग

मूल पाठक अंश — भाषण/कथा/सम्पादकीयमे सांस्कृतिक संक्षिप्तता दऽ सकैत अछि। अपरिचित पाठक लेल अर्थ प्रसङ्गसँ स्पष्ट करू। लोकोक्तिक शब्द मनमाना “आधुनिक” बनायबासँ ओकर पहिचान टूटि सकैत अछि।

अध्याय ४१८ — उपमा

मूल पाठक अंश — उपमा दू वस्तु/अनुभवक कोनो विशेष समानता स्पष्ट करैत अछि। “जकाँ/सन/जेना” प्रकारक तुलना-सूचक रचना उपयोगी हो सकैत अछि। घिसल-पिटल तुलना स्वतः सुन्दर नहि; तुलना कोन गुण देखबैत अछि, ई स्पष्ट रहय। एहि अध्यायक केन्द्र “उपमा” अछि।

अध्याय ४१९ — रूपक

मूल पाठक अंश — रूपकमे तुलना प्रत्यक्ष “जकाँ” बिना पहचानक रूपमे प्रस्तुत होइत अछि। साहित्यिक रूपक अर्थक नब सम्बन्ध खोलि सकैत अछि; तथ्यपरक लेखमे रूपक सीमा सहित उपयोग करू। नमूना: “स्मृति ओहि घरक बन्द कोठरी छल।

अध्याय ४२० — मानवीकरण

मूल पाठक अंश — जड़/अमानवीय वस्तुकेँ मानवीय क्रिया वा भाव देब साहित्यिक शैलीमे प्रभावकारी हो सकैत अछि। नमूना: “भोरक हवा खिड़कीपर दस्तक देलक।” ई साहित्यिक प्रस्तुति अछि, मौसम-विज्ञानक प्रतिवेदन नहि। विधा बदलला पर एहन अलंकार हटाबय पड़ि सकैत अछि।

अध्याय ४२१ — अतिशयोक्ति आ मितोक्ति

मूल पाठक अंश — अतिशयोक्ति भाव बढ़ा कऽ प्रस्तुत करैत अछि; मितोक्ति भाव जानि-बुझि कम शब्दमे कहि प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। साहित्य/बोलचालमे ई शैलीगत साधन हो सकैत अछि।

अध्याय ४२२ — व्यंग्य आ विडम्बना

मूल पाठक अंश — व्यंग्य/विडम्बनामे प्रकट वाक्य आ अभिप्रेत मूल्यांकनक बीच दूरी रहि सकैत अछि। ई साहित्य, स्तम्भ वा संवादमे शक्तिशाली साधन अछि, मुदा प्रसङ्ग बिना गलत बुझल जा सकैत अछि। तथ्यात्मक समाचारमे व्यंग्य सामान्यतः नहि।

अध्याय ४२३ — हास्य

मूल पाठक अंश — हास्य भाषा, परिस्थिति, विरोधाभास, समय-चयन आ चरित्रसँ उत्पन्न भऽ सकैत अछि। नीक हास्यक लेल सदिखन कोनो समूह, देह, जाति, लिंग, रोग वा दुर्बलताकेँ लक्ष्य बनायब आवश्यक नहि।

अध्याय ४२४ — विनम्रता आ प्रत्यक्षता

मूल पाठक अंश — विनम्रता अस्पष्टता नहि। औपचारिक अनुरोध स्पष्ट रहैत अछि, मुदा आदेश-जकाँ कठोर नहि। “विनम्रता आ प्रत्यक्षता” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ४२५ — असहमति व्यक्त करब

मूल पाठक अंश — शैक्षिक/व्यावसायिक लेखनमे असहमति व्यक्तिक मूल्य नहि, दावाक आधारपर केन्द्रित हो। असहमति व्यक्त करब पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर...

अध्याय ४२६ — अकादमिक शैली

मूल पाठक अंश — अकादमिक शैलीक गुण कठिन शब्द नहि, बल्कि परिभाषित शब्द, प्रमाण, स्रोत, सीमा, तर्कक स्पष्ट क्रम आ जाँच योग्य दावा अछि। “सिद्ध” शब्द तखने जखन वास्तवमे प्रमाणक शक्ति एहन हो।

अध्याय ४२७ — साहित्यिक शैली

मूल पाठक अंश — साहित्यिक शैलीमे बहुअर्थता, बिम्ब, ध्वनि, लय, दृष्टिकोण आ चरित्रक आवाज अधिक स्वतंत्रता पबैत अछि। मुदा “साहित्यिक”क अर्थ व्याकरणहीन नहि। लेखक नियम जानि उद्देश्यपूर्ण विचलन कऽ सकैत अछि। कथावाचकक स्वर स्थिर वा उद्देश्यपूर्ण बदलल हो।

अध्याय ४२८ — प्रशासनिक शैली

मूल पाठक अंश — प्रशासनिक गद्यक लक्ष्य कार्रवाई योग्य स्पष्टता अछि। “आवश्यक कार्रवाई शीघ्र करू”क बदला सम्भव हो तँ कार्रवाई आ तिथि स्पष्ट करू। “प्रशासनिक शैली” विषयकै नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए।

अध्याय ४२९ — समाचारिक शैली

मूल पाठक अंश — समाचारिक शैली तथ्य, स्रोत आ प्राथमिकताक क्रमपर निर्भर अछि। साहित्यिक बिम्ब वा सम्पादकीय विशेषण समाचारकै पक्षपाती बना सकैत अछि।

अध्याय ४३० — भाषा-मिश्रण आ रजिस्टर

मूल पाठक अंश — मैथिली बोलचालमे हिन्दी/अंग्रेजी सम्पर्कक शब्द स्वाभाविक रूपेँ आबि सकैत अछि। शैलीगत प्रश्न ई अछि—कतेक उधार शब्द

आवश्यक अछि, आ की उपलब्ध सहज मैथिली रूप अधिक स्पष्ट अछि? एके वस्तु लेल रिपोर्ट/प्रतिवेदन/data/आँकड़ा जकाँ रूप अनियमित ढङ्गसँ...

अध्याय ४३१ — लेखक आवाज

मूल पाठक अंश — “आवाज”सँ आशय लेखनमे बनल व्यक्तित्व—कतेक प्रत्यक्ष, विनम्र, विश्लेषणात्मक, आत्मीय, व्यंग्यात्मक वा तटस्थ। एक शोध-लेखक अपन निष्कर्ष स्पष्ट कहि सकैत अछि बिना अहंकारी भेल; एक कथावाचक भावपूर्ण भऽ सकैत अछि बिना प्रत्येक पाँतिमे विशेषण भरने।

अध्याय ४३२ — स्वर (tone) बदलबाक जाँच

मूल पाठक अंश — ६. शब्दावली दैनिक, औपचारिक कि तकनीकी? एहि सात प्रश्नक उत्तर बदलिते एके सामग्रीक शैली बदल्लिए सकैत अछि। “स्वर (tone) बदलबाक जाँच” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ४३३ — शैली-परिवर्तन: विधि

मूल पाठक अंश — एक शैलीसँ दोसर शैलीमे बदलैत समय तथ्य सुरक्षित राखू, मुदा शब्द, वाक्य-विन्यास, सम्बोधन आ विवरणक मात्रा बदलू। शैली-परिवर्तन: विधि पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय...

अध्याय ४३४ — एके तथ्य, चारि शैली

मूल पाठक अंश — मूल तथ्य: विद्यालयक पुस्तकालय २५ अगस्तसँ साँझ पाँच बजे धरि खुलत। अन्तिम पाँतिमे “लाइब्रेरी” अनौपचारिक उधार शब्दक नमूना अछि; औपचारिक पाठमे “पुस्तकालय” स्थिर राखल जा सकैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “एके तथ्य, चारि शैली” अछि।

अध्याय ४३५ — शैलीगत सम्पादनक दस प्रश्न

मूल पाठक अंश — ८. मुहावरा/लोकोक्ति स्थापित आ प्रसङ्गानुकूल अछि? ९. अलंकार अर्थ स्पष्टता बढ़बैत अछि कि घटबैत? १०. पूरा अंशक स्वर/रजिस्टर एकरूप अछि?

अध्याय ४३६ — अर्थ-विज्ञान: शब्दसँ वाक्य धरि

मूल पाठक अंश — अर्थ-विज्ञान भाषामे अर्थक अध्ययन अछि। व्यावहारिक स्तरपर तीन प्रश्न उपयोगी अछि: शब्द अपने की अर्थ दैत अछि, वाक्यमे ओकर अर्थ कोना बदलैत अछि, आ प्रसङ्ग पाठककें कोन अर्थ चुनबाक संकेत दैत अछि? “अर्थ-विज्ञान: शब्दसँ वाक्य धरि” विषयकें नियमक...

अध्याय ४३७ — शब्दार्थ आ सन्दर्भित वस्तु

मूल पाठक अंश — शब्दक अर्थ आ संसारमे ओकर द्वारा चिन्हायल वस्तु एक्के बात नहि। “गाछ” शब्द एकटा वर्ग/धारणा बतबैत अछि; “आँगनक ओ आमक गाछ” एकटा विशिष्ट वस्तु दिस संकेत करैत अछि। शब्दार्थ = भाषा-व्यवस्थामे स्थापित अर्थ।

अध्याय ४३८ — शब्दकोशीय अर्थ आ व्याकरणिक अर्थ

मूल पाठक अंश — “घर”, “लाल”, “चल-” जकाँ रूप मुख्य शब्दार्थ वहन करैत अछि; “मे”, “क”, “कै”, काल/वचन/आदरक क्रियारूप आदि वाक्यक सम्बन्ध आ व्याकरणिक अर्थ बतबैत अछि। शब्द सही रहितो व्याकरणिक चिह्न गलत हो तँ पूरा अर्थ बदलि सकैत अछि।

अध्याय ४३९ — बहुअर्थकता

मूल पाठक अंश — जखन एक्के शब्दक अनेक परस्पर सम्बन्धित अर्थ हो, तखन ओकरा बहुअर्थकता कहल जा सकैत अछि। अर्थसभ बीच ऐतिहासिक वा रूपकात्मक सम्बन्ध रहि सकैत अछि। मुँह — शरीरक अंग; बोतलक मुँह; गुफाक मुँह। आँखि — शरीरक अंग;

अध्याय ४४० — समनामता

मूल पाठक अंश — जखन समान रूप/उच्चारणवला दू शब्दक अर्थ आपसमे सम्बन्धित नहि बुझाईत अछि, तखन समनामताक स्थिति हो सकैत अछि। शब्दकोश कतेको बेर एहन अर्थसभकेँ अलग प्रविष्टि दैत अछि। समनामता ऐतिहासिक व्युत्पत्तिसँ जुड़ल प्रश्न सेहो अछि;

अध्याय ४४१ — बहुअर्थकता आ समनामताक भेद

मूल पाठक अंश — ई भेद सदिखन सरल नहि। व्यावहारिक लेखक लेल अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि: एहि वाक्यमे कोन अर्थ अभिप्रेत अछि आ पाठककेँ ओ स्पष्ट होइत अछि कि नहि? बहुअर्थकता आ समनामताक भेद पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर...

अध्याय ४४२ — समानार्थकता

मूल पाठक अंश — दू शब्दक अर्थ बहुत निकट हो सकैत अछि, मुदा पूर्णतः हर प्रसङ्गमे अदल-बदल योग्य शब्द दुर्लभ अछि। समानार्थकता बहुधा आंशिक वा प्रसङ्ग-निर्भर होइत अछि। तकनीकी अर्थ एक शब्दमे संकीर्ण, दोसरमे व्यापक हो सकैत अछि।

अध्याय ४४३ — निकट समानार्थी शब्द आ रजिस्टर

मूल पाठक अंश — निकट समानार्थी शब्द अर्थमे नजदीक रहितो बोलचाल, शास्त्रीय, प्रशासनिक, साहित्यिक वा तकनीकी रजिस्टरमे अलग स्थान रखैत अछि। सम्पादनमे केवल “दोहराव हटायब” लेल तकनीकी शब्दक प्रत्येक पुनरावृत्ति पर्यायसँ नहि बदलू; अर्थ-संगति टूटि सकैत अछि।

अध्याय ४४४ — विपरीतार्थकता: एक प्रकार नहि

मूल पाठक अंश — विपरीतार्थी सम्बन्ध अनेक प्रकारक होइत अछि। शब्दकोशीय विपरीतार्थकता लिखैत समय “नहि X”केँ स्वतः “Y” नहि मानू। “नीक नहि”क अर्थ सदिखन “खराब” नहि; बीचक अवस्था सम्भव अछि।

अध्याय ४४५ — स्तरित विपरीतार्थी आ मात्रा

मूल पाठक अंश — पैघ-छोट, तेज-धीमा, गरम-ठंडा जकाँ जोड़ीक बीच मात्रा हो सकैत अछि। एहि कारण “कतेक?”, “बेसी/कम”, “बहुत/कने” जकाँ डिग्री-सूचक पद जुड़ि सकैत अछि। तर्कपूर्ण लेखनमे एहन स्तरित गुणकें कृत्रिम दू-भागी निर्णयमे नहि बदलू।

अध्याय ४४६ — पारस्परिक विपरीतार्थी

मूल पाठक अंश — किछु क्रिया वा सम्बन्ध एक्के घटनाकें दू दृष्टिसँ देखबैत अछि। अनुवादमे दृष्टिकोण बदलला पर कर्ता/कर्म/परसर्ग सेहो बदलि सकैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “पारस्परिक विपरीतार्थी” अछि।

अध्याय ४४७ — अधिनाम आ अवनाम

मूल पाठक अंश — जखन एक शब्द व्यापक वर्ग बतबैत अछि आ दोसर ओकर भीतरक विशिष्ट सदस्य-वर्ग, तखन व्यापक शब्द अधिनाम आ विशिष्ट शब्द अवनाम कहल जा सकैत अछि। अवनामक सम्बन्ध “एक प्रकारक” सूत्रसँ जाँचू: “आम एक प्रकारक फल अछि।

अध्याय ४४८ — सह-अवनाम

मूल पाठक अंश — एके अधिनामक भीतरक अलग सदस्य-वर्ग सह-अवनाम होइत अछि। “आम” आ “केला” दुनू “फल”क अवनाम अछि; तँ आपसमे सह-अवनाम। शब्दकोश, थिसॉरस आ पाठ्य-वर्गीकरणमे ई सम्बन्ध उपयोगी अछि, कारण ओ केवल समानार्थी नहि, बल्कि एके अर्थक्षेत्रक समान स्तरक सदस्य...

अध्याय ४४९ — अंग-समष्टि सम्बन्ध

मूल पाठक अंश — किछु शब्द “एक प्रकारक” सम्बन्ध नहि, बल्कि “एकर अंग/भाग” सम्बन्ध रखैत अछि। “पृष्ठ पोथीक एक प्रकार अछि” गलत; “पृष्ठ पोथीक एक भाग अछि” सही दिशा अछि। वर्ग-सम्बन्ध आ भाग-सम्बन्ध अलग राखू।

अध्याय ४५० — अर्थक्षेत्र

मूल पाठक अंश — एक विषय, गतिविधि वा अनुभवक आसपास जुड़ल शब्दसभ मिलि अर्थक्षेत्र बना सकैत अछि। उदाहरणतः विद्यालय क्षेत्रमे शिक्षक, विद्यार्थी, कक्षा, पाठ, परीक्षा, पुस्तकालय, गृहकार्य आदि शब्द परस्पर विषयगत रूपेँ जुड़ल अछि।

अध्याय ४५१ — शब्द-समूह आ वर्गीकरण

मूल पाठक अंश — लेखनक रूपरेखा बनबैत समय अर्थक्षेत्र शब्द जुटेबाक उपयोगी उपाय अछि; मुदा समूहक आधार स्पष्ट हो। २. व्यक्ति, वस्तु, क्रिया, गुण, स्थान आदि उपवर्ग बनाउ। ४. समानार्थी, सह-अवनाम आ केवल विषयगत सम्बन्धकेँ अलग चिन्हू।

अध्याय ४५२ — सहप्रयोग

मूल पाठक अंश — किछु शब्द व्याकरणतः अनेक साथी लऽ सकैत अछि, मुदा वास्तविक भाषामे किछु संयोजन विशेष स्वाभाविक होइत अछि। एहन प्रवृत्तिकेँ सहप्रयोग कहल जा सकैत अछि। भाषा-शिक्षणमे केवल अर्थ नहि, संग आवयवला शब्द सीखब।

अध्याय ४५३ — सहप्रयोग आ मुहावरा अलग अछि

मूल पाठक अंश — सभ स्थिर संयोजन मुहावरा नहि; “निर्णय लेब” स्थिर सहप्रयोग हो सकैत अछि, मुदा ओकर अर्थ पारदर्शी अछि। सहप्रयोग आ मुहावरा अलग अछि पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि?...

अध्याय ४५४ — चयन-प्रतिबन्ध

मूल पाठक अंश — क्रिया वा विशेषण सभ संज्ञाक संग अर्थपूर्ण नहि बनैत। व्याकरण सही होएबाक बादो अर्थगत असंगति रहि सकैत अछि। सम्पादनमे एहन वाक्य देखला पर तुरन्त “गलत” नहि कहू; पहिने जाँचू जे लेखक रूपक प्रयोग करैत अछि कि तथ्यपरक वाक्य लिखैत अछि।

अध्याय ४५५ — शाब्दिक आ लाक्षणिक अर्थ

मूल पाठक अंश — शाब्दिक अर्थ शब्दक सीधा, सामान्य अर्थ अछि। लाक्षणिक अर्थ सम्बन्ध, रूपक, संकेत वा सांस्कृतिक प्रयोगसँ विकसित होइत अछि। शाब्दिक आ लाक्षणिक अर्थ केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ४५६ — रूपकात्मक अर्थ-विस्तार

मूल पाठक अंश — एक अर्थक्षेत्रक शब्द दोसर अनुभव बुझाबय लेल रूपकात्मक रूपेँ प्रयुक्त भऽ सकैत अछि। “समय बहि रहल अछि”, “विचारक बीज”, “तर्कक आधार” जकाँ रचनामे भौतिक अनुभवसँ अमूर्त अर्थ बुझाओल जाइत अछि। औपचारिक लेखनमे स्थापित रूपक उपयोगी अछि;

अध्याय ४५७ — प्रसङ्गानुसार अर्थ

मूल पाठक अंश — एक वाक्यक सही अर्थ शब्दकोशसँ मात्र नहि, आसपासक वाक्य, विषय, वक्ता, समय आ स्थानसँ चुनल जाइत अछि। “बैंक” वित्तीय संस्था कि नदीक किनार? विषयक्षेत्र अर्थ चुनैत अछि।

अध्याय ४५८ — संकेतात्मक अर्थ

मूल पाठक अंश — हम, अहाँ, एतय, ओतय, आइ, काल्हि, ई, ओ जकाँ शब्दक सन्दर्भ बोलबाक परिस्थिति अनुसार बदलैत अछि। एहन रूप सम्पादनमे विशेष ध्यान मांगैत अछि। ऐतिहासिक दस्तावेज, समाचार वा परोक्ष कथनमे आवश्यक हो तँ संकेतात्मक शब्दकेँ स्पष्ट नाम/तिथिसँ बदलू।

अध्याय ४५९ — शब्दगत अस्पष्टता

मूल पाठक अंश — जखन एक शब्दक एकसँ अधिक अर्थ वाक्यमे सम्भव अछि आ प्रसङ्ग पर्याप्त संकेत नहि दैत, तखन शब्दगत अस्पष्टता उत्पन्न होइत अछि। सुधारक उपाय: विशिष्ट शब्द चुनू, छोट परिभाषा दिअ, विषयक्षेत्र स्पष्ट करू, अथवा वाक्यमे एहन सहप्रयोग जोडू जे...

अध्याय ४६० — संरचनागत अस्पष्टता

मूल पाठक अंश — कखनो शब्दसभ स्पष्ट रहैत अछि, मुदा वाक्यक जोड़/सम्बन्ध दू तरह बुझाईत अछि। नमूना: “हम दूरबीनसँ आदमीकेँ देखलहुँ।” — दूरबीन हमर देखनेक साधन छल कि आदमीक संग दूरबीन छल? प्रसङ्ग अनुसार पुनर्लेखन करू।

अध्याय ४६१ — नकार आ व्याप्तिक अर्थ-अस्पष्टता

मूल पाठक अंश — नकारक क्षेत्र बदलला पर अर्थ बदलैत अछि। औपचारिक लेखनमे “सभ...नहि” जकाँ व्याप्ति-अस्पष्टता सँ बचू; “किछु विद्यार्थी नहि आयल” अथवा “एक्को विद्यार्थी नहि आयल” स्पष्ट लिखू।

अध्याय ४६२ — शब्दकोशमे अर्थ-संख्या

मूल पाठक अंश — एक शब्दक अनेक अर्थ हो तँ शब्दकोश अर्थसभकेँ अलग संख्या दे सकैत अछि। अर्थ-संख्या वास्तविक भाषा-प्रयोगकेँ व्यवस्थित करबाक सम्पादकीय साधन अछि; प्रकृतिमे स्वतन्त्र “१, २, ३” लेबल नहि। ४. प्रत्येक अर्थ लेल स्वाभाविक उदाहरण।

अध्याय ४६३ — अर्थ-परिभाषा लिखब

मूल पाठक अंश — नीक शब्दकोशीय परिभाषा छोट, वृत्ताकार नहि, लक्षित अर्थक सीमा स्पष्ट करनिहार आ सम्भव हो तँ व्यापक वर्ग + भेदक गुणक रूपमे हो। परिभाषा लिखैत समय अति-सूक्ष्म भौतिक विशेषता जोड़ि सामान्य शब्दकेँ संकीर्ण नहि करू।

अध्याय ४६४ — वृत्ताकार परिभाषासँ बचब

मूल पाठक अंश — जँ परिभाषामे मूल शब्द वा ओकर अपरिभाषित निकट रूप फेर घुमि कऽ आवि जाए, पाठककेँ नब जानकारी नहि भेटैत। दोष: शिक्षा = शिक्षित करबाक प्रक्रिया; शिक्षित = शिक्षा देल व्यक्ति/स्थिति — जँ दुनू एक-दोसरपर निर्भर रहय।

अध्याय ४६५ — आवश्यक आ पर्याप्त गुण

मूल पाठक अंश — परिभाषा एतेक व्यापक नहि हो जे असम्बन्धित वस्तु सेहो आ जाए, आ एतेक संकीर्ण नहि हो जे वास्तविक सदस्य बाहर भऽ जाए।

आवश्यक आ पर्याप्त गुण पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा...

अध्याय ४६६ — तकनीकी अर्थ आ दैनिक अर्थ

मूल पाठक अंश — एके शब्द दैनिक भाषामे व्यापक अर्थ आ विज्ञान/कानून/दर्शनमे संकीर्ण पारिभाषिक अर्थ रखि सकैत अछि। पहिल प्रयोगमे पारिभाषिक अर्थ परिभाषित करू। दैनिक अर्थक आधारपर तकनीकी निष्कर्ष नहि निकालू।

अध्याय ४६७ — शब्द-सटीकता

मूल पाठक अंश — सटीक शब्द ओ अछि जे अभिप्रेत अर्थकें अनावश्यक विस्तार वा संकुचन बिना व्यक्त करए। सटीकता लेल अनावश्यक कठिन शब्द नहि; सरल विशिष्ट शब्द बहुधा बेहतर अछि। शब्द-सटीकता कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ४६८ — अत्यधिक व्यापक आ अत्यधिक संकीर्ण दावा

मूल पाठक अंश — अर्थगत सम्पादनमे मात्रा-सूचक पद—सभ, किछु, अधिकांश, अनेक, एक्को—विशेष ध्यानसँ जाँचू। “अत्यधिक व्यापक आ अत्यधिक संकीर्ण दावा” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ४६९ — अर्थगत पुनरावृत्ति

मूल पाठक अंश — दू शब्द अलग दिखितो एक्के अर्थ अनावश्यक दोहरा सकैत अछि। “पूर्व इतिहास” कतेको प्रसङ्गमे अनावश्यक हो सकैत अछि; “इतिहास” पर्याप्त। “भविष्यक योजना” कतेको ठाम स्वाभाविक अछि, मुदा “आगामी भविष्य” जकाँ दोहराव जाँचू।

अध्याय ४७० — अर्थगत टकराव

मूल पाठक अंश — वाक्यक अलग शब्द आपसमे एहन अर्थ बना सकैत अछि जे तार्किक रूपेँ असंगत अछि। सम्पादनमे केवल व्याकरण नहि, शब्दसभक अर्थ-तर्क सेहो जाँचू। एहि अध्यायक केन्द्र “अर्थगत टकराव” अछि।

अध्याय ४७१ — अनुवादमे अर्थ-समानता

मूल पाठक अंश — अनुवादक लक्ष्य प्रत्येक स्रोत-शब्दक एक शब्द खोजब नहि, बल्कि सन्दर्भगत अर्थ, भूमिका, भाव, रजिस्टर आ सम्बन्ध सुरक्षित राखब अछि।
२. लक्ष्य भाषामे एक शब्द पर्याप्त अछि कि वाक्यांश चाही? ४. नकार, मात्रा, काल, सम्भावना, आदर सुरक्षित अछि?

अध्याय ४७२ — शब्द-दर-शब्द समानता किएक असफल होइत अछि

मूल पाठक अंश — “शब्द-दर-शब्द समानता किएक असफल होइत अछि,” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ४७३ — थिसॉरसक उपयोग

मूल पाठक अंश — थिसॉरस शब्द विकल्प खोजबाक औजार अछि, स्वतः सही शब्द चुननिहार यन्त्र नहि। ४. उदाहरण-वाक्य वा शब्दकोशीय परिभाषा देखू। ५. तकनीकी लेखमे शब्द-संगति प्राथमिक राखू।

अध्याय ४७४ — शब्दकोशक उदाहरण-वाक्य

मूल पाठक अंश — व्यक्तिगत/राजनीतिक दावा उदाहरणक नामपर नहि जोड़ू। एहि अध्यायक केन्द्र “शब्दकोशक उदाहरण-वाक्य” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ४७५ — अर्थगत सम्पादनक चरण

मूल पाठक अंश — ४. समानार्थी बदलाव सँ अर्थ बदलल कि नहि, जाँचू। ५. नकार, मात्रा-सूचक पद आ ओकर व्याप्ति जाँचू। ८. रूपक तथ्यपरक गद्यकें भ्रमित तँ नहि करैत? ९. अनुवादमे भाव/सम्भाव्यता, आदर आ सीमा सुरक्षित अछि? अर्थगत सम्पादनक चरण कें बुझबाक सर्वोत्तम...

अध्याय ४७६ — “शब्द सही, अर्थ गलत” प्रकारक दोष

मूल पाठक अंश — एहन दोष वर्तनी-जाँच पकड़ि नहि सकैत; अर्थगत सम्पादन चाही। ““शब्द सही, अर्थ गलत” प्रकारक दोष” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ४७७ — व्यावहारिक अर्थ-जाँचसूची

मूल पाठक अंश — ४. विपरीतार्थी वास्तवमे पूर्ण विपरीत अछि कि स्तरित? ५. वर्ग-सम्बन्ध आ भाग-सम्बन्ध गडुमडु तँ नहि? ८. सन्दर्भ बिना “ई/ओ/एतय/आइ” अस्पष्ट तँ नहि? ९. नकार/सभ/किछु/अधिकांशक व्याप्ति स्पष्ट अछि? १०. अनुवाद/सारमे अर्थ बदल वा घटल तँ नहि?

अध्याय ४७८ — ध्वनि, अक्षर आ ध्वनिम

मूल पाठक अंश — हम जे सुनैत छी ओ ध्वनि; जे लिखैत छी ओ अक्षर/लिपिचिह्न। एक भाषामे अनेक वास्तविक उच्चारण-भेद रहि सकैत अछि, मुदा सभ भेद अलग शब्दार्थ नहि बनबैत। जे न्यूनतम ध्वनि-भेद शब्द वा रूपक अर्थ/पहचान बदलि सकए, ओकरा ध्वनिमक स्तरपर बुझल जाइत अछि।

अध्याय ४७९ — उच्चारण-अंग: ध्वनि कोना बनैत अछि?

मूल पाठक अंश — बोलैत समय फेफड़ासँ हवा ऊपर अबैत अछि; कण्ठ, जिह्वा, तालु, दाँत, ओठ आ नासिका ओकर मार्ग आ गुण बदलैत अछि। एहि कारण व्यंजनक वर्गीकरण मुख्यतः उच्चारण-स्थान आ उच्चारण-रीतिक आधारपर कएल जा सकैत अछि। जिह्वाक पछिला भाग आ कोमल तालु — क-वर्ग।

अध्याय ४८० — व्यंजनक मुख्य वर्गीकरण

मूल पाठक अंश — ई तालिका शिक्षण-सुविधाक लेल अछि। श, ष, स, र, ल, य, व आ कुछ उधार ध्वनिसभक व्यवहार अधिक सूक्ष्म अछि; ओ अलग अध्यायमे देखल जाएत। “व्यंजनक मुख्य वर्गीकरण” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए।

अध्याय ४८१ — घोष आ अघोष

मूल पाठक अंश — जखन स्वरयन्त्रक कम्पन स्पष्ट रूपें जुड़ैत अछि तँ ध्वनि घोष; जखन एहन कम्पन नहि वा बहुत कम हो तँ अघोष। हाथ कण्ठपर हलुक राखि क-ग वा त-द उच्चारलासँ विद्यार्थी एहि भेदकें अनुभव कऽ सकैत अछि।

अध्याय ४८२ — अल्पप्राण आ महाप्राण

मूल पाठक अंश — स्पर्शध्वनि उच्चारला पर बाहर निकलैत श्वासक बल कम हो तँ अल्पप्राण, अधिक सुनाइत श्वास हो तँ महाप्राण। मैथिली ध्वनि-पद्धतिमे ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि। पठन-अभ्यासमे “ख”कें केवल “क” आ “घ”कें केवल “ग” बना देब शब्दक पहचान बिगाड़ि सकैत अछि।

अध्याय ४८३ — चतुर्मुखी विरोध

मूल पाठक अंश — प, फ, ब, भ जकाँ वर्गमे दू भेद एक संग काज करैत अछि— घोष/अघोष आ अल्पप्राण/महाप्राण। एहि कारण चारिटा अलग ध्वनि-प्रकार बनैत अछि। एहि तालिकाकें कण्ठस्थ करबाक बदला प्रत्येक पाँतिक चारू ध्वनि धीमे, फेर स्वाभाविक गतिसँ उच्चारू।

अध्याय ४८४ — दन्त्य त-वर्ग आ मूर्धन्य ट-वर्ग

मूल पाठक अंश — त-वर्ग उच्चारैत समय जिह्वाक अग्रभाग ऊपरक दाँतक नजदीक/लग रहैत अछि। ट-वर्गमे जिह्वा पछाँ मुड़ि मूर्धा दिस जाइत अछि। ई भेद केवल वर्तनीक नहि, वास्तविक उच्चारणक अछि। हिन्दी/अंग्रेजी प्रभावसँ दुनू श्रेणीकें एक-जकाँ उच्चारबासँ बचू।

अध्याय ४८५ — च-वर्गः स्पर्श-घर्षी ध्वनि

मूल पाठक अंश — च, छ, ज, झ साधारण स्पर्शध्वनि जकाँ शुरू होइत अछि मुदा छोड़ला पर हलुक घर्षण सुनाइत अछि। व्यावहारिक रूपेँ विद्यार्थीकेँ चारू ध्वनिक घोष/अघोष आ महाप्राण/अल्पप्राण भेद स्पष्ट राखबाक चाही।

अध्याय ४८६ — क-वर्ग आ प-वर्ग

मूल पाठक अंश — क, ख, ग, घ जिह्वाक पछिला भाग आ कोमल तालुक नजदीक बनैत अछि। प, फ, ब, भ दुनू ओठक बन्द/खुलबाक क्रियासँ बनैत अछि। “फ”क पारम्परिक महाप्राण उच्चारण आ विदेशी “फ़”क घर्षी उच्चारण एक्के नहि; उधार शब्दक वर्तनी/उच्चारण नीति अलग राखू।

अध्याय ४८७ — नासिक्य व्यंजन

मूल पाठक अंश — म आ न स्वतंत्र रूपेँ बहुत सामान्य नासिक्य व्यंजन अछि। ङ, ञ, ण जकाँ नासिक्य रूप प्रायः विशिष्ट ध्वनि-परिस्थिति, संयुक्ताक्षर वा तत्सम शब्दमे अधिक भेटैत अछि। अनुस्वार देखला पर स्वतः “ं”क एके उच्चारण नहि मानू;

अध्याय ४८८ — र, ल, य, व आ प्रवाही ध्वनि

मूल पाठक अंश — र आ ल स्पर्शवर्गक जकाँ पूर्ण बन्द नहि बनवैत; य आ व सेहो मार्गकेँ आंशिक रूपेँ सँकरा करैत अछि। वास्तविक उच्चारण क्षेत्र, गति आ पड़ोसी ध्वनिसँ बदलि सकैत अछि। लकेँ स्पष्ट राखू; र/ल अदल-बदल मानक पठनमे नहि।

अध्याय ४८९ — स, श, ष आ ह

मूल पाठक अंश — सर्वसाधारण मैथिली उच्चारणमे स अत्यन्त सामान्य घर्षी ध्वनि अछि। श/ष तत्सम, शास्त्रीय वा औपचारिक शब्दावलीमे लिखित रूपेँ भेटैत अछि; वास्तविक बोलचालमे क्षेत्र/रजिस्टर अनुसार सरलीकरण भऽ सकैत अछि। ह कण्ठीय घर्षी ध्वनि अछि।

अध्याय ४१० — व्यंजन-समूह

मूल पाठक अंश — दू वा अधिक व्यंजन एक संग आवि व्यंजन-समूह बना सकैत अछि। देवनागरीमे ई संयुक्ताक्षर, हलन्त वा क्रमिक व्यंजनचिह्नसँ देखाइत अछि। बहुत कठिन तत्सम समूहक उच्चारण बोलचालमे सरल भऽ सकैत अछि; औपचारिक पठनमे स्थापित मानक रूपक अभ्यास करू।

अध्याय ४११ — स्वर-पद्धति: आठ मौखिक स्वर

मूल पाठक अंश — आधुनिक ध्वनिवैज्ञानिक वर्णनमे मैथिलीक आठ मौखिक स्वर-ध्वनिम मानल गेल अछि: /i, e, æ, ə, a, u, o, ɔ/। एहि स्वरसभकेँ जिह्वाक ऊँचाइ आ आगाँ-मध्य-पछिला स्थानक आधारपर समूहित कएल जा सकैत अछि।

अध्याय ४१२ — स्वरक ऊँचाइ: उच्च, मध्य आ निम्न

मूल पाठक अंश — “उच्च/निम्न” शब्द आवाजक तेज-धीमा अर्थमे नहि, जिह्वाक ऊँचाइ अर्थमे अछि। “स्वरक ऊँचाइ: उच्च, मध्य आ निम्न” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ४१३ — अग्र स्वर

मूल पाठक अंश — /i, e, æ/ अग्र स्वर अछि। /æ/ तुलनात्मक रूपेँ कम सामान्य हो सकैत अछि आ किछु बोलिमे एकर वास्तविक उच्चारण द्विस्वर-जकाँ सुनाइ सकैत अछि। व्यावहारिक सावधानी: देवनागरी “ऐ” देखिते प्रत्येक बेर एक निश्चित अंग्रेजी-जकाँ द्विस्वर नहि उच्चारू;

अध्याय ४१४ — मध्य स्वर

मूल पाठक अंश — /ə/ आ /a/ मध्य क्षेत्रक स्वर अछि। /ə/ विशेषतः शब्दक भीतर अनेक स्थानपर सुनाइत अछि; आधुनिक मैथिलीमे शब्द-अन्तक तथाकथित “अन्तर्निहित अ” ऐतिहासिक देवनागरी परम्परा अनुसार सदिखन उच्चरित नहि होइत।

अध्याय ४९५ — पश्च स्वर

मूल पाठक अंश — /u, o, ɔ/ पश्च स्वर अछि आ सामान्यतः ओठ गोल होइत अछि। /ɔ/ अपेक्षाकृत कम सामान्य आ बोलिगत परिवर्तनशील हो सकैत अछि। पठन-अभ्यासमे ओ/औक लिखित चिह्नक आधारपर अत्यधिक लम्बा स्वर नहि बनाउ; वास्तविक शब्द-उच्चारण प्रधान राखू।

अध्याय ४९६ — स्वर-दीर्घता:लिपि आ ध्वनि अलग

मूल पाठक अंश — देवनागरीमे ई/ई, उ/ऊ जकाँ अलग लिखित चिह्न अछि। मुदा आधुनिक मैथिली ध्वनिविज्ञानमे स्वरक केवल लम्बा-छोट अवधि अपने सँ अर्थभेदक मानल नहि जाइत। उच्चारणमे कृत्रिम रूपेँ “ई”केँ दू गुना लम्बा आ “इ”केँ आधा समय करबाक नियम नहि बनाउ।

अध्याय ४९७ — नासिक्य स्वर

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे स्वर-नासिक्यता अर्थभेदक हो सकैत अछि। नासिक्य स्वर उच्चारैत समय हवा मुखक संग नासिका मार्गसँ सेहो निकलैत अछि। चन्द्रबिन्दु (ँ) स्वर-नासिक्यता देखेबाक प्रमुख लिपिचिह्न अछि। आँखि, हँसब जकाँ शब्दमे नासिक्य गुण शब्दरूपक हिस्सा अछि।

अध्याय ४९८ — अनुस्वार आ नासिक्य उच्चारण

मूल पाठक अंश — अनुस्वार (ं)क उच्चारण अगिला व्यंजनक स्थानसँ प्रभावित भऽ सकैत अछि। लिखित अनुस्वारकेँ हर शब्दमे एक स्थिर “म्” वा “न्” नहि पढ़ू। सम्पादनक समय चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वारकेँ केवल दृश्य समानता कारण अदल-बदल नहि करू;

अध्याय ४९९ — स्वर-समूह आ द्विस्वर

मूल पाठक अंश — दू स्वर पास-पास आबि एक लहरमे उच्चरित हो सकैत अछि। पारम्परिक वर्तनीमे ऐ/औकेँ सरलतासँ “द्विस्वर” कहल गेल अछि, मुदा आधुनिक वर्णन बतबैत अछि जे मैथिलीक वास्तविक द्विस्वरीकरण स्वर-समूह आ ध्वनि-परिस्थितिसँ जुड़ल अछि।

अध्याय ५०० — अक्षर-खण्ड

मूल पाठक अंश — बोलल शब्द ध्वनि-खण्डसभमे व्यवस्थित होइत अछि। प्रत्येक अक्षर-खण्डक केन्द्र सामान्यतः स्वर होइत अछि। उच्चारण-अभ्यासमे शब्दकें अक्षर-खण्डमे बाँटलासँ कठिन व्यंजन-समूह, स्वर-समूह आ शब्दाघात बुझब सरल होइत अछि।

अध्याय ५०१ — शब्दाघातः अंग्रेजी-जकाँ कठोर नहि

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे शब्दाघात अछि, मुदा अंग्रेजीक तुलनामे सामान्यतः कमजोर अछि आ अर्थभेदमे ओकर भूमिका सीमित अछि। अतः विद्यार्थी प्रत्येक शब्दमे बहुत तेज जोर दऽ अलग सँ तीव्र शब्दाघात देखेबाक प्रयास नहि करथि।

अध्याय ५०२ — वाक्य-स्वरः विधान

मूल पाठक अंश — सामान्य विधानात्मक वाक्य प्रायः अन्तिम भागमे उत्तरैत स्वर-गति लैत अछि। ई लिपिमे पूर्णविरामक संग सहज मेल खाइत अछि। पठनमे प्रत्येक शब्दक बाद आवाज गिराउ नहि; पूरा अर्थ-समूहक अन्तमे स्वर पूर्ण करू।

अध्याय ५०३ — हाँ/नहि प्रश्नक स्वर

मूल पाठक अंश — “की” लगायल प्रश्नक स्वर-रचना अलग हो सकैत अछि; सभ प्रश्नक अन्त एक्के तरह चढ़ब, एहन नियम नहि। हाँ/नहि प्रश्नक स्वर कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५०४ — सूचना-प्रश्न आ विकल्प-प्रश्न

मूल पाठक अंश — के, की, कतय, कखन, किएक, कोना जकाँ प्रश्नपदवला सूचना-प्रश्न सामान्यतः प्रश्नपदसँ अपना उद्देश्य स्पष्ट करैत अछि; अन्तिम स्वर हाँ/नहि प्रश्न-जकाँ अनिवार्य रूपेँ ऊपर नहि चढ़ैत।

अध्याय ५०५ — आज्ञा, अनुरोध आ सम्बोधनक स्वर

मूल पाठक अंश — आज्ञा आ अनुरोधक व्याकरणिक रूप संग स्वर सामाजिक अर्थ बदलि सकैत अछि। वही शब्द कठोर, विनम्र, आश्चर्यपूर्ण वा आग्रहपूर्ण

सुनाइ सकैत अछि। केवल विरामचिह्न स्वरक पूरा अर्थ नहि दैत; वास्तविक वाचनमे गति, ऊँचाइ आ बल सेहो महत्त्वपूर्ण अछि।

अध्याय ५०६ — अर्थ-जोर आ विरोधी बल

मूल पाठक अंश — वाक्यक सामान्य पदक्रम बदलला वा कोनो पदपर विशेष बल देलासँ सूचना-केन्द्र बदलि सकैत अछि। हम आइ पटना जाएब। — “आइ”, नहि काल्हि; आवाजक बलसँ विरोध सम्भव। पटना हम आइ जाएब। — “पटना” विषय/जोरक केन्द्र बनि सकैत अछि।

अध्याय ५०७ — विराम आ अर्थ-समूह

मूल पाठक अंश — विराम साँस लेल जाएत, मुदा व्याकरणिक समूह सेहो देखबैत अछि। गलत ठाम रुकलासँ अर्थ टूटि सकैत अछि। कर्ता आ क्रियाकें बिना कारण अलग नहि करू। सम्बन्धवाचक उपवाक्य, सूची, उद्धरण, आरम्भिक उपवाक्यपर अर्थानुकूल छोट विराम।

अध्याय ५०८ — बोलचाल बनाम औपचारिक उच्चारण

मूल पाठक अंश — दैनिक बोलचालमे ध्वनि-संक्षेपण, व्यंजन-सरलीकरण, स्वर-परिवर्तन आ गति-जनित रूप स्वाभाविक अछि। औपचारिक पठनमे एतेक स्पष्टता चाही जे सभ शब्द पहिचानल जा सकय, मुदा पाठ संस्कृत-पाठ जकाँ कृत्रिम सेहो नहि बनय।

अध्याय ५०९ — क्षेत्रीय रूप आ मानक उच्चारण

मूल पाठक अंश — मैथिली विशाल भौगोलिक क्षेत्रमे बाजल जाइत अछि, तँ स्वर, व्यंजन, शब्दरूप आ लयमे क्षेत्रीय विविधता स्वाभाविक अछि। “मानक”क अर्थ सभ स्थानीय रूपकें गलत कहब नहि; पाठ्य, समाचार, मंच, शिक्षा आ व्यापक सञ्चार लेल एक साझा पठनीय रूप चुनब अछि।

अध्याय ५१० — तत्सम शब्दक उच्चारण

मूल पाठक अंश — संस्कृतसँ आयल तत्सम शब्दमे संयुक्ताक्षर, ष/श, ऋ-सम्बन्धी वर्तनी, ज्ञ आदि रूप देखाइत अछि। शिक्षित/औपचारिक शैलीमे मूल-

जकाँ उच्चारणक प्रभाव अधिक रहि सकैत अछि, जबकि बोलचालमे सरलीकरण सम्भव अछि। लेखन-नीति: स्थापित वर्तनी बदलू नहि।

अध्याय ५११ — उधार शब्दक उच्चारण

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी आ अन्य भाषासँ आयल शब्द मैथिलीमे आवि स्थानीय ध्वनि-पद्धतिसँ अनुकूलित भऽ सकैत अछि।

व्यक्ति/स्थान/संस्थाक नाममे पहिचान प्राथमिक। सामान्य उधार शब्दमे मैथिलीकरण स्वाभाविक हो सकैत अछि।

अध्याय ५१२ — देवनागरी आ वास्तविक ध्वनि

मूल पाठक अंश — देवनागरी व्यवस्थित लिपि अछि, मुदा “एक अक्षर = एक स्थिर ध्वनि” नियम सर्वत्र पूर्ण नहि। संयुक्ताक्षर, अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु, ऐ/औ, अन्तर्निहित अ, तत्सम परम्परा आ उधार शब्द एहि सम्बन्धमे विविधता आनैत अछि।

अध्याय ५१३ — उच्चारणजन्य वर्तनी-दोष

मूल पाठक अंश — बोलचालक रूप सीधे लिखला पर मानक वर्तनी बिगडि सकैत अछि; उलट रूपँ लिखित अक्षरकँ अक्षर-अक्षर उच्चारला पर पठन कृत्रिम होइत अछि। स्थानीय ध्वनि-सरलीकरणकँ बिना जाँच मानक वर्तनी नहि बनाउ।

अध्याय ५१४ — पठनक गति

मूल पाठक अंश — स्पष्ट पठनक अर्थ धीमा पठन नहि। बहुत धीमा पढ़ला पर वाक्यक अर्थ-समूह टूटैत अछि; बहुत तेज पढ़ला पर ध्वनि आ शब्द नष्ट होइत अछि। २. समूह: दोसर बेर शब्द-शब्द नहि, अर्थ-समूहमे पढ़। एहि अध्यायक केन्द्र “पठनक गति” अछि।

अध्याय ५१५ — गद्य-पठन

मूल पाठक अंश — गद्य-पठनमे विषय-वाक्य, सूची, कारण-परिणाम, उद्धरण आ निष्कर्षक लय अलग हो सकैत अछि। अनुच्छेदक पहिल वाक्य स्पष्ट, मुदा अनावश्यक नाटकीय जोर नहि। उद्धरणक आवाज बदलि सकैत अछि, मुदा अभिनयक अति नहि।

अध्याय ५१६ — संवाद-पठन

मूल पाठक अंश — संवाद पढ़ते समय व्याकरणिक आदर, पात्रक सम्बन्ध आ भाव स्वरमे प्रकट हो सकैत अछि। मुदा आवाज बदलि चरित्रक उपहास नहि करू। आदर-स्तर: छी/छथि आदि क्रियारूप स्पष्ट।

अध्याय ५१७ — समाचार/औपचारिक पठन

मूल पाठक अंश — समाचार, प्रतिवेदन, शैक्षिक पाठ आ सार्वजनिक सूचना पढ़ते समय स्पष्टता, समान गति आ तथ्यगत निरपेक्षता प्रधान अछि। नाम, तिथि, संख्या पहिने देखिकेँ पढ़ू। अज्ञात नामपर अनुमानित अत्यधिक अंग्रेजी/हिन्दी उच्चारण नहि; उपलब्ध मानक जाँचू।

अध्याय ५१८ — कविता आ छन्द-पठन

मूल पाठक अंश — कविता पढ़ते समय केवल पाँतिक अन्त देखिकेँ नहि रकू; व्याकरणिक अर्थ अगिला पाँतिमे चलि रहल हो सकैत अछि। छन्द, मात्रा, लय आ अर्थ—चारूकेँ संतुलित राखू। ई इकाई छन्दशास्त्रक विस्तृत विवेचन नहि करैत;

अध्याय ५१९ — स्व-मूल्यांकन लेल ध्वनि-अभिलेखन

मूल पाठक अंश — अपन आवाज रेकर्ड कऽ सुननाइ उच्चारण-अभ्यासक उपयोगी साधन अछि। एके अनुच्छेद तीन बेर पढ़ि तुलना करू। २. दोसर: घोष-अघोष, महाप्राण-अल्पप्राण आ नासिक्यता ध्यानमे राखि। ४. तीनू सुनि केवल तीन मुख्य सुधार-बिन्दु लिखू;

अध्याय ५२० — उच्चारणक सम्पादकीय जाँचसूची

मूल पाठक अंश — ४. चन्द्रबिन्दुवला स्वर नासिक्य अछि? ५. अनुस्वारकेँ हर ठाम एक्के ध्वनि तँ नहि बनाओल गेल? ६. प्रत्येक व्यंजनक बाद अनावश्यक अ तँ नहि जोड़ल गेल? ७. वाक्य प्रश्न/विधान अनुसार स्वर बदलैत अछि? ९. शब्दाघात अत्यधिक अंग्रेजी-जकाँ तँ नहि?

अध्याय ५२१ — सम्पादन, प्रूफ-पठन आ प्रकाशन-जाँचक भेद

मूल पाठक अंश — सम्पादन विचार आ भाषा सुधारैत अछि; प्रूफ-पठन सूक्ष्म वर्तनी-विराम दोष पकड़ैत अछि; प्रकाशन-जाँच पृष्ठ, तालिका, किनार, शीर्षलेख/पादलेख आ अक्षर-रूप देखैत अछि।

अध्याय ५२२ — सम्पादकीय कार्यप्रवाह

मूल पाठक अंश — मूल प्रति सुरक्षित राखू; संरचना, वाक्य, शैली, तथ्य, प्रूफ आ अन्तिम दृश्य-रूपान्तरण—ई क्रम चरणबद्ध रूपेँ पूरा करू। एहि अध्यायक केन्द्र “सम्पादकीय कार्यप्रवाह” अछि।

अध्याय ५२३ — पृष्ठ-सज्जाक मूल सिद्धान्त

मूल पाठक अंश — पृष्ठ-सज्जाक लक्ष्य पठनीयता अछि। किनार, पाँतिक लम्बाइ, अनुच्छेद-अन्तर, शीर्षक-अन्तर आ पृष्ठ-क्रम स्थिर रह्य। पृष्ठ-सज्जाक मूल सिद्धान्त केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५२४ — अनुच्छेद-विन्यास

मूल पाठक अंश — पहिल पाँतिक भीतरक दूरी अथवा अनुच्छेदक बीच अन्तर—एक मुख्य पद्धति चुनू; संवाद, कविता, सूची आ उद्धरणक विन्यास अलग हो सकैत अछि। “अनुच्छेद-विन्यास” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए।

अध्याय ५२५ — शीर्षक-स्तर

मूल पाठक अंश — मुख्य भाग, अध्याय आ उपशीर्षकक दृश्य स्तर-क्रम अर्थगत संरचना देखबैत अछि; आकार मात्र नहि, स्तरक क्रम स्थिर हो। शीर्षक-स्तर पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि...

अध्याय ५२६ — शीर्षकक भाषिक एकरूपता

मूल पाठक अंश — एक स्तरक शीर्षकसभ यथासम्भव समान व्याकरणिक ढाँचामे रह्य—संज्ञा, प्रश्न वा क्रिया-रूपक अनावश्यक मिश्रण कम करू। एहि अध्यायक केन्द्र “शीर्षकक भाषिक एकरूपता” अछि।

अध्याय ५२७ — पृष्ठ-विभाजन

मूल पाठक अंश — शीर्षक पृष्ठक अन्तिम पाँतिमे अकेले नहि छोड़; छोट सूची, तालिका शीर्षलेख आ अर्थपूर्ण अनुच्छेद अनावश्यक रूपेँ न टूटय। पृष्ठ-विभाजन केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५२८ — सूची:बुलेट कि क्रमाङ्क?

मूल पाठक अंश — क्रम महत्त्वपूर्ण नहि हो तँ बुलेट; चरण/अनुक्रम आवश्यक हो तँ क्रमाङ्क। बिन्दुसभक व्याकरणिक ढाँचा समान राखू। “सूची:बुलेट कि क्रमाङ्क?” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५२९ — सूचीमे विरामचिह्न

मूल पाठक अंश — छोट वाक्यांशक सूची आ पूरा वाक्यक सूची अलग हो सकैत अछि; एक सूची भीतर अन्तिम विरामक नीति स्थिर राखू। एहि विषयक अध्ययन चार आधारपर कएल जाए: स्पष्ट परिभाषा, वास्तविक उदाहरण, प्रयोगक सीमा आ तुलना। केवल पदावली याद कएलासँ ज्ञान पूर्ण नहि होइत;

अध्याय ५३० — तालिका:जानकारीक संरचना

मूल पाठक अंश — तालिका तुलना लेल उपयोगी अछि। एक स्तम्भमे एक प्रकारक जानकारी, स्पष्ट शीर्षक, समान इकाई आ संक्षिप्त कोष्ठक-पाठ राखू। एहि अध्यायक केन्द्र “तालिका:जानकारीक संरचना” अछि।

अध्याय ५३१ — तालिकाक शीर्षक आ स्रोत

मूल पाठक अंश — वास्तविक आँकड़ावला तालिकाक शीर्षक आ स्रोत स्पष्ट हो; काल्पनिक शिक्षण-नमूनाकेँ वास्तविक डेटा जकाँ नहि देखाउ। तालिकाक शीर्षक आ स्रोत केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५३२ — उद्धरणक प्रस्तुति

मूल पाठक अंश — छोट उद्धरण मुख्य अनुच्छेदमे, दीर्घ उद्धरण अलग खण्डमे देल जा सकैत अछि; मूल शब्द आ स्रोत सुरक्षित राखू। “उद्धरणक प्रस्तुति”

विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५३३ — उद्धरणमे काट-छाँट

मूल पाठक अंश — उद्धरण छोट करैत समय मूल अर्थ नहि बदलू। बहुत बदलाव चाही तँ पराभाषा अधिक सुरक्षित हो सकैत अछि। उद्धरणमे काट-छाँट पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू...

अध्याय ५३४ — प्रत्यक्ष उद्धरण, पराभाषा आ सार

मूल पाठक अंश — प्रत्यक्ष उद्धरणमे उद्धरणचिह्न; पराभाषा/सारमे नहि, मुदा स्रोत-विशिष्ट विचार लेल श्रेय आवश्यक। एहि अध्यायक केन्द्र “प्रत्यक्ष उद्धरण, पराभाषा आ सार” अछि।

अध्याय ५३५ — संख्या-लेखन

मूल पाठक अंश — देवनागरी वा अन्तरराष्ट्रीय अंकमे एक मुख्य नीति चुनू; एके तालिका/अनुच्छेदमे अनावश्यक मिश्रण नहि। संख्या-लेखन कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५३६ — संख्या आ इकाई

मूल पाठक अंश — २५ किमी / २५ किलोमीटर, २५ प्रतिशत / २५% जकाँ विकल्पमे विधा अनुसार एकरूपता राखू। “संख्या आ इकाई” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५३७ — तिथि आ समय

मूल पाठक अंश — अभिलेखीय लेखनमे १२ अगस्त २०२६ जकाँ पूर्ण तिथि, आ आवश्यक हो तँ प्रातः/साँझ सहित समय, अस्पष्ट संक्षिप्त रूपसँ बेहतर अछि। तिथि आ समय पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय...

अध्याय ५३८ — व्यक्ति-नाम

मूल पाठक अंश — आधिकारिक वर्तनी प्राथमिक; एके व्यक्तिक नाम पूरा ग्रन्थमे स्थिर राखू। अनुमानसँ नाम सुधारू नहि। एहि अध्यायक केन्द्र “व्यक्ति-नाम” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नव उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ५३९ — स्थान-नाम आ संस्था-नाम

मूल पाठक अंश — स्थान/संस्था/विभागक आधिकारिक नाम जाँचू; अनुवादित नाम आ आधिकारिक नामक भेद स्पष्ट राखू। स्थान-नाम आ संस्था-नाम केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५४० — कृति-शीर्षकक प्रस्तुति

मूल पाठक अंश — पुस्तक, पत्रिका, लेख, अध्याय, कविता वा नाटक शीर्षक लेल प्रकाशकीय शैली निश्चित कऽ एकरूप राखू। “कृति-शीर्षकक प्रस्तुति” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५४१ — सन्दर्भ-सूची: मूल सिद्धान्त

मूल पाठक अंश — एक सन्दर्भ-पद्धति चुनू; लेखक-नाम, वर्ष, शीर्षक, प्रकाशक/पत्रिका विवरणक क्रम स्थिर राखू। सन्दर्भ-सूची: मूल सिद्धान्त पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू...

अध्याय ५४२ — सन्दर्भ-सूचीमे नामक क्रम

मूल पाठक अंश — भारतीय नामसभपर पश्चिमी उपनाम प्रणाली अनुमानसँ नहि थोपू; चुनल सन्दर्भ-पद्धति अनुसार नामक रूप स्थिर राखू। एहि अध्यायक केन्द्र “सन्दर्भ-सूचीमे नामक क्रम” अछि।

अध्याय ५४३ — पृष्ठसंख्या आ परास

मूल पाठक अंश — एक पृष्ठ, पृष्ठ-परास आ अध्याय-सन्दर्भक संख्या-शैली एकरूप राखू; अन्तिम पृष्ठ-विन्यासक बाद फेर जाँचू। पृष्ठसंख्या आ परास केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५४४ — अन्तःसन्दर्भ

मूल पाठक अंश — ऊपर/नीचाँ जकाँ पृष्ठ-विन्यास-निर्भर संकेतक बदला अध्याय, तालिका वा चित्र संख्या अधिक सुरक्षित अछि। “अन्तःसन्दर्भ” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५४५ — प्रूफ-पठनक निर्देश

मूल पाठक अंश — हटाउ, जोड़ू, स्थान बदलू, अलग करू, जोड़ि लिखू, विराम सुधारू—डिजिटल वा मुद्रित प्रूफमे निर्देश अर्थस्पष्ट हो। प्रूफ-पठनक निर्देश पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय...

अध्याय ५४६ — प्रूफ-पठनक अलग-अलग दौर

मूल पाठक अंश — वर्तनी, विरामचिह्न, संख्या, नाम, शीर्षक, तालिका, सन्दर्भ आ पृष्ठ-विन्यास लेल अलग जाँच-दौर उपयोगी अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “प्रूफ-पठनक अलग-अलग दौर” अछि।

अध्याय ५४७ — खंडित प्रूफ-पठन

मूल पाठक अंश — अर्थक प्रवाहसँ स्वतन्त्र भऽ एक-एक वाक्य, पाँति वा उलटा क्रममे जाँचलासँ अक्षर-स्तर दोष पकड़ाइ सकैत अछि। खंडित प्रूफ-पठन केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५४८ — उच्चस्वर पठन द्वारा प्रूफ

मूल पाठक अंश — जोर सँ पढ़लासँ छुटल शब्द, दोहराव, अस्वाभाविक वाक्य, गलत विराम आ अत्यधिक लम्बा वाक्य पकड़ाइ सकैत अछि। “उच्चस्वर पठन

द्वारा प्रूफ” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५४९ — त्रुटि-वर्गीकरण

मूल पाठक अंश — वर्तनी, व्याकरण, विराम, शब्द-चयन, तथ्य, संरचना आ पृष्ठ-विन्यास—दोषक वर्ग बनौला पर आवर्ती समस्या चिन्हव आसान होइत अछि। त्रुटि-वर्गीकरण पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा...

अध्याय ५५० — आवर्ती त्रुटिक सूची

मूल पाठक अंश — मे/में, कै/के, चन्द्रबिन्दु, नाम, उद्धरण, शब्द-अन्तर जकाँ आवर्ती समस्या नोट कऽ नियंत्रित जाँच करू। एहि अध्यायक केन्द्र “आवर्ती त्रुटिक सूची” अछि।

अध्याय ५५१ — खोजि-सुधारक उन्नत सावधानी

मूल पाठक अंश — वैश्विक बदलावसँ पहिने ठीक-ठीक रूप, पूरा शब्द/शब्दांश, उद्धरण, नाम, प्रत्यय-जुड़ल रूप आ नमूना-सन्दर्भ जाँचू। खोजि-सुधारक उन्नत सावधानी कै बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५५२ — एकरूपता-जाँच

मूल पाठक अंश — नाम, तिथि, अंक, उद्धरण, शीर्षक, कारक-शब्द-अन्तर, नुक्ता आ पारिभाषिक शब्दक रूपान्तर खोजू। “एकरूपता-जाँच” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५५३ — शैली-पत्रक उपयोग

मूल पाठक अंश — दीर्घ ग्रन्थ लेल वर्तनी, नाम, अंक, उद्धरण, सन्दर्भ, शीर्षक-स्तर आ पारिभाषिक शब्दक निर्णय लिखित राखू। शैली-पत्रक उपयोग पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि...

अध्याय ५५४ — तथ्य-जाँच आ प्रूफ-पठन

मूल पाठक अंश — वर्तनी सही होएब तथ्य सही होएब नहि। नाम, तिथि, आँकडा आ उद्धरण मूल स्रोतसँ अलग जाँच मांगैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “तथ्य-जाँच आ प्रूफ-पठन” अछि।

अध्याय ५५५ — उद्धरण-जाँच

मूल पाठक अंश — मूल शब्द, लेखक, स्रोत, पृष्ठ/स्थान, काटल अंश आ पराभाषाक सीमा फेर मिलाउ। उद्धरण-जाँच केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५५६ — नाम-जाँच

मूल पाठक अंश — व्यक्ति, स्थान, संस्था, कृति, पुरस्कार आ पदनाम लेल अलग नाम-जाँच दौर चलाउ। “नाम-जाँच” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५५७ — संख्या-जाँच

मूल पाठक अंश — १९८६/१९८८, १५/५१, ३.५/३५, २५%/२.५% जकाँ छोट टंकण-दोष अर्थ बदलि सकैत अछि; महत्त्वपूर्ण संख्या मूल स्रोतसँ मिलाउ। संख्या-जाँच पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि?...

अध्याय ५५८ — तालिका-जाँच

मूल पाठक अंश — शीर्षलेख, पाँति/स्तम्भ, इकाई, योग, स्रोत, मुख्य पाठक सन्दर्भ आ कटाव जाँचू। एहि अध्यायक केन्द्र “तालिका-जाँच” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नव उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ५५९ — चित्र, शीर्षक-पंक्ति आ वैकल्पिक पाठ

मूल पाठक अंश — चित्र/आलेखक शीर्षक स्पष्ट हो; क्रमाङ्क स्थिर; डिजिटल प्रकाशनमे आवश्यक हो तँ वैकल्पिक पाठ दिअ। चित्र, शीर्षक-पंक्ति आ वैकल्पिक पाठ केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५६० — शीर्षलेख, पादलेख आ पृष्ठसंख्या

मूल पाठक अंश — शीर्षलेख/पादलेख सहायक हो, ध्यान न खींचय; मुख्य पाठसँ अतिव्यापन नहि; पृष्ठसंख्या स्थिर स्थानपर। “शीर्षलेख, पादलेख आ पृष्ठसंख्या” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५६१ — खाली पृष्ठ आ अनपेक्षित पृष्ठ-विभाजन

मूल पाठक अंश — पृष्ठ-विभाजन, शब्द-अन्तर, तालिका, खण्ड-विभाजन आ अगिला अनुच्छेदसँ संग राखबाक गुण जाँचि वास्तविक कारण सुधारू; सामग्री खींचि पृष्ठ नहि भरू।

अध्याय ५६२ — अक्षर-रूप आ फॉन्ट-जाँच

मूल पाठक अंश — खाली चौकोर वा प्रतिस्थापन-चिन्ह, टूटल मात्रा, संयुक्ताक्षर, चन्द्रबिन्दु, नुक्ता, उद्धरणचिह्न आ दीर्घ-रेखा दृश्य रूपेँ जाँचू। एहि अध्यायक केन्द्र “अक्षर-रूप आ फॉन्ट-जाँच” अछि।

अध्याय ५६३ — पीडीएफ/पीएनजी दृश्य-जाँच

मूल पाठक अंश — वर्ड दस्तावेज पाठ सही रहितो दृश्य-रूपान्तरण दोषपूर्ण भऽ सकैत अछि; प्रत्येक पृष्ठपर किनार, तालिका, शीर्षक, अक्षर-रूप, शीर्षलेख/पादलेख देखू। पीडीएफ/पीएनजी दृश्य-जाँच केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५६४ — सम्पादकीय तुलना-पत्र

मूल पाठक अंश — महत्त्वपूर्ण सुधारक पहिले/बादमे/कारण रूप राखलासँ नीति स्पष्ट रहैत अछि। “सम्पादकीय तुलना-पत्र” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५६५ — प्रूफ-पठनमे अर्थ-सुरक्षा

मूल पाठक अंश — ऐतिहासिक पाठ, कविता, बोली, नाम आ पारिभाषिक शब्दमे अनिश्चित रूप तुरन्त गलत मानि नहि बदलू। प्रूफ-पठनमे अर्थ-सुरक्षा पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू...

अध्याय ५६६ — लेखक-स्वर आ सम्पादकीय सीमा

मूल पाठक अंश — अस्पष्टता दूर करू, मुदा पात्रक आवाज, अलंकारिक पुनरुक्ति वा लेखकक विशिष्ट शैली अनावश्यक रूपें समतल नहि करू। एहि अध्यायक केन्द्र “लेखक-स्वर आ सम्पादकीय सीमा” अछि।

अध्याय ५६७ — सम्पादकीय निर्णयक अभिलेख

मूल पाठक अंश — महत्त्वपूर्ण वर्तनी, नुक्ता, अंक, उद्धरण, नाम, सन्दर्भ आ लिप्यन्तरण निर्णय लिखित राखू। सम्पादकीय निर्णयक अभिलेख कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५६८ — आवृत्ति-आधारित जाँच

मूल पाठक अंश — सबसे अधिक आवयवला रूपान्तर चिन्हू; कम आवृत्तिवला रूप गलत कि वैध अपवाद, सन्दर्भ देखि तय करू। “आवृत्ति-आधारित जाँच” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५६९ — प्रकाशन-पूर्व अन्तिम परीक्षण

मूल पाठक अंश — फाइल खुलैत अछि, सभ पृष्ठ दृश्य-रूपान्तरण होइत अछि, क्रम सही अछि, तालिका/चित्र पूरा अछि, नाम/तिथि/संख्या जाँचल अछि—ई सभ पुष्टि करू।

अध्याय ५७० — संस्करण-नियन्त्रण

मूल पाठक अंश — अन्तिम २ नव जकाँ नामक बदला स्पष्ट तिथि/संस्करण/इकाई-नाम राखू, ताकि गलत फाइल प्रेषित नहि हो। एहि अध्यायक केन्द्र “संस्करण-नियन्त्रण” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ५७१ — अन्तिम फाइलक सफाई

मूल पाठक अंश — अन्तिम प्रतिमे अनावश्यक टिप्पणी, संशोधन-चिह्न, गुप्त चिह्न, अस्थायी टिप्पणी आ गलत संचिका-विवरण जाँचू। अन्तिम फाइलक सफाई केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५७२ — प्रूफ-पठनक नैतिकता

मूल पाठक अंश — लेखकक मत मनमाना नहि बदलू, तथ्य/स्रोत गढ़ नहि, उद्धरणक शब्द अनधिकृत रूपेँ नहि बदलू। “प्रूफ-पठनक नैतिकता” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५७३ — एकरूपता बनाम भाषिक विविधता

मूल पाठक अंश — बोली, ऐतिहासिक वर्तनी, पात्रक संवाद वा उद्धरण उद्देश्यपूर्ण विविधता हो सकैत अछि; प्रश्न ई अछि जे विविधता उद्देश्यपूर्ण अछि कि दुर्घटनावश।

अध्याय ५७४ — अन्तिम सम्पादकीय जाँचसूची

मूल पाठक अंश — भाषा, वर्तनी, नासिक्यता, शब्द-अन्तर, शीर्षक, सूची, तालिका, उद्धरण, नाम, संख्या, सन्दर्भ, अक्षर-रूप, खाली पृष्ठ आ दृश्य-जाँच—सभक अन्तिम जाँचसूची बनाउ।

अध्याय ५७५ — समेकित निदान: भाषा-दोष कोन स्तरक?

मूल पाठक अंश — एक वाक्यमे एकसँ अधिक स्तरक दोष भऽ सकैत अछि। “अहाँ कहाँ जा रहा है?”मे शब्दावली, क्रियारूप, आदर-सामञ्जस्य आ भाषामिश्रण सभ समस्या अछि। समेकित निदान: भाषा-दोष कोन स्तरक? केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५७६ — संज्ञा, वचन, कारक आ परसर्गक समेकित पुनरावृत्ति

मूल पाठक अंश — घरमे, गामसँ, बच्चाकेँ, रामक संग—कारक/परसर्गीय सीमा स्पष्ट राखू। बहुवचन केवल संख्या नहि; प्रसङ्ग, सम्मान आ समूह-अर्थ सेहो ध्यानमे राखू। जटिल परसर्गीय पदमे सम्बन्ध-रूप + अलग पद: घरक भीतर, ओकरा लेल, हमर संग।

अध्याय ५७७ — सर्वनाम, आदर आ सन्दर्भ

मूल पाठक अंश — सर्वनामक सही रूप चुनब मात्र पर्याप्त नहि; पाठक ककरा लेल ओ/हुनका/ओकर/हुनकर अछि, तुरन्त बुझि सकए। सर्वनाम, आदर आ सन्दर्भ पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि...

अध्याय ५७८ — विशेषण, संख्या, मात्रा आ तुलना

मूल पाठक अंश — विशेषण/मात्रा-पद संज्ञाक अर्थ सीमित करैत अछि। तुलना करैत समय जे वस्तु तुलना योग्य नहि, ओकरा यान्त्रिक “बेसी/कम” सँ नहि जोड़ू। दूटा पोथी, किछु विद्यार्थी, बहुत पानि, जतेक...ततेक—अर्थ-प्रकार अलग।

अध्याय ५७९ — क्रिया:कर्ता, कर्म आ अर्थ

मूल पाठक अंश — क्रिया निदानक पहिल प्रश्न अछि—काज के करैत अछि, ककरापर होइत अछि, आ क्रियाक रूप ओहि सम्बन्धसँ मेल खाइत अछि कि नहि? क्रिया: कर्ता, कर्म आ अर्थ केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५८० — काल, पक्ष आ समय-सन्दर्भ

मूल पाठक अंश — काल केवल क्रियारूप नहि; पूरा अनुच्छेदक समय-सन्दर्भ संगत होएबाक चाही। २. ओ पाँच वर्ष पहिने एहि गाममे रहैत अछि। सुधार करैत समय “भूत” शब्द देखिकेँ सभ क्रिया एक रूपमे नहि करू; घटना-क्रम आ वर्तमान प्रासंगिकता देखू।

अध्याय ५८१ — पक्ष: अभ्यासगत, प्रगतिशील आ पूर्ण अवस्थाक व्यावहारिक भेद

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी काल-नामक आधारपर शब्द-दर-शब्द रूप नहि चुनू; मैथिलीमे घटनाक प्रकार आ प्रसङ्ग प्रधान अछि। पक्ष: अभ्यासगत, प्रगतिशील आ पूर्ण अवस्थाक व्यावहारिक भेद पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि,....

अध्याय ५८२ — नकार, सम्भाव्यता आ भाव

मूल पाठक अंश — नहि/न: नकारक स्थान अर्थ बदलि सकैत अछि। चाही/पड़ब: आवश्यकता/कर्तव्य—प्रसङ्ग अनुसार। काल्पनिक शर्तमे -इत प्रकारक रूप महत्वपूर्ण: जाँ हम रहितहुँ... “ओ नहि केवल पढ़ैत अछि...” जकाँ अंग्रेजी/हिन्दी मिश्रित संरचनाकेँ स्वाभाविक मैथिली...

अध्याय ५८३ — संयुक्त क्रिया आ असीमित रूप

मूल पाठक अंश — खा लेब, लिखि देब, चलि जाएब, पढ़बाक लेल, पढ़ैत विद्यार्थी, आयल अतिथि—ई सभ अलग व्याकरणिक कार्य करैत अछि। संक्षिप्त रूपमे कर्ता बदलि जाए तँ अस्पष्टता होइत अछि; तखन पूर्ण उपवाक्य राखू।

अध्याय ५८४ — परसर्ग, समुच्चयबोधक आ तार्किक जोड़

मूल पाठक अंश — सम्बन्ध गलत चुनला पर व्याकरण ठीक रहितो तर्क गलत भऽ सकैत अछि। “परसर्ग, समुच्चयबोधक आ तार्किक जोड़” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५८५ — प्रश्न, आज्ञा, अनुरोध आ विस्मय

मूल पाठक अंश — हाँ/नहि प्रश्न; स्वर आ प्रसङ्ग प्रधान; “की” सभ प्रश्नमे अनिवार्य नहि। सूचना-प्रश्न: के, की, कतय, कखन, किएक, कोना, कतेक। परोक्ष प्रश्नक अन्तमे प्रश्नचिह्न आवश्यक नहि: ओ पुछलनि जे बैठक कहिया होयत।

अध्याय ५८६ — शब्दक्रम आ सूचना-केंद्र

मूल पाठक अंश — निष्पक्ष पदक्रम सामान्यतः कर्ता-कर्म-क्रिया अछि; क्रम बदलि जोर वा विषय बदलि सकैत अछि। क्रम-बदलावक अर्थ प्रसङ्गसँ तय होइत अछि; केवल “जोर” कहि प्रत्येक असामान्य क्रमकें सही नहि मानू। एहि अध्यायक केन्द्र “शब्दक्रम आ सूचना-केंद्र” अछि।

अध्याय ५८७ — वाच्यक समेकित पुनरावृत्ति

मूल पाठक अंश — कर्ता जिम्मेवारी लेल महत्त्वपूर्ण हो तँ कर्मवाच्यसँ ओकरा छिपाउ नहि। “हमरासँ ई काज नहि कएल गेल” जकाँ रचना असमर्थताक अर्थ सेहो दऽ सकैत अछि। वाच्यक समेकित पुनरावृत्ति कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ५८८ — प्रेरणार्थक रचना

मूल पाठक अंश — सभ धातुपर एक्के प्रेरणार्थक प्रत्यय यान्त्रिक रूपें नहि लगाउ; प्रचलित रूप प्रधान अछि। “प्रेरणार्थक रचना” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ५८९ — प्रत्यक्ष आ परोक्ष कथन

मूल पाठक अंश — अंग्रेजी जकाँ रिपोर्टिंग क्रियाक कारण कालकै अनिवार्य रूपेँ पछाँ नहि सारू; वास्तविक समय-संबन्ध अनुसार काल चुनू। प्रत्यक्ष आ परोक्ष कथन पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा...

अध्याय ५९० — पूरक, सम्बन्धवाचक आ क्रियाविशेषणीय उपवाक्य

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “पूरक, सम्बन्धवाचक आ क्रियाविशेषणीय उपवाक्य” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ५९१ — सम्बन्ध-सहसम्बन्धी रूप

मूल पाठक अंश — सम्बन्ध-सहसम्बन्धी रूप केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ५९२ — शब्द-रचना आ रूप-निर्माणक पुनरावृत्ति

मूल पाठक अंश — औपचारिक रूप: अर्थहीन, गुणयुक्त, सरलता। संयुक्त शब्द: माए-बाप, दिन-रात, पुस्तकालय। मनगढन्त व्युत्पत्ति बनाबय सँ बचू; स्थापित रूप नहि हो तँ स्पष्ट वाक्यांश बेहतर।

अध्याय ५९३ — वर्तनी आ देवनागरीक समेकित जाँच

मूल पाठक अंश — वर्तनी आ देवनागरीक समेकित जाँच पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक...

अध्याय ५१४ — अर्थ-विज्ञानक समेकित पुनरावृत्ति

मूल पाठक अंश — बहुअर्थकता: एक सम्बन्धित शब्दक अनेक अर्थ।
समानार्थकता पूर्णतः निरपेक्ष नहि; रजिस्टर/सहप्रयोग भिन्न हो सकैत अछि।
विपरीतार्थकता प्रकारानुसार अलग—द्विपदी, क्रमिक, सम्बन्धात्मक। अधिनाम-
अवनाम: व्यापक वर्ग आ ओकर सदस्य।

अध्याय ५१५ — अस्पष्टता आ अर्थगत सम्पादन

मूल पाठक अंश — पहिल वाक्यमे सर्वनाम-अस्पष्टता; दोसरमे “दूरबीनसँ”
ककरा संग जुड़ल? तेसरमे नकारक व्याप्ति अस्पष्ट। सुधार अर्थ निर्दिष्ट कऽ
करू। अस्पष्टता आ अर्थगत सम्पादन केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ
प्रयोग अछि।

अध्याय ५१६ — उच्चारण, लय आ पठन

मूल पाठक अंश — मौखिक स्वर आ नासिक्य स्वर स्पष्ट राखू। दन्त्य-मूर्धन्य,
घोष-अघोष, अल्पप्राण-महाप्राण भेद अभ्यास करू। शब्दाघात हलुक; अंग्रेजी-
जकाँ कठोर शब्दाघात-नियम नहि थोपू। विधान, प्रश्न, सूची, उद्धरण आ संवादक
वाक्य-स्वर अलग हो सकैत अछि।

अध्याय ५१७ — शैली आ रजिस्टरक समेकित पुनरावृत्ति

मूल पाठक अंश — “शुद्ध मैथिली”क अर्थ सभ विधामे एक्के शैली नहि;
प्रसङ्गानुकूल स्वाभाविक मैथिली। शैली आ रजिस्टरक समेकित पुनरावृत्ति पर
व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर
कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू...

अध्याय ५१८ — विरामचिह्न आ प्रस्तुति

मूल पाठक अंश — परोक्ष प्रश्न: सामान्यतः विधानात्मक अन्त। आरम्भिक दीर्घ
उपवाक्यक बाद अल्पविराम पठनीयता बढ़ा सकैत अछि। एहि अध्यायक केन्द्र
“विरामचिह्न आ प्रस्तुति” अछि।

अध्याय ५९९ — त्रुटि-निदानक चारि चरण

मूल पाठक अंश — ४. सुधारसँ अर्थ/रजिस्टर बदलल कि नहि, जाँचू। त्रुटि-निदानक चारि चरण केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६०० — मिश्रित त्रुटि-सुधार: वाक्य

मूल पाठक अंश — ४. जे विद्यार्थी काल्हि आयल छल जे शिक्षकसँ बात कएलक से आइ नहि आयल। ५. सभ लोक निश्चित रूपेँ ई मानैत अछि। ६. घर मे एकटा बहुत सुन्दर सुंदर फूल अछि। प्रत्येक वाक्यमे सम्भव हो तँ एकसँ अधिक दोष-स्तर चिन्हू।

अध्याय ६०१ — रूपान्तरण-अभ्यास: अर्थ सुरक्षित राखू

मूल पाठक अंश — 558.2 कर्तृवाच्य सँ कर्मवाच्य—जहाँ उचित २. शिक्षक कहलनि, “कृपया चुपचाप बैसू।”

अध्याय ६०२ — संक्षेपण आ विस्तार

मूल पाठक अंश — संक्षेपणमे कर्ता/समय/तर्क नहि खोउ; विस्तारमे अनावश्यक नव तथ्य नहि जोड़ू। एहि अध्यायक केन्द्र “संक्षेपण आ विस्तार” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नव उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६०३ — अनुवाद-आधारित समेकित पुनर्लेखन

मूल पाठक अंश — नीचाँक अंग्रेजी अर्थकेँ शब्द-दर-शब्द नहि, स्वाभाविक मैथिलीमे लिखू: २. The report suggests that the change may help, but the evidence is limited. ४. The student who came yesterday asked when the examination would be held.

अध्याय ६०४ — अनुच्छेद-समेकन

मूल पाठक अंश — नीचाँक अव्यवस्थित वाक्यसभकेँ एक सुसम्बद्ध अनुच्छेद बनाउ: किछु विद्यार्थी केवल परीक्षा-सम्बन्धी पुस्तक लैत छथि। स्वतंत्र पठन

शब्दभण्डार बढ़ा सकैत अछि। विद्यालय सप्ताहमे एक समय स्वतंत्र पठन लेल राखबाक विचार करैत अछि।

अध्याय ६०५ — दीर्घ सम्पादन-पाठ १: विद्यालयी सूचना

मूल पाठक अंश — “सभी विद्यार्थी को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में कल 5 बजे एक महत्वपूर्ण मीटिंग होगी। जो छात्र आना चाहते हैं वह अपने माता पिता के साथ आ सकता है। कृपया टाइम पर आएँ और अपना ID card लाना मत भूलिए।”

अध्याय ६०६ — दीर्घ सम्पादन-पाठ २: समाचार

मूल पाठक अंश — “काल्हि एक शानदार ऐतिहासिक कार्यक्रम भेल जाहिमे पूरा शहर उमड़ि पड़ल। आयोजक कहलक जे शायद हजारों लोक आयल छल, इसलिए ई सिद्ध होइत अछि जे कार्यक्रम बेहद सफल छल।” काज: समाचार-शैलीमे पुनर्लेखन करू।

अध्याय ६०७ — दीर्घ सम्पादन-पाठ ३: शैक्षिक अनुच्छेद

मूल पाठक अंश — “ऑनलाइन पढ़ाई सबसे सर्वोत्तम तरीका अछि आ ई बात सब रिसर्च साबित करैत अछि। आजकल के छात्र किताब पढ़ना पसंद नहि करैत अछि इसलिए भविष्य में प्रिंटेड किताब खत्म हो जाएगा। एहि बातक कोनो doubt नहि अछि।

अध्याय ६०८ — दीर्घ सम्पादन-पाठ ४: कथा-अंश

मूल पाठक अंश — “राम घर पहुँचल आ सीता खाना बना रहल छल जे बहुत थकल छल। ओ ओकरा कहल जे ओ जल्दी खा ले किएक तँ ओ काल्हि जल्दी उठेगा। फेर ओ हँसला आ ऊ बाहर चला गया।” काज: सर्वनाम-अस्पष्टता, भाषामिश्रण, काल-संगति, कर्ता-सन्दर्भ आ क्रियारूप सुधारू;

अध्याय ६०९ — दीर्घ सम्पादन-पाठ ५: आवेदन

मूल पाठक अंश — “Sir, हमरा बहुत जरूरी काम अछि इसलिए हम school नहि आ सकैत छी। Please leave दे दिअ। हम बादमे सब manage कऽ लेब।” काज: औपचारिक आवेदन बनाउ। कारणक गोपनीयता राखि आवश्यक तिथि/अवधि लेल काल्पनिक रिक्ति-पूर्ति नहि गढ़ू;

अध्याय ६१० — रचना-विधा चयन

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “रचना-विधा चयन” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू। जँ नब उदाहरण नियमसँ नहि मिलए तँ उदाहरणकें गलत कहबाक बदला नियमक सीमा वा अपवाद पुनः विचारल जाए।

अध्याय ६११ — समेकित रचना-अभ्यास

मूल पाठक अंश — २. विद्यालयमे स्वतंत्र पठन-समय लेल २०० शब्दक प्रस्ताव लिखू। ४. ओही कार्यक्रमक १५० शब्दक प्रतिवेदन लिखू। ५. एक वास्तविक पोथीक ३०० शब्दक समीक्षा लिखू; तथ्य अनिश्चित हो तँ सत्यापन करू। ६. “भाषा आ तकनीक” विषयपर ३ मिनटक भाषण लिखू।

अध्याय ६१२ — नमूना प्रश्नपत्र १: व्याकरण आ प्रयोग

मूल पाठक अंश — कुल अंक: १०० · समय: ३ घण्टा · ई शिक्षण-नमूना अछि। २. पाँच वाक्यमे सर्वनाम/आदर-सामञ्जस्य सुधारू। (१०) २. जे...से, जकर...तकर, जँ...तँ प्रयोग कऽ तीन वाक्य बनाउ।

अध्याय ६१३ — नमूना प्रश्नपत्र २: अर्थ, शैली आ सम्पादन

मूल पाठक अंश — २. समानार्थक शब्द किएक सदिखन परस्पर बदलाय योग्य नहि? (५) २. एक शैक्षिक वाक्यक अति-दावा सीमित करू। (५) २. ओही पाठक सुधरल संस्करण लिखू। (२५)

अध्याय ६१४ — नमूना प्रश्नपत्र ३: सम्पूर्ण रचना-कौशल

मूल पाठक अंश — खण्ड आ — विश्लेषणात्मक लेखन (३० अंक) २. १५० शब्दक सार—प्रदत्त मूल पाठसँ। (१५) २. प्रदत्त बैठक-तथ्यसँ कार्यवृत्त अथवा प्रस्ताव। (१५)

अध्याय ६१५ — उत्तरमाला: समेकित वाक्य-सुधार

मूल पाठक अंश — ४. जे विद्यार्थी काल्हि आयल छल आ शिक्षकसँ बात कएलक, से आइ नहि आयल। अथवा घटनाक क्रम अनुसार दू वाक्य बनाउ। ५.

स्रोत नहि हो तँ: किछु लोक एहन मानि सकैत छथि / दावाक स्रोत दिअ। ८.
घरमे एकटा बहुत सुन्दर फूल अछि। — “बहुत” आवश्यक हो तँ;

अध्याय ६१६ — उत्तरमाला: रूपान्तरणक नमूना

मूल पाठक अंश — अहाँ काल्हि आएब? / की अहाँ काल्हि आएब? — प्रसङ्ग अनुसार। “राम ई कविता लिखलक”मे लेखक राम स्वयं मुख्य सूचना हो तँ कर्तृवाच्य बेहतर। मोहन कहलक जे ओ अगिला दिन दरभङ्गा जाएत। शिक्षक चुपचाप बैसबाक आग्रह/आदेश कएलनि—प्रसङ्ग अनुसार।

अध्याय ६१७ — उत्तरमाला: अनुवाद-आधारित पुनर्लेखन

मूल पाठक अंश — २. प्रतिवेदन ई संकेत दैत अछि जे परिवर्तनसँ पहुँच बेहतर भऽ सकैत अछि, मुदा उपलब्ध प्रमाण सीमित अछि। ४. जे विद्यार्थी काल्हि आयल छल, से पुछलक जे परीक्षा कहिया होयत।

अध्याय ६१८ — उत्तरमाला: दीर्घ सम्पादन-पाठक दिशा

मूल पाठक अंश — प्राप्त तिथि उपलब्ध नहि अछि, तँ “काल्हि”कें अनुमानित पूर्ण तिथिमे नहि बदलू। सम्भावित रूप: “सभ विद्यार्थीकें सूचित कएल जाइत अछि जे विद्यालयमे आगामी दिन साँझ ५ बजे बैठक आयोजित होयत।

अध्याय ६१९ — नमूना प्रश्नपत्रक मूल्यांकन-मापदण्ड

मूल पाठक अंश — रचनात्मक प्रश्नमे शब्दशः उत्तरमालाक नकल आवश्यक नहि; सही अर्थ, स्वाभाविक मैथिली, संरचना आ तथ्य-सुरक्षा प्रमुख अछि।
नमूना प्रश्नपत्रक मूल्यांकन-मापदण्ड कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ६२० — स्व-मूल्यांकन सूची

मूल पाठक अंश — २. सर्वनामक सन्दर्भ आ आदर-स्तर स्पष्ट राखि सकैत छी।
४. कर्तृवाच्य/कर्मवाच्य/प्रेरणार्थक रचना प्रसङ्ग अनुसार चुनि सकैत छी। ५.
पूरक, सम्बन्धवाचक आ क्रियाविशेषणीय उपवाक्य चिन्हि सकैत छी।

अध्याय ६२१ — एहि सन्दर्भ-खण्डक उपयोग

मूल पाठक अंश — २. वाक्य बनबैत समय कर्ता-कर्म-क्रिया आ कारक जाँचू।
४. रचना लिखबाक पहिने उचित प्रारूप चुनू। ५. अन्तिम प्रति देबाक पहिने दोष-
सुधार आ प्रूफ-जाँचसूची चलाउ।

अध्याय ६२२ — पद-प्रकारक त्वरित सार

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “पद-प्रकारक त्वरित सार” अछि।
अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर
नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६२३ — संज्ञा, संख्या आ बहुलता

मूल पाठक अंश — संज्ञा, संख्या आ बहुलता केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना
आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत
उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६२४ — कारक आ परसर्गक त्वरित सार

मूल पाठक अंश — लेखन-नीति: घरमे, रामसँ, बच्चाकेँ जकाँ बन्धित रूप जोड़ि;
रामक संग, बच्चाक लेल जकाँ जटिल पद अलग लिखू। “कारक आ परसर्गक
त्वरित सार” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष
रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६२५ — मुख्य सर्वनाम-रूप

मूल पाठक अंश — मुख्य सर्वनाम-रूप पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न
उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक
सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल
नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक दक्षता नहि बनैत...

अध्याय ६२६ — सम्बोधन आ आदर-स्तर

मूल पाठक अंश — एके व्यक्तिक लेल सर्वनाम आ क्रियामे आदर-स्तर बिना
कारण नहि बदलू। एहि अध्यायक केन्द्र “सम्बोधन आ आदर-स्तर” अछि।

अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६२७ — प्रश्नवाचक शब्द

मूल पाठक अंश — व्याकरणिक विश्लेषणमे रूप, वाक्यगत कार्य आ अर्थ तीनूकें अलग चिन्हब उपयोगी अछि। एक पदक रूप देखिकऽ ओकर काज तुरन्त तय नहि कएल जाए; ओकर स्थान, संग लगल परसर्ग/सहायक क्रिया, सामञ्जस्य आ पूरा वाक्यक अर्थ देखल जाए।

अध्याय ६२८ — सम्बन्धवाचक-सहसम्बन्धी रूप

मूल पाठक अंश — “सम्बन्धवाचक-सहसम्बन्धी रूप” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६२९ — अनिश्चित रूप

मूल पाठक अंश — अनिश्चित रूप पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यावहारिक दक्षता नहि बनैत अछि।

अध्याय ६३० — निर्धारक आ संज्ञा-वाक्यांशक क्रम

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “निर्धारक आ संज्ञा-वाक्यांशक क्रम” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६३१ — विशेषण आ तुलना

मूल पाठक अंश — विशेषण आ तुलना कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकें एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६३२ — क्रियाक मूल वर्ग

मूल पाठक अंश — “क्रियाक मूल वर्ग” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि; तकर बाद रूप कोना बनैत अछि, वाक्य वा पाठमे कोन काज करैत अछि, आ प्रसङ्ग बदलला पर ओकर अर्थ/प्रयोग कोना बदलैत अछि—ई देखब...

अध्याय ६३३ — काल-पक्षक त्वरित क्रियारूप

मूल पाठक अंश — काल-पक्षक त्वरित क्रियारूप पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक दक्षता...

अध्याय ६३४ — कर्ता आ क्रियाक आदर-सामञ्जस्य

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “कर्ता आ क्रियाक आदर-सामञ्जस्य” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६३५ — नकारक त्वरित सार

मूल पाठक अंश — नकारक त्वरित सार कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकें एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६३६ — भाव, क्षमता, इच्छा आ बाध्यता

मूल पाठक अंश — “भाव, क्षमता, इच्छा आ बाध्यता” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६३७ — आज्ञा, अनुरोध आ विनम्रता

मूल पाठक अंश — आज्ञा, अनुरोध आ विनम्रता पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर

प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक दक्षता नहि...

अध्याय ६३८ — असीमित आ कृदन्तीय रूप

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “असीमित आ कृदन्तीय रूप” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६३९ — प्रेरणार्थक आ कर्मवाच्य

मूल पाठक अंश — कर्मवाच्य तखने उपयोगी जखन प्रक्रिया/परिणाम कर्तासँ बेसी महत्त्वपूर्ण हो; अंग्रेजी प्रभावसँ अति प्रयोग नहि करू। प्रेरणार्थक आ कर्मवाच्य केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ६४० — सामान्य वाक्य-रचना नक्शा

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे सामान्य प्रवृत्ति: कर्ता — कर्म/पूरक — क्रिया। परसर्ग सम्बन्धित संज्ञा/सर्वनामक बाद आबैत अछि। “सामान्य वाक्य-रचना नक्शा” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६४१ — वाक्यक मुख्य प्रकार

मूल पाठक अंश — वाक्यक मुख्य प्रकार पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक दक्षता नहि बनैत...

अध्याय ६४२ — प्रश्न-निर्माण

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “प्रश्न-निर्माण” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू। जँ नब उदाहरण नियमसँ नहि मिलए तँ उदाहरणकेँ गलत कहबाक बदला नियमक सीमा वा अपवाद पुनः विचारल जाए।

अध्याय ६४३ — उपवाक्यक तीन मुख्य वर्ग

मूल पाठक अंश — उपवाक्यक तीन मुख्य वर्ग कैँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकैँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६४४ — वाक्य-सम्बन्धक त्वरित रूप

मूल पाठक अंश — “वाक्य-सम्बन्धक त्वरित रूप” विषयकैँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि; तकर बाद रूप कोना बनैत अछि, वाक्य वा पाठमे कोन काज करैत अछि, आ प्रसङ्ग बदलला पर ओकर अर्थ/प्रयोग कोना बदलैत...

अध्याय ६४५ — समय, स्थान, रीति आ मात्रा सम्बन्ध

मूल पाठक अंश — समय, स्थान, रीति आ मात्रा सम्बन्ध पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक...

अध्याय ६४६ — शर्त, कारण, परिणाम आ प्रयोजन

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “शर्त, कारण, परिणाम आ प्रयोजन” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६४७ — प्रत्यक्ष आ परोक्ष कथन

मूल पाठक अंश — मैथिलीमे अंग्रेजी-जकाँ अनिवार्य काल-पश्चगमन नहि; समय, वक्ता आ सन्दर्भ अनुसार रूप बदलू। प्रत्यक्ष आ परोक्ष कथन कैँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ६४८ — विरामचिह्नक त्वरित सार

मूल पाठक अंश — “विरामचिह्नक त्वरित सार” विषयकैँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण

अच्छि; तकर बाद रूप कोना बनैत अच्छि, वाक्य वा पाठमे कोन काज करैत अच्छि, आ प्रसङ्ग बदलला पर ओकर अर्थ/प्रयोग कोना बदलैत अच्छि—ई...

अध्याय ६४९ — शुद्ध लेखनक त्वरित सार

मूल पाठक अंश — शुद्ध लेखनक त्वरित सार पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अच्छि, एकर कार्य की अच्छि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अच्छि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक दक्षता नहि...

अध्याय ६५० — शब्द-रचनाक त्वरित सार

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “शब्द-रचनाक त्वरित सार” अच्छि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६५१ — अर्थ-सम्बन्धक त्वरित सार

मूल पाठक अंश — अर्थ-सम्बन्धक त्वरित सार केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अच्छि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६५२ — अस्पष्टता-जाँच

मूल पाठक अंश — “अस्पष्टता-जाँच” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अच्छि; तकर बाद रूप कोना बनैत अच्छि, वाक्य वा पाठमे कोन काज करैत अच्छि, आ प्रसङ्ग बदलला पर ओकर अर्थ/प्रयोग कोना बदलैत अच्छि—ई देखब...

अध्याय ६५३ — शैली/प्रयोग-स्तरक त्वरित सार

मूल पाठक अंश — शैली/प्रयोग-स्तरक त्वरित सार पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अच्छि, एकर कार्य की अच्छि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अच्छि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक दक्षता...

अध्याय ६५४ — रचना-विधा चुनबाक सार

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “रचना-विधा चुनबाक सार” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६५५ — औपचारिक पत्र/आवेदनक त्वरित प्रारूप

मूल पाठक अंश — औपचारिक पत्र/आवेदनक त्वरित प्रारूप केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६५६ — ई-पत्रक त्वरित प्रारूप

मूल पाठक अंश — “ई-पत्रक त्वरित प्रारूप” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि; तकर बाद रूप कोना बनैत अछि, वाक्य वा पाठमे कोन काज करैत अछि, आ प्रसङ्ग बदलला पर ओकर अर्थ/प्रयोग कोना बदलैत अछि—ई...

अध्याय ६५७ — समाचारक त्वरित प्रारूप

मूल पाठक अंश — २. आरम्भिक अनुच्छेदमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य। समाचारक त्वरित प्रारूप पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीन प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल...

अध्याय ६५८ — प्रतिवेदनक त्वरित प्रारूप

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “प्रतिवेदनक त्वरित प्रारूप” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६५९ — कार्यवृत्तक त्वरित प्रारूप

मूल पाठक अंश — शब्दशः संवाद नहि; निर्णयक संक्षिप्त आधिकारिक अभिलेख। कार्यवृत्तक त्वरित प्रारूप के बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ६६० — प्रस्तावक त्वरित प्रारूप

मूल पाठक अंश — उद्देश्य परिणामक दिशा; गतिविधि ओ परिणाम लेल कएल काज। “प्रस्तावक त्वरित प्रारूप” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६६१ — निबन्ध/तर्कपूर्ण लेखक त्वरित नक्शा

मूल पाठक अंश — तर्कपूर्ण लेखमे दावा, कारण, प्रमाण आ सीमा अलग चिन्हू। निबन्ध/तर्कपूर्ण लेखक त्वरित नक्शा पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ...

अध्याय ६६२ — समीक्षाक त्वरित प्रारूप

मूल पाठक अंश — समीक्षा कथासार मात्र नहि; गुण, सीमा आ आधारक विश्लेषण अछि। एहि अध्यायक केन्द्र “समीक्षाक त्वरित प्रारूप” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६६३ — सार आ संक्षेपणक त्वरित विधि

मूल पाठक अंश — ४. उदाहरण/पुनरावृत्ति/गौण विस्तार हटाउ। ६. मूल निष्कर्ष आ दावाक सीमा सुरक्षित राखू। सार आ संक्षेपणक त्वरित विधि केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ६६४ — अनुवाद-आधारित पुनर्लेखनक जाँच

मूल पाठक अंश — ५. सम्भावना/निश्चितताक मात्रा बदलल तँ नहि? ७. स्रोत-वाक्यक क्रम यान्त्रिक रूपेँ नकल तँ नहि? “अनुवाद-आधारित पुनर्लेखनक जाँच”

विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६६५ — सामान्य दोष-सुधार: सर्वनाम आ कारक

मूल पाठक अंश — सामान्य दोष-सुधार: सर्वनाम आ कारक पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक...

अध्याय ६६६ — सामान्य दोष-सुधार: क्रिया आ आदर

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “सामान्य दोष-सुधार: क्रिया आ आदर” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६६७ — सामान्य दोष-सुधार: प्रश्न, नकार आ उपवाक्य

मूल पाठक अंश — सामान्य दोष-सुधार: प्रश्न, नकार आ उपवाक्य कें बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकें एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६६८ — सामान्य दोष-सुधार: हिन्दी/अंग्रेजी प्रभाव

मूल पाठक अंश — “सामान्य दोष-सुधार: हिन्दी/अंग्रेजी प्रभाव” विषयकें नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६६९ — सामान्य दोष-सुधार: अर्थ आ शैली

मूल पाठक अंश — सामान्य दोष-सुधार: अर्थ आ शैली पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक...

अध्याय ६७० — सामान्य दोष-सुधार:वर्तनी आ प्रस्तुति

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “सामान्य दोष-सुधार:वर्तनी आ प्रस्तुति” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६७१ — प्रकाशन-पूर्व त्वरित जाँचसूची

मूल पाठक अंश — १. टूटल वा अज्ञात प्रतिस्थापन-चिन्ह नहि? प्रकाशन-पूर्व त्वरित जाँचसूची केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६७२ — “समस्या देखलहुँ, आब कतय देखी?” त्वरित सूचक

मूल पाठक अंश — ““समस्या देखलहुँ, आब कतय देखी?” त्वरित सूचक” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६७३ — पारिभाषिक शब्दावली:व्याकरण

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय ६७४ — पारिभाषिक शब्दावली:रचना,अर्थ आ सम्पादन

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय ६७५ — त्वरित स्व-परीक्षण

मूल पाठक अंश — २. अहाँक संग कोन क्रियारूप उचित—छी कि छह? ६. प्रत्यक्ष प्रश्नक अन्तमे कोन चिह्न? ७. समाचार आ सम्पादकीयक मुख्य अन्तर की? ९. प्रेरणार्थक रचनामे मुख्य अर्थ की? १०. अन्तिम दस्तावेज देबाक पहिने दृश्य-जाँच किएक आवश्यक?

अध्याय ६७६ — त्वरित स्व-परीक्षणक उत्तर

मूल पाठक अंश — ७. समाचार तथ्य प्रधान; सम्पादकीय तथ्यक आधारपर मत/तर्क प्रस्तुत करैत अछि। द. नहि; सार मूल पाठक मुख्य विचार सुरक्षित रखैत अछि। १०. कारण पाठ सही रहितो किनार, अक्षर-रूप, तालिका, पादलेख वा पृष्ठ-विभाजन दृश्य-रूपमे बिगड़ि सकैत अछि।

अध्याय ६७७ — पूरा ग्रन्थक संरचनात्मक मानचित्र

मूल पाठक अंश — पूरा ग्रन्थक संरचनात्मक मानचित्र पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक...

अध्याय ६७८ — पुनरावृत्ति: दोष आ शिक्षण-आवश्यकता

मूल पाठक अंश — दीर्घ व्याकरण-पुस्तकमे किछु विषय अनेक ठाम आबैत अछि। सभ पुनरावृत्ति हटेबाक वस्तु नहि। पहिल बेर नियम सिखाओल जाएत; बादमे ओही नियम वाक्य, रचना, अर्थ वा सम्पादनक प्रसङ्गमे फेर लागू होइत अछि।

अध्याय ६७९ — मुख्य नियमक संगति-जाँच

मूल पाठक अंश — मुख्य नियमक संगति-जाँच केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६८० — पारिभाषिक शब्दक अन्तिम संगति

मूल पाठक अंश — पूरे ग्रन्थमे मुख्य पारिभाषिक शब्दक एक स्थिर अर्थ राखल गेल अछि। अंग्रेजी तुलनात्मक शब्द केवल ओतय उपयोगी अछि जतय पाश्चात्य व्याकरण-पद्धतिक तुलना बुझाबय आवश्यक हो; मुख्य व्याख्या मैथिलीमे अछि।

अध्याय ६८१ — अध्याय-पार उपयोग-नक्शा

मूल पाठक अंश — अध्याय-पार उपयोग-नक्शा पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक दक्षता नहि...

अध्याय ६८२ — अभ्यास-उत्तर व्यवस्था

मूल पाठक अंश — ग्रन्थक अभ्यास तीन प्रकारक अछि। उत्तरमाला सेहो प्रश्नक प्रकृति अनुसार बुझबाक चाही। एहि अध्यायक केन्द्र “अभ्यास-उत्तर व्यवस्था” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६८३ — खुला रचना-अभ्यासक मूल्यांकन-मानदण्ड

मूल पाठक अंश — शिक्षक वा परीक्षक आवश्यकतानुसार अंक-वितरण बदलि सकैत छथि; मुदा तथ्य गढ़ब, प्रश्नसँ बाहर लिखब अथवा अर्थ बदलि देब केवल शैलीगत दोष नहि मानल जाए। खुला रचना-अभ्यासक मूल्यांकन-मानदण्ड केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि।

अध्याय ६८४ — समेकित त्रुटि-निदानक अन्तिम सार

मूल पाठक अंश — “समेकित त्रुटि-निदानक अन्तिम सार” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६८५ — विषयानुक्रमणिका हेतु मुख्य विषय-सूची

मूल पाठक अंश — नीचाँ देल सूची पृष्ठसंख्याक बदला अध्याय-संख्या उपयोग करैत अछि, कारण अलग मुद्रण-विन्यासमे पृष्ठ बदलि सकैत अछि। अन्तिम मुद्रित संस्करणमे इच्छानुसार एहि प्रवेशिकासभमे पृष्ठसंख्या जोड़ल जा सकैत अछि।

अध्याय ६८६ — शब्दानुक्रमणिका हेतु अ-क प्रवेशिकाएँ

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “शब्दानुक्रमणिका हेतु अ-क प्रवेशिकाएँ” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६८७ — शब्दानुक्रमणिका हेतु ख-त प्रवेशिकाएँ

मूल पाठक अंश — शब्दानुक्रमणिका हेतु ख-त प्रवेशिकाएँ केँ बुझबाक सर्वोत्तम तरीका तुलना आ प्रयोग अछि। समान देखाइत रूपसभकेँ एक ठाम राखि भेद चिन्हू, विपरीत उदाहरण खोजू, आ ओहि भेदक अर्थ वा वाक्यगत परिणाम स्पष्ट करू।

अध्याय ६८८ — शब्दानुक्रमणिका हेतु प-म प्रवेशिकाएँ

मूल पाठक अंश — “शब्दानुक्रमणिका हेतु प-म प्रवेशिकाएँ” विषयकेँ नियमक सूची मात्र नहि, भाषा-प्रयोगक व्यवस्थित पक्ष रूपमे बुझल जाए। परिभाषा पहिल चरण अछि;

अध्याय ६८९ — शब्दानुक्रमणिका हेतु य-ह प्रवेशिकाएँ

मूल पाठक अंश — शब्दानुक्रमणिका हेतु य-ह प्रवेशिकाएँ पर व्यवस्थित अधिकार लेल तीन प्रश्न उपयोगी छथि: एकर रूप की अछि, एकर कार्य की अछि, आ एकर प्रयोगक सीमा कतय अछि? एहि तीनू प्रश्नक उत्तर उदाहरणसँ जाँचल जाए, कारण केवल नाम वा परिभाषा याद कएलासँ व्यवहारिक...

अध्याय ६९० — अभ्यास-उत्तरमाला सूचक

मूल पाठक अंश — एहि अध्यायक केन्द्र “अभ्यास-उत्तरमाला सूचक” अछि। अध्ययन करैत समय मूल उदाहरण पहिने देखू, तकर बाद नियम बनाउ, आ फेर नब उदाहरणपर नियम लागू कऽ जाँचू।

अध्याय ६९१ — पुस्तकक उपयोग-विधि

मूल पाठक अंश — २. कठिन विषयक बाद तुरन्त अभ्यास करू। ४. लेखन करैत समय रचना-विधा अनुसार अध्याय ६७६-३९७ देखू। ५. सम्पादनक अन्तिम

चरणमे अध्याय ९०८-५७४क जाँचसूची अपनाउ। ६. विशिष्ट शब्द/विषय खोजबाक लेल अध्याय १०७२-६८९क विषय/शब्द प्रवेशिका उपयोग करू।

अध्याय ६९२ — अन्तिम सम्पादकीय जाँचसूची

मूल पाठक अंश — २. इकाई-शीर्षक आ अध्याय-विषय मेल खाइत अछि? ४. एके पारिभाषिक शब्दक अर्थ बीचमे बदलल नहि? ५. तत्सम/तद्भव/देशज शब्द विषयक मूल्य-निर्णय संतुलित अछि? ६. उद्धरण, नाम, तिथि आ विशिष्ट स्रोत-ज जानकारी बिना आधारक नहि?

अध्याय ६९३ — पुस्तक-समापन

मूल पाठक अंश — “मैथिली व्याकरण आ रचना”क एहि विस्तृत संस्करणमे भाषा-वर्णन, व्याकरणिक रूप, वाक्यविन्यास, अर्थ, ध्वनि, शैली, व्यावहारिक रचना, सम्पादन, प्रूफ-पठन आ स्वाध्याय-अभ्यासकँ एकहि क्रममे जोड़ल गेल अछि।

अध्याय ६९४-७६८ : भाषा-विज्ञान : तीन भाषा-आधारित आरम्भिक तुलनात्मक विभाग

अध्याय ६९४ — भाषा-विज्ञान के स्वरूप आरो वैज्ञानिक तरीका

मूल पाठक अंश — भाषा-विज्ञान (Linguistics) भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन छै। एकर काम ई नै जे कोन रूप ‘उच्च’ आरो कोन रूप ‘नीच’ कहलौ जाय; एकर काम ई देखनाय छै जे लोग सचमुच कोना बोलै, सुनै, शब्द बनावै, वाक्य जोड़ै आरो संदर्भ अनुसार अर्थ निकालै छै।

अध्याय ६९५ — ध्वनिविज्ञान: बोलैवला ध्वनि कोना बनै छै

मूल पाठक अंश — ध्वनिविज्ञान (Phonetics) वास्तविक बोलल ध्वनि के अध्ययन छै। फेफड़ा सँ हवा निकलै छै, कंठ सँ स्वरयंत्र ओकरा कंपन दे सकै छै, फेर जीभ, तालु, दाँत, ओठ आरो नाक हवा के रास्ता बदली कऽ अलग ध्वनि बनावै छै।

अध्याय ६९६ — ध्वनितत्त्व: ध्वनिम, रूपांतर आरो न्यूनतम भेद

मूल पाठक अंश — ध्वनितत्त्व (Phonology) पूछै छै जे भाषा के भीतर कोन ध्वनि अर्थ अथवा शब्द-पहचान बदलै छै, आरो कोन ध्वनि केवल उच्चारणक रूपांतर छै। जौन सबसे छोट ध्वनि-भेद शब्द के पहचान बदलि दे, ओकरा ध्वनिम (phoneme) के स्तर पर देखलौ जाय छै।

अध्याय ६९७ — लिपि, IPA आरो ध्वनि-लिप्यंतरण

मूल पाठक अंश — देवनागरी लेखन-पद्धति ठेठी-अंगिका के व्यवहारिक आधार छै, मुदा भाषा-विज्ञान मँ उच्चारण के सूक्ष्म अंतर देखाबै लेली अंतरराष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला (IPA) उपयोगी छै।

अध्याय ६९८ — रूपविज्ञान: शब्द के भीतर के बनावट

मूल पाठक अंश — रूपविज्ञान (Morphology) शब्द के भीतर अर्थ अथवा व्याकरणिक काम करैवला सबसे छोट इकाई के अध्ययन छै। एहन इकाई के रूपिम (morpheme) कहलौ जाय छै। ‘लइका सभ’ मँ लइका मूल शब्द छै आरो सभ समूह/बहुवचन के संकेत दे सकै छै;

अध्याय ६९९ — शब्द-वर्ग, शब्द-निर्माण आरो शब्दकोशीय इकाई

मूल पाठक अंश — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, उत्तरसर्ग, समुच्चयबोधक, निपात आदि शब्द-वर्ग के पहचान केवल अर्थ सँ नै होय; वाक्य मँ स्थान, रूप-परिवर्तन आरो संगति सेहो देखलौ जाय। ‘मोहन’, ‘किताब’, ‘पानी’ संज्ञा जकाँ बरतै;

अध्याय ७०० — वाक्यविज्ञान: पदक्रम, पदसमूह आरो निर्भरता

मूल पाठक अंश — वाक्यविज्ञान (Syntax) देखै छै जे शब्द कोना समूह बनाय कऽ वाक्य रचै छै। ठेठी-अंगिका मँ सामान्य विधानवाचक क्रम प्रायः कर्ता-कर्म-क्रिया होय छै: ‘हम्मै पोथी पढ़ै छियै।’ अंग्रेजी के सामान्य Subject-Verb-Object क्रम सँ ई अलग छै।

अध्याय ७०१ — निषेध, प्रश्न, जटिल वाक्य आरो सूचना-संरचना

मूल पाठक अंश — निषेध, प्रश्न, आज्ञा, शर्त, कारण आरो संबंधी उपवाक्य वाक्यक उच्च स्तरक ढाँचा देखावै छै। 'हम्मैं नै जइवौं' मँ निषेध नै क्रिया-समूह के नकारै छै। 'तों की खरीदलहऽ?' मँ प्रश्नवाचक पद सूचना माँगै छै।

अध्याय ७०२ — अर्थविज्ञान: शब्दार्थ सँ वाक्यार्थ धरि

मूल पाठक अंश — अर्थविज्ञान (Semantics) भाषिक रूप के अर्थक व्यवस्थित अध्ययन छै। शब्द के अर्थ केवल शब्दकोशक एक पंक्ति नै; ओकर संदर्भ, चयन-सीमा, बहुअर्थकता, पर्याय, विलोम, ऊपर-नीचा वर्ग संबंध आरो रूपक प्रयोग अलग-अलग स्तर पर देखलौ जाय।

अध्याय ७०३ — प्रयोगविज्ञान आरो प्रवचन: संदर्भ मँ अर्थ

मूल पाठक अंश — प्रयोगविज्ञान (Pragmatics) पूछै छै जे वक्ता कोन परिस्थिति मँ की कहना चाहै छै। 'दरवाजा बंद छै' केवल तथ्य हो सकै छै, मुदा ठंडा हवा चलैत होय तऽ ई अप्रत्यक्ष निवेदन सेहो हो सकै छै—दरवाजा बंद करी। अर्थ के ई हिस्सा शब्दकोश सँ अकेला नै निकलै।

अध्याय ७०४ — समाजभाषाविज्ञान: सहभाषा, रजिस्टर आरो भाषिक पहचान

मूल पाठक अंश — समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) भाषा आरो समाज के संबंध देखै छै। एक्के वक्ता घर, विद्यालय, बजार, सभा, फोन आरो लिखित लेख मँ अलग रूप चुनि सकै छै। ई असंगति नै; संदर्भ अनुसार रजिस्टर (register) बदलनाय भाषिक क्षमता के हिस्सा छै।

भाषिक रूप सामाजिक पदानुक्रम, उमेर, लिङ्ग, क्षेत्र आ परिस्थितिक बोधसँ बदलि सकैत अछि। अध्ययनमे वक्ताक सहमति, प्रतिनिवेदन आ क्षेत्रीय विकल्पक सम्मान अनिवार्य अछि।

अध्याय ७०५ — ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान आरों तुलनात्मक तरीका

मूल पाठक अंश — भाषा समय के संग बदलै छै। ध्वनि, शब्दार्थ, रूप, वाक्यरचना आरों सामाजिक प्रयोग सभ बदलि सकै छै। ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान (Historical Linguistics) एहि बदलावक क्रम आरों कारण के प्रमाण सहित समझै के प्रयास छै।

अध्याय ७०६ — भाषा-प्रकारिकी आरों समानान्तर तुलना

मूल पाठक अंश — भाषा-प्रकारिकी (Typology) दुनिया के भाषा सभ में संरचनागत समानता आरों फरक के पैटर्न खोजै छै। SOV/SVO, preposition/postposition, adjective-noun क्रम, relative clause के स्थान, case marking, agreement जकाँ मानक तुलना-बिंदु छै।

अध्याय ७०७ — मनोभाषाविज्ञान, भाषा-अर्जन आरों बहुभाषिकता

मूल पाठक अंश — मनोभाषाविज्ञान (Psycholinguistics) देखै छै जे मनुष्य भाषा कोना सुनै, पहचानै, शब्द खोजै, वाक्य बनाबै आरों स्मृति में राखै छै। बोलैत समय गलती, रुकावट, शब्द खोजै में देर आरों अधूरा वाक्य सेहो भाषा-प्रक्रिया के उपयोगी डेटा होय सकै छै।

अध्याय ७०८ — क्षेत्रकार्य, कॉर्पस, दस्तावेजीकरण आरों संगणकीय भाषा-विज्ञान

मूल पाठक अंश — क्षेत्रकार्य (fieldwork) में भाषा वास्तविक वक्तासँ सीखलौ जाय। सहमति लिअ, रिकॉर्डिंगक उद्देश्य साफ बताउ, जरूरत होय तऽ वक्ताक नाम गुप्त राखू। प्रत्येक फाइलक तारीख, जगह, वक्ता-कोड, विषय, शैली आरों स्रोत-विवरण (metadata) लिखू।

कॉर्पसक आवृत्ति वर्णनात्मक प्रमाण अछि, वैधानिक वर्तनी-निर्णय नहि। नमूना-चयन, पाठ-लाइसेन्स, सामान्यीकरण, annotation आ पुनरुत्पादनीय प्रक्रियाक विवरण देल जाए।

अध्याय ७०९ — भाषा-विज्ञान के स्वरूप आ वैज्ञानिक तरीका

मूल पाठक अंश — भाषा-विज्ञान (Linguistics) भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन हए। एकर काम ई फैसला करब नहि हए कि कोन रूप 'बड़' आ कोन रूप 'छोट' हए; एकर काम ई देखब हए कि लोग असल में कइसे बोलै, सुनै, शब्द बनावै, वाक्य जोड़ै आ संदर्भ से अर्थ निकालै हए।

अध्याय ७१० — ध्वनिविज्ञान: बोलल ध्वनि कइसे बनै हए

मूल पाठक अंश — ध्वनिविज्ञान (Phonetics) असल बोलल ध्वनि के अध्ययन हए। फेफड़ा से हवा ऊपर आवै हए, कंठ में स्वरयंत्र कंपन कर सकै हए, फेर जीभ, तालु, दाँत, ओठ आ नाक हवा के रास्ता बदल के अलग ध्वनि बनावै हए।

अध्याय ७११ — ध्वनितत्त्व: ध्वनिम, रूपांतर आ न्यूनतम भेद

मूल पाठक अंश — ध्वनितत्त्व (Phonology) देखै हए कि भाषा में कोन ध्वनि अर्थ चाहे शब्द-पहचान बदलै हए आ कोन ध्वनि खाली उच्चारण के रूपांतर हए। अर्थ बदलैवाला सबसे छोट विरोध ध्वनिम (phoneme) के संकेत दे सकै हए।

अध्याय ७१२ — लिपि, IPA आ ध्वनि-लिप्यंतरण

मूल पाठक अंश — बज्जिका देवनागरी में लिखल जाइ हए। भाषा-विज्ञान में सूक्ष्म उच्चारण लिखै ला International Phonetic Alphabet (IPA) उपयोगी हए। IPA सामान्य वर्तनी के बदले ला नहि, शोध-नोट ला हए।

अध्याय ७१३ — रूपविज्ञान: शब्द के भीतर के बनावट

मूल पाठक अंश — रूपविज्ञान (Morphology) शब्द के भीतर अर्थ चाहे व्याकरणिक काम करैवाला छोट इकाई के अध्ययन हए। 'लइका सभ' में लइका मूल रूप हए आ सभ समूह/बहुवचन बतावै हए। 'घर के', 'बजार से', 'खेत में' में के, से, में संबंध बतावै हए।

अध्याय ७१४ — शब्द-वर्ग, शब्द-निर्माण आ शब्दकोशीय इकाई

मूल पाठक अंश — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, परसर्ग, समुच्चयबोधक, निपात आदि के पहचान केवल अर्थ से नहि, वाक्य में ओकर जगह आ व्यवहार से होइ हए। ‘मोहन’, ‘किताब’, ‘पानी’ संज्ञा; ‘नीक’ विशेषण; ‘गेलक’, ‘जा रहल हऽ’ क्रिया-समूह हए।

अध्याय ७१५ — वाक्यविज्ञान: पदक्रम, पदसमूह आ निर्भरता

मूल पाठक अंश — वाक्यविज्ञान (Syntax) शब्द के समूह आ वाक्य के ढाँचा देखै हए। बज्जिका में सामान्य विधानवाचक क्रम प्रायः कर्ता-कर्म-क्रिया हए: ‘मोहन किताब किनलक।’ ‘मोहन बजार से किताब किनलक’ में बजार से स्रोत/अलगाव के जानकारी देहए।

अध्याय ७१६ — निषेध, प्रश्न, जटिल वाक्य आ सूचना-संरचना

मूल पाठक अंश — ‘हम नहि जइबइ’ में नहि नकार हए; सहज संदर्भ में ‘तू ना जा’ जइसन रूप सेहो चलै हए। ‘तू कहाँ जा रहल हऽ?’ सूचना-प्रश्न हए। ‘रउआ कइसे हई?’ आदरसूचक संबोधन के साथ प्रश्न हए।

अध्याय ७१७ — अर्थविज्ञान: शब्दार्थ से वाक्यार्थ

मूल पाठक अंश — अर्थविज्ञान (Semantics) शब्द, पदसमूह आ वाक्य के भाषिक अर्थ के अध्ययन हए। पर्याय, विलोम, बहुअर्थकता, वर्ग-संबंध, भाग-संबंध, रूपक आ अस्पष्टता सभ एही में आवै हए। ‘किताब’, ‘पानी’, ‘लइका’ के अर्थ अलग वर्ग बनावै हए;

अध्याय ७१८ — प्रयोगविज्ञान आ प्रवचन: संदर्भ में अर्थ

मूल पाठक अंश — प्रयोगविज्ञान (Pragmatics) भाषा के संदर्भगत अर्थ देखै हए। ‘रउआ से निवेदन हए जे बैठक में समय पर पहुँची’ में व्याकरण के साथ सामाजिक आदर आ speech act दूनू काम करै हए।

अध्याय ७१९ — समाजभाषाविज्ञान: सहभाषा, रजिस्टर आ पहचान

मूल पाठक अंश — समाजभाषाविज्ञान भाषा के सामाजिक व्यवहार देखै हए। घरक सहज रूप 'तू कइसे हऽ?' आ आदर के रूप 'रउआ कइसे हई?' एके भाषा के अलग सामाजिक चुनाव हए। इलाका, उमिर, पेशा, शिक्षा, परिवार, शहर-गाँव, औपचारिकता आ संपर्क भाषा से रूप बदल सकै हए।

अध्याय ७२० — ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान आ तुलनात्मक तरीका

मूल पाठक अंश — भाषा समय के साथ बदलै हए। ध्वनि, अर्थ, रूप, वाक्यरचना आ सामाजिक व्यवहार सभ में बदलाव हो सकै हए। Historical linguistics पुरान पाठ, नियमित correspondence आ तुलनात्मक डेटा से ई बदलाव समझै हए।

अध्याय ७२१ — भाषा-प्रकारिकी आ समानान्तर तुलना

मूल पाठक अंश — भाषा-प्रकारिकी (Typology) भाषा सभक संरचनागत पैटर्न तुलना करै हए। कर्ता-कर्म-क्रिया/कर्ता-क्रिया-कर्म (SOV/SVO), उत्तरसर्ग/पूर्वसर्ग (postposition/preposition), विशेषण-संज्ञा क्रम (adjective-noun order), कारक-चिह्नन (case marking),...

अध्याय ७२२ — मनोभाषाविज्ञान, भाषा-अर्जन आ बहुभाषिकता

मूल पाठक अंश — मनोभाषाविज्ञान (Psycholinguistics) देखै हए कि दिमाग भाषा कइसे सुनै, शब्द कइसे पहचानै, वाक्य कइसे बनावै आ याद कइसे रखै हए। बोलै में रुकावट, स्व-सुधार (self-correction) आ शब्द खोजै के समय उपयोगी आँकड़ा हए।

अध्याय ७२३ — क्षेत्रकार्य, कॉर्पस, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञान

मूल पाठक अंश — क्षेत्रकार्य (Fieldwork) में बोलनिहार से अनुमति लिअ, रिकॉर्डिंग के उद्देश्य बताउ, फाइल के तारीख, जगह आ वक्ता-कोड लिखू। संवेदनशील जानकारी सुरक्षित राखी आ एके सवाल अलग ढंग से पूछ के संगति (consistency) जाँची।

अध्याय ७२४ — भाषा-विज्ञानक स्वरूप आ वैज्ञानिक पद्धति

मूल पाठक अंश — भाषा-विज्ञान (Linguistics) भाषाक वैज्ञानिक अध्ययन अछि। एकर उद्देश्य कोन रूप 'श्रेष्ठ' आ कोन रूप 'हीन' ठहरायब नहि, बल्कि ई बुझब अछि जे वास्तविक वक्ता ध्वनि कोना उत्पन्न करैत छथि, शब्द कोना बनैत अछि, वाक्य कोना संगठित होइत अछि आ...

अध्याय ७२५ — ध्वनिविज्ञान: वाक्-ध्वनि कोना बनैत अछि

मूल पाठक अंश — ध्वनिविज्ञान (Phonetics) वास्तविक वाक्-ध्वनिक अध्ययन अछि। फेफड़ासँ हवा ऊपर अबैत अछि, कण्ठमे स्वरयन्त्र कम्पन उत्पन्न कऽ सकैत अछि, आ जिह्वा, तालु, दाँत, ओठ तथा नासिका वायु-मार्ग बदलि भिन्न ध्वनि बनबैत अछि।

अध्याय ७२६ — ध्वनितत्त्व: ध्वनिम, रूपान्तर आ न्यूनतम भेद

मूल पाठक अंश — ध्वनितत्त्व (Phonology) भाषाक भीतर अर्थभेदक ध्वनि-विरोध आ ध्वनिक संगठनक अध्ययन अछि। जे ध्वनि-भेद शब्द वा रूपक पहचान बदलि सकए, ओकरा ध्वनिम (phoneme)क स्तरपर देखल जाइत अछि; वास्तविक उच्चरित ध्वनि phone कहल जाइत अछि।

अध्याय ७२७ — लिपि, IPA आ ध्वनि-लिप्यन्तरण

मूल पाठक अंश — मैथिली देवनागरी आ पारम्परिक तिरहुता दुनू लिपिसँ जुड़ल अछि; आधुनिक व्यावहारिक गद्यमे देवनागरी व्यापक अछि। भाषा-विज्ञानमे सूक्ष्म उच्चारण लिखबाक लेल International Phonetic Alphabet (IPA) उपयोगी अछि।

अध्याय ७२८ — रूपविज्ञान: शब्दक आन्तरिक संरचना

मूल पाठक अंश — रूपविज्ञान (Morphology) शब्दक भीतर अर्थ वा व्याकरणिक कार्य करैत सभसँ छोट इकाइक अध्ययन अछि। एहन इकाई रूपिम (morpheme) कहल जाइत अछि। 'पोथी सभ'मे पोथी मूल शब्द आ सभ समूह/बहुवचनक संकेत दे सकैत अछि;

अध्याय ७२९ — शब्द-वर्ग, शब्द-निर्माण आ शब्दकोशीय इकाई

मूल पाठक अंश — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, परसर्ग, समुच्चयबोधक, निपात आदि शब्द-वर्गक पहचान केवल अर्थसँ नहि, वाक्यमे स्थान, रूप-परिवर्तन आ संगति-सँ सेहो होइत अछि। ‘राम’, ‘पोथी’, ‘पानि’ संज्ञा; ‘नीक’ विशेषण;

अध्याय ७३० — वाक्यविज्ञान: पदक्रम, पदसमूह आ निर्भरता

मूल पाठक अंश — वाक्यविज्ञान (Syntax) शब्दक समूह आ वाक्य-संरचनाक अध्ययन अछि। मैथिलीमे सामान्य विधानवाचक क्रम प्रायः कर्ता-कर्म-क्रिया होइत अछि: ‘हम पोथी पढ़ैत छी।’ अंग्रेजीक सामान्य Subject-Verb-Object क्रमसँ ई भिन्न अछि।

अध्याय ७३१ — निषेध, प्रश्न, जटिल वाक्य आ सूचना-संरचना

मूल पाठक अंश — निषेध, प्रश्न, आज्ञा, शर्त, कारण आ सम्बन्धी उपवाक्य वाक्यक उच्चतर संरचना देखबैत अछि। ‘अहाँ की पढ़ैत छी?’ खुला प्रश्न अछि; ‘अहाँ कोन पोथी पढ़ैत छी?’ चयनक क्षेत्र माँगैत अछि।

अध्याय ७३२ — अर्थविज्ञान: शब्दार्थसँ वाक्यार्थ

मूल पाठक अंश — अर्थविज्ञान (Semantics) भाषिक अर्थक व्यवस्थित अध्ययन अछि। पर्याय, विलोम, बहुअर्थकता, वर्ग-संबंध, भाग-संबंध, रूपक, अर्थ-विस्तार आ अस्पष्टता एहि क्षेत्रमे अबैत अछि। ‘हमरा पानि चाही’मे अनुभवकर्ता/आवश्यकताधारी ‘हमरा’ रूपमे अछि।

अध्याय ७३३ — प्रयोगविज्ञान आ प्रवचन: संदर्भमे अर्थ

मूल पाठक अंश — प्रयोगविज्ञान (Pragmatics) संदर्भमे भाषाक अर्थ देखैत अछि। एक वाक्य सूचना, अनुरोध, आदेश, चेतावनी, व्यंग्य वा संकेत बनि सकैत अछि। वास्तविक आशय वक्ता, श्रोता, परिस्थिति आ साझा ज्ञानपर निर्भर होइत अछि।

अध्याय ७३४ — समाजभाषाविज्ञान: सहभाषा, रजिस्टर आ भाषिक पहचान

मूल पाठक अंश — समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) भाषा आ समाजक परस्पर सम्बन्धक अध्ययन अछि। एक वक्ता घर, विद्यालय, कार्यालय, साहित्य, मंच आ डिजिटल संदेशमे भिन्न रजिस्टर चुनि सकैत छथि। ई भाषिक दक्षताक हिस्सा अछि।

अध्याय ७३५ — ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान आ तुलनात्मक पद्धति

मूल पाठक अंश — भाषा समयक संग बदलैत अछि। ध्वनि, शब्दार्थ, रूपविज्ञान, वाक्यविन्यास आ सामाजिक प्रयोगमे परिवर्तन होइत रहैत अछि। Historical Linguistics पुरान पाठ, नियमित correspondence आ तुलनात्मक प्रमाणसँ एहि परिवर्तनक इतिहास पुनर्निर्मित करैत अछि।

अध्याय ७३६ — भाषा-प्रकारिकी आ समानान्तर तुलना

मूल पाठक अंश — भाषा-प्रकारिकी (Typology) विभिन्न भाषामे संरचनागत पैटर्नक तुलना करैत अछि। SOV/SVO, postposition/preposition, adjective-noun क्रम, case marking, agreement, relative clause आ negation सन मानक बिंदु उपयोगी अछि।

अध्याय ७३७ — मनोभाषाविज्ञान, भाषा-अर्जन आ बहुभाषिकता

मूल पाठक अंश — मनोभाषाविज्ञान (Psycholinguistics) भाषाक मानसिक प्रक्रिया—श्रवण, शब्द-पहचान, वाक्य-निर्माण, स्मृति, त्रुटि आ पुनःसुधार—क अध्ययन अछि। बोलैत समयक विराम आ self-correction सेहो उपयोगी डेटा अछि।

अध्याय ७३८ — क्षेत्रकार्य, कॉर्पस, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञान

मूल पाठक अंश — क्षेत्रकार्य (Fieldwork)मे वक्ताक सहमति, रिकॉर्डिंगक उद्देश्य, गोपनीयता, फाइल-नाम, तारीख, स्थान, वक्ता-कोड, विधा आ सन्दर्भक स्रोत-विवरण (metadata) सुरक्षित राखब आवश्यक अछि। एक नियमक पुष्टि लेल अलग उदाहरण आ अलग वक्तासँ जाँच करू।

अध्याय ७३९ — भाषा-विज्ञान की थिक

मूल पाठक अंश — भाषा मनुष्यक ओ व्यवस्था थिक, जाहिसँ ओ ध्वनि (वा संकेत) केँ अर्थसँ जोड़ि विचारक आदान-प्रदान करैत अछि। एहि व्यवस्थाक व्यवस्थित अध्ययन भाषा-विज्ञान थिक। ध्यान राखू—भाषा-विज्ञानी कोनो एक भाषा नीक बजबाक विशेषज्ञ नहि होइत;

अध्याय ७४० — वंश आ वर्गीकरण

मूल पाठक अंश — जेना मनुष्यक वंशावली (पञ्जी) होइत अछि, तहिना भाषोक। जे भाषा एक साझा पूर्वज-भाषासँ निकलल हो, ओ सभ एक भाषा-परिवार बनबैत अछि। मैथिली, ठेठी-अंगिका आ बज्जिका—तीनू इंडो-यूरोपीय (Indo-European) महापरिवारक सदस्य थिक;

अध्याय ७४१ — स्वन-विज्ञान

मूल पाठक अंश — स्वन-विज्ञान (phonetics) ध्वनिक शारीरिक पक्ष देखैत अछि—मुँहक कोन भाग सक्रिय अछि, हवा केना बहैत अछि, कण्ठ कैपैत अछि की नहि। स्वनम-विज्ञान (phonology) ओहि ध्वनि-भेदकेँ देखैत अछि जे अर्थ बदलि दैत अछि।

अध्याय ७४२ — स्वर-व्यवस्था

मूल पाठक अंश — स्वर (vowel) ओ ध्वनि थिक जकर उच्चारणमे हवाक रस्तामे कोनो पूर्ण अवरोध नहि होइत—जीभक ऊँचाई आ अगिला/पछिला स्थिति, आ ओठक गोलाई—एही तीन बातसँ स्वर-भेद बनैत अछि। स्वरक तीन आयाम—ऊँचाई (height): ऊँच (इ, उ) · मध्य (ए, ओ) · नीच (आ)।

अध्याय ७४३ — व्यंजन-व्यवस्था

मूल पाठक अंश — व्यंजन (consonant) ओ ध्वनि थिक जकर उच्चारणमे हवाक रस्तामे कोनो-न-कोनो अवरोध होइत अछि। तीनू भाषाक व्यंजन-सूची मूलतः साझा अछि—पचीस वर्गीय (स्पर्श) व्यंजन, चारि अन्तःस्थ, चारि ऊष्म, आ दुइ मूर्धन्य ताड़नजात (ड़, ढ)।

अध्याय ७४४ — अक्षर, बलाघात आ लय

मूल पाठक अंश — अक्षर (syllable) उच्चारणक ओ इकाई थिक जकर केन्द्रमे प्रायः एकटा स्वर रहैत अछि। अक्षरक तीन अङ्ग—आरम्भ (onset, स्वरसँ पहिनेक व्यंजन), केन्द्र (nucleus, स्वर) आ अन्त (coda, स्वरक बादक व्यंजन)। जेना घर = घ (onset) + अ (nucleus) + र (coda)।

अध्याय ७४५ — रूप-ध्वनि-विज्ञान

मूल पाठक अंश — रूप-ध्वनि-विज्ञान (morphophonology) ध्वनि-विज्ञान आ रूप-विज्ञानक बीचक सेतु थिक। जखन दुइ रूपिम (morpheme) जुड़ैत अछि, तखन सन्धि-स्थलपर ध्वनि बदलि जाइत अछि—एही परिवर्तनक अध्ययन रूप-ध्वनि-विज्ञान थिक।

अध्याय ७४६ — रूप-विज्ञानक आधार

मूल पाठक अंश — स्वन-विज्ञान (भाग २) ई देखैत छल जे भाषामे कोन-कोन ध्वनि अछि आ ओ केना जुड़ैत अछि। रूप-विज्ञान (morphology) एहिसँ एक सोपान ऊपर उठैत अछि—ई देखैत अछि जे ध्वनि सभ मिलि केना अर्थपूर्ण एकाइ बनबैत अछि, आ ओ एकाइ सभ मिलि केना शब्द गढ़ैत अछि।

अध्याय ७४७ — संज्ञा-रूपायन

मूल पाठक अंश — तीनू भाषामे एकवचन अचिह्नित (unmarked) रहैत अछि—मूल शब्द अपने एकवचन थिक। बहुवचन बनबाक लेल पाछाँ एकटा स्वतन्त्र-प्राय शब्द जोड़ल जाइत अछि; ई हिन्दीक -एँ/-ओं जकाँ धातुमे घुलल प्रत्यय नहि थिक, अपितु अलग टुकड़ी थिक।

अध्याय ७४८ — सर्वनाम आ आदर-स्तर

मूल पाठक अंश — सर्वनाम रूप-विज्ञानक ओ कोण थिक जतय मागधी-वंशक आदर-व्यवस्था (honorificity) सभसँ स्पष्ट देखाइत अछि। तीनू भाषामे उत्तम पुरुष (हम), मध्यम पुरुष (तों/अहाँ) आ अन्य पुरुष (ओ/ई) अछि;

अध्याय ७४९ — विशेषण, संख्या आ वर्गक

मूल पाठक अंश — हिन्दीमे विशेषण संज्ञाक लिङ्ग-वचनसँ मेल खाइत अछि (अच्छा लड़का / अच्छी लड़की)। मैथिलीमे व्याकरणिक लिङ्ग दुर्बल रहबाक कारणे (अध्याय ७४७) अधिकांश विशेषण अपरिवर्तनशील रहैत अछि—एक्के रूप सभ ठाम।

अध्याय ७५० — क्रिया-रूपायन — काल, पक्ष आ वृत्ति

मूल पाठक अंश — क्रिया रूप-विज्ञानक सभसँ समृद्ध क्षेत्र थिक। एक्के क्रिया-रूपमे कम-सँ-कम तीन आयामक सूचना घुलल रहैत अछि—काल (tense: कहिया), पक्ष (aspect: काज पूर्ण भेल की चलि रहल), आ वृत्ति (mood: निश्चय, आज्ञा, सम्भावना)।

अध्याय ७५१ — क्रिया-सामञ्जस्य — मागधी-वंशक विश्व-प्रसिद्ध अन्विति

मूल पाठक अंश — जखन क्रियाक रूप वाक्यक कोनो सहभागी (कर्ता, कर्म आदि) क अनुसार बदलैत अछि, ओकरा सामञ्जस्य वा अन्विति (agreement) कहल जाइत अछि। अंग्रेजीमे मात्र कर्ताक वचन-पुरुषसँ मेल होइत अछि (he comes / they come)। हिन्दीमे कर्ता वा कर्मक लिङ्ग-वचनसँ।

अध्याय ७५२ — व्युत्पत्ति आ समास

मूल पाठक अंश — अखन धरि हम रूपायन देखलहुँ—पुरान शब्दक रूप बदलब। आब व्युत्पत्ति (derivation)—प्रत्यय जोड़ि सर्वथा नव शब्द गढ़ब। एहिमे प्रायः शब्दक श्रेणी बदलि जाइत अछि (क्रिया→संज्ञा, संज्ञा→विशेषण)।

अध्याय ७५३ — पद-क्रम — SOV आ ओकर लोच

मूल पाठक अंश — रूप-विज्ञान (भाग ३) शब्दक भीतरक व्यवस्था देखैत छल। वाक्य-विन्यास (syntax) एहिसँ ऊपर उठि शब्द सभ मिलि केना वाक्य बनबैत अछि—ई देखैत अछि। वाक्यमे शब्दक क्रम, हुनकर आपसी सम्बन्ध, आ पैघ-सँ-पैघ रचना केना बनैत अछि—ई सभ एकर विषय थिक।

अध्याय ७५४ — कारक-संरेखण आ अन्विति — वाक्यगत सम्बन्ध

मूल पाठक अंश — प्रत्येक भाषाकें ई तय करय पड़ैत अछि, जे अकर्मक क्रियाक कर्ता (जेना राम सुतल) आ सकर्मक क्रियाक कर्ता (राम रोटी खेलक) कें एक्के तरहें चिह्नित करी वा भिन्न। एहि व्यवस्थाकें संरेखण (alignment) कहल जाइत अछि।

अध्याय ७५५ — उपवाक्य — समापिका, असमापिका आ सम्बन्धवाचक

मूल पाठक अंश — एक क्रिया-केन्द्र बला वाक्य सरल थिक। जखन एकाधिक स्वतन्त्र वाक्य 'आ, मुदा, तैं' आदिसँ जुड़ैत अछि, ओ संयुक्त (compound) बनैत अछि। जखन एक मुख्य वाक्यक अधीन एक वा बेसी उपवाक्य (subordinate clause) रहैत अछि, ओ मिश्र (complex) थिक।

अध्याय ७५६ — प्रश्न, निषेध आ फोकस

मूल पाठक अंश — शब्द-प्रश्नमे प्रश्नवाचक (के, की, कतय, कहिया, किए) प्रायः अपन ठाम रहैत अछि (in-situ)—अंग्रेजी जकाँ वाक्यक आगाँ अनिवार्य नहि घुसकैत। ई SOV भाषाक साझा लक्षण थिक।

अध्याय ७५७ — अर्थ-विज्ञानक आधार

मूल पाठक अंश — अखन धरि हम भाषाक बाहरी ढाँचा देखलहुँ—ध्वनि (भाग २), शब्द-रचना (भाग ३) आ वाक्य-रचना (भाग ४)। मुदा भाषाक अन्तिम लक्ष्य अर्थ थिक।

अध्याय ७५८ — शब्दार्थ-सम्बन्ध

मूल पाठक अंश — जॉन लायन्स (Semantics, १९७७) देखौलनि जे कोनो शब्दक अर्थ अकेले नहि, अपितु आन शब्दक संग ओकर सम्बन्ध सँ बनैत अछि। 'गरम' केर अर्थ 'ठंढा'क विरोधमे स्पष्ट होइत अछि। एहि सम्बन्ध सभकें अर्थ-सम्बन्ध (sense relations) कहल जाइत अछि।

अध्याय ७५९ — वाक्यार्थ आ अर्थ-परिवर्तन

मूल पाठक अंश — वाक्यक अर्थ सदा शब्दक जोड़ नहि होइत। वाच्यार्थ (literal meaning) शब्दक सीधा अर्थ थिक; मुदा प्रायः वक्ता लक्ष्यार्थ (figurative meaning) कहय चाहैत अछि। ‘ओकर हृदय पाथर थिक’ मे शब्दशः अर्थ असम्भव—एतय लक्ष्यार्थ (कठोरता) अभीष्ट अछि।

अध्याय ७६० — प्रयोग-विज्ञान — सन्दर्भ आ भाषिक व्यवहार

मूल पाठक अंश — 67.1 अर्थ-विज्ञानसँ प्रयोग-विज्ञान धरि अर्थ-विज्ञान शब्द-वाक्यक सन्दर्भ-निरपेक्ष अर्थ देखैत अछि। मुदा असल संवादमे अर्थ सन्दर्भ सँ बनैत अछि—के बाजि रहल, केकरा, कतय, कोन उद्देश्यसँ।

अध्याय ७६१ — समाज-भाषा-विज्ञानक आधार

मूल पाठक अंश — अखन धरि हम भाषाकेँ एकटा व्यवस्थाक रूपमे देखलहुँ—ध्वनि, रूप, वाक्य आ अर्थ। मुदा भाषा शून्यमे नहि, समाजमे जीबैत अछि। के, केकरा संग, कोन अवसरपर, कोन रूपमे बजैत अछि—एहि सभक अध्ययनकेँ समाज-भाषा-विज्ञान (sociolinguistics) कहल जाइत अछि।

अध्याय ७६२ — सहभाषा-भूगोल आ आइसोग्लोस

मूल पाठक अंश — भाषा एक गाम-सँ-दोसर गाम धीरे-धीरे बदलैत अछि। दूरक गामक सहभाषामे स्पष्ट अन्तर, मुदा बीचक गाम सभ एक-दोसरसँ मिलैत-जुलैत—एहि क्रमिक शृंखलाकेँ सहभाषा-सातत्य (dialect continuum) कहल जाइत अछि (चैम्बर्स आ ट्रडगिल, Dialectology, १९८०)।

अध्याय ७६३ — भाषा-सम्पर्क, द्विभाषिकता आ मानकीकरण

मूल पाठक अंश — कोनो भाषा अकेली नहि रहैत—पड़ोसी भाषाक संग निरन्तर सम्पर्कमे रहैत अछि। एहि सम्पर्कक भाषिक परिणामकेँ उरिएल वाइनराइख (Languages in Contact, १९५३) व्यवस्थित रूपे अध्ययन कएलनि।

अध्याय ७६४ — ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान

मूल पाठक अंश — अखन धरिक अध्ययन मुख्यतः समकालिक छल—वर्तमान रूपक। एतय हम कालक्रमिक (diachronic) दृष्टि अपनाएबः भाषा समयक संग केना बदलैत अछि। भाषा-परिवर्तन अनिवार्य आ नियमित थिक—कोनो जीवित भाषा स्थिर नहि रहैत।

अध्याय ७६५ — लिपि-विज्ञानक आधार

मूल पाठक अंश — अखन धरिक सभ भाग मुख्यतः बाजल भाषासँ सम्बन्धित छल—किएक तँ भाषा-विज्ञानमे मूल भाषा ध्वनि थिक, लेखन ओकर बादक आविष्कार। मुदा लेखन मानव-सभ्यताक सभसँ पैघ उपलब्धि थिकः ई भाषाकें काल आ दूरीक पार लऽ जाइत अछि।

लिपि, उच्चारण आ ध्वनिमक तीन अलग स्तर अछि; एकर अदलाबदलीमे सूचना-हानि भऽ सकैत अछि। मूल कोडबिन्दु, Unicode सामान्यीकरण, राउण्ड-ट्रिप परीक्षण आ पाठक पठनीयता जाँचू।

अध्याय ७६६ — तिरहुता / मिथिलाक्षर

मूल पाठक अंश — मैथिलीक अपन पारम्परिक लिपि थिक तिरहुता (जकरा मिथिलाक्षर सेहो कहल जाइत अछि)। शताब्दी धरि मैथिलीक पाण्डुलिपि, पञ्जी-अभिलेख, धार्मिक आ साहित्यिक ग्रन्थ एही लिपिमे लिखल गेल। ई मैथिली-अस्मिताक एकटा गहन प्रतीक थिक।

अध्याय ७६७ — कैथी आ देवनागरी

मूल पाठक अंश — तिरहुता जँ पण्डित-पञ्जीकारक शास्त्रीय लिपि छल, तँ कैथी ओहि क्षेत्रक व्यावहारिक कार्य-लिपि छल। ई सम्पूर्ण बिहार आ पूर्वी उत्तर प्रदेशमे प्रशासन, न्यायालय, महाजनी-बही आ निजी पत्रमे प्रयुक्त होइत छल—मैथिली, ठेठी-अंगिका, बज्जिका, भोजपुरी,...

अध्याय ७६८ — लिप्यन्तरण आ भाषा-प्रौद्योगिकी

मूल पाठक अंश — लिप्यन्तरण (transliteration) एक लिपिक चिह्नों के नियमबद्ध रूपे दोसर लिपिमे बदलव थिक—अर्थ नहि, मात्र ध्वनि-रूप। ई अनुवाद (translation) सँ भिन्न थिक।

अध्याय ७६९-८१३ : भाषा-विज्ञान : विस्तृत रचनात्मक आ प्रयोगाधारित खण्ड

अध्याय ७६९ — भाषा-विज्ञान के स्वरूप, शाखा आरो वैज्ञानिक पद्धति

मूल पाठक अंश — भाषा-विज्ञान (Linguistics) मनुष्यक भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन छै। “वैज्ञानिक” शब्द एतय तीन बात बताबै छै—डेटा देखनाय, जाँच योग्य विश्लेषण बनानाय, आरो दोसर शोधकर्ता द्वारा फेर जाँच सकै जकाँ प्रमाण राखनाय।

अध्याय ७७० — प्राथमिक भाषिक डेटा, क्षेत्रकार्य आरो नैतिकता

मूल पाठक अंश — प्राथमिक भाषिक डेटा ओ सामग्री छै जे सीधे वक्ता, रिकॉर्डिंग, लिखित मूल पाठ अथवा स्वाभाविक संवाद सँ मिलै छै। शब्दसूची उपयोगी छै, मुदा अकेला शब्दसूची सँ वाक्यविन्यास, आदर, सूचना-संरचना अथवा discourse पूरा नै बुझल जा सकै छै।

अध्याय ७७१ — ध्वनिविज्ञान: उच्चारण-यंत्र, व्यंजन आरो स्वर

मूल पाठक अंश — सामान्य बोलल ध्वनि लेली फेफड़ा सँ हवा ऊपर आबै छै। कंठ में vocal folds कंपन करै तऽ voiced ध्वनि, कंपन नै करै तऽ voiceless ध्वनि बनै सकै छै। जीभ, दाँत, मसूड़ा, कठोर तालु, नरम तालु आरो ओठ हवा के रास्ता बदलै छै।

अध्याय ७७२ — ध्वनिक आरो श्रवण ध्वनिविज्ञान

मूल पाठक अंश — बोलल ध्वनि हवा के दबाव में बदलाव छै। मोबाइल/कम्प्यूटर ओकर waveform रिकॉर्ड करै छै। भाषा-विज्ञान में समय

(time), आवृत्ति (frequency), तीव्रता (intensity) आरो spectrum उपयोगी माप है।

अध्याय ७७३ — ध्वनितत्त्व: ध्वनिम, रूपांतर, वितरण आरो न्यूनतम भेद

मूल पाठक अंश — Phone वास्तविक सुनल ध्वनि है; phoneme भाषा के भीतर अर्थ/शब्द-पहचानक व्यवस्थित भेद करैवला अमूर्त इकाई है। / / बीच phoneme, [] बीच वास्तविक phonetic रूप लिखलौ जाय। “एक अक्षर = एक phoneme” माननाय जरूरी नै।

अध्याय ७७४ — अक्षर, मात्रा, नासिकता, syllable आरो prosody

मूल पाठक अंश — Syllable बोलै के एक लयात्मक इकाई है। बहुत भाषा में vowel अथवा syllabic nucleus ओकर केंद्र होय है। सरल ढाँचा CV (का), CVC (घर जकाँ phonetic विश्लेषण पर निर्भर), CCV आदि होय सकै है।

अध्याय ७७५ — IPA, देवनागरी आरो अन्तररेखीय glossing

मूल पाठक अंश — देवनागरी व्यवहारिक लेखन लेली अत्यन्त उपयोगी है; IPA ध्वनि के तुलनात्मक वैज्ञानिक notation लेली उपयोगी है। दुनू के काम अलग है। orthographic transcription पाठकक लिखित रूप बचावै है; broad phonemic transcription अर्थभेदक इकाई;

अध्याय ७७६ — रूपविज्ञान: रूपिम, रूपांतर, शब्द-रूप आरो शब्द-निर्माण

मूल पाठक अंश — Morpheme अर्थ अथवा व्याकरणिक काम करैवला सबसे छोट व्यवस्थित इकाई कहलौ जाय। मुदा लिखित टुकड़ा हर बेर morpheme नै; segmentation वितरण, अर्थ आ paradigm सँ तय होय। मुक्त रूपिम अपने शब्द बनि सकै है; बँधल रूपिम दोसर रूप के संग जुड़ै है।

अध्याय ७७७ — संज्ञा-समूह, सर्वनाम, कारक, संख्या आरो आदर-व्यवस्था

मूल पाठक अंश — संज्ञा-पदसमूह (NP) में संज्ञा के संग संकेत, संख्या, विशेषण, possessor, quantifier, postposition आदि जुड़ि सकै छै। स्रोत-पाठक उदाहरण “ओकर नया किताब मेज पर छै” देखाबै छै जे possessor/विशेषण संज्ञा के पहिने, उत्तरसर्ग संज्ञा-पद के बाद आबै...

अध्याय ७७८ — क्रिया-व्यवस्था: काल, पक्ष, भाव, सहायक, सामंजस्य आरो valency

मूल पाठक अंश — क्रिया-पदसमूह में lexical verb, participle, auxiliary, aspect marker, negation, modal, honorific/person ending जकाँ घटक होय सकै छै।

अध्याय ७७९ — वाक्यविज्ञान: पदक्रम, पदसमूह, dependency आरो जटिल वाक्य

मूल पाठक अंश — स्रोत-पाठ “सुमन किताब पढ़लै” जकाँ कर्ता-कर्म-क्रिया क्रम के सामान्य बताबै छै। “सामान्य” के अर्थ सबसे अधिक neutral pattern; ई कठोर नियम नै। focus, topic, contrast, भारी constituent, कविता, बातचीत में क्रम बदलि सकै छै।

अध्याय ७८० — अर्थविज्ञान, प्रयोगविज्ञान आरो प्रवचन

मूल पाठक अंश — शब्दार्थ केवल शब्दकोशक एक हिन्दी अर्थ नै। एक lexeme के अनेक related sense (polysemy), अलग इतिहास वाला समान रूप (homonymy), synonym, antonym, hyponym, meronym, collocation होय सकै छै।

अध्याय ७८१ — समाजभाषाविज्ञान, मानकीकरण, भाषा-संपर्क आरो शैली

मूल पाठक अंश — स्रोत-पाठ भागलपुर, बाँका, मुंगेर, जमुई, गोड्डा आदि क्षेत्र में रूप-भिन्नता के उल्लेख करै छै; एक ठाम हममें, दोसर ठाम हम; सभ/सब/आरू; ऊ/वैं जकाँ variation दर्ज छै।

अध्याय ७८२ — ऐतिहासिक-तुलनात्मक भाषा-विज्ञान, प्रकारिकी आरो मनोभाषाविज्ञान

मूल पाठक अंश — रिश्तेदार भाषिक रूप तुलना में केवल मिलत-जुलत शब्द देखिकऽ वंश-सम्बन्ध सिद्ध नै होय । comparative method नियमित sound correspondence, basic vocabulary, morphology, shared innovation, loanword exclusion, reconstruction जकाँ कसौटी बरतै छै ।

अध्याय ७८३ — कॉर्पस, शब्दकोश, दस्तावेजीकरण आरो संगणकीय भाषा-विज्ञान

मूल पाठक अंश — Corpus व्यवस्थित, metadata-युक्त भाषिक पाठ/recording संग्रह छै । random इंटरनेट text के ढेरी मात्र corpus नै । genre, speaker, date, region, source, permission, orthography policy, version सब दर्ज होय ।

अध्याय ७८४ — भाषा-विज्ञान के स्वरूप, शाखा आ वैज्ञानिक तरीका

मूल पाठक अंश — भाषा-विज्ञान (Linguistics) मनुष्य के भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन हए । वैज्ञानिक अध्ययन के मतलब हए—आँकड़ा जुटाब, जाँच सकै लायक विश्लेषण बनाब, अपवाद खोजब, आ अइसन नोट राखब जे दोसर शोधकर्ता फेर जाँच सकै ।

अध्याय ७८५ — प्राथमिक आँकड़ा, क्षेत्रकार्य, वक्ता-पुष्टि आ शोध-नैतिकता

मूल पाठक अंश — प्राथमिक आँकड़ा (primary data) ऊ सामग्री हए जे सीधे वक्ता, रिकॉर्डिंग, बातचीत, कथा, गीत, साक्षात्कार, लिखित पांडुलिपि चाहे समकालीन पाठ से मिलै हए ।

अध्याय ७८६ — ध्वनिविज्ञान: उच्चारण-यंत्र, व्यंजन आ स्वर

मूल पाठक अंश — ध्वनिविज्ञान (Phonetics) के तीन मुख्य भाग हए—उच्चारण ध्वनिविज्ञान (articulatory phonetics), ध्वनिक ध्वनिविज्ञान (acoustic

phonetics) आ श्रवण ध्वनिविज्ञान (auditory phonetics)। पहिल बतावै हए ध्वनि शरीर से कइसे बनै हए;

अध्याय ७८७ — ध्वनिक आ श्रवण ध्वनिविज्ञान:तरंग, आवृत्ति, अवधि आ स्पेक्ट्रोग्राम

मूल पाठक अंश — बोलल ध्वनि हवा में दबाव-परिवर्तन के तरंग हए। ध्वनिक ध्वनिविज्ञान (acoustic phonetics) ए तरंग के समय, आवृत्ति आ तीव्रता के रूप में मापै हए।

अध्याय ७८८ — ध्वनितत्त्व: ध्वनिम, ध्वनि-रूपांतर, वितरण आ न्यूनतम जोड़ी

मूल पाठक अंश — ध्वनिम (phoneme) भाषा के एहन अमूर्त ध्वनि-इकाई हए जे शब्द-पहचान/अर्थ में भेद कर सकै हए। एक ध्वनिम के अलग वास्तविक उच्चारण ध्वनि-रूपांतर (allophone) हो सकै हए। ई भेद वर्तनी से तय नहि होइ हए;

अध्याय ७८९ — अक्षरखंड, मात्रा, नासिकता, लय आ स्वराघात

मूल पाठक अंश — अक्षरखंड (syllable) बोलै के लयात्मक इकाई हए। साधारण विश्लेषण में आरंभ (onset), केंद्र/नाभि (nucleus) आ अंत (coda) देखल जाई। देवनागरी अक्षर के एकदम syllable न मानी; लिखित अक्षर आ बोलल अक्षरखंड के सीमा अलग हो सकै हए।

अध्याय ७९० — IPA, देवनागरी, लिप्यंतरण आ अन्तररेखीय व्याख्या

मूल पाठक अंश — देवनागरी रोजक लिखाई के लिपि हए। अन्तरराष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला (International Phonetic Alphabet—IPA) वास्तविक उच्चारण के तकनीकी रूप से दर्ज करै के साधन हए। IPA देवनागरी के बदलै ला नहि; शोध में सूक्ष्म ध्वनि-भेद नोट करै ला हए।

अध्याय ७९१ — रूपविज्ञान: रूपिम, रूपांतर, शब्द-रचना आ पुनरुक्ति

मूल पाठक अंश — रूपिम (morpheme) अर्थ चाहे व्याकरणिक काम वाला सबसे छोट इकाई हए। “लइका सभ” में लइका शब्दमूल हए आ सभ समूह/बहुवचन सूचक स्वतंत्र रूपिम हो सकै हए।

अध्याय ७९२ — संज्ञा-समूह, सर्वनाम, कारक, संख्या, निर्धारक आ आदर

मूल पाठक अंश — संज्ञा-समूह (noun phrase) में मुख्य संज्ञा के साथ संकेत, संबंध, संख्या, विशेषण आ कारक-चिह्न जुड़ सकै हए। “हमर दू गो नयका किताब” में हमर संबंध, दू गो संख्या+गणक, नयका विशेषण आ किताब मुख्य संज्ञा हए।

अध्याय ७९३ — क्रिया-व्यवस्था: काल, पक्ष, भाव, सामंजस्य, प्रेरणार्थक आ संयोजित क्रिया

मूल पाठक अंश — क्रिया (verb) काम, घटना चाहे अवस्था बताबै हए। धातु (root/stem) से अलग रूप बनै हए: खा-, पढ़-, जा-। सहायक क्रिया (auxiliary) हए/हई/हऽ, रहल, रहै, रहथिन जइसन रूप मुख्य क्रिया के काल, पक्ष, व्यक्ति आ आदर साफ कर सकै हए।

अध्याय ७९४ — वाक्यविज्ञान: कर्ता-कर्म-क्रिया, वाक्यांश, निर्भरता आ जटिल वाक्य

मूल पाठक अंश — आधार-पाठ बज्जिका के सामान्य पदक्रम कर्ता-कर्म-क्रिया (Subject–Object–Verb, SOV) दे हए: “राम आम खयलक।” “सीता पोथी पढ़ रहल हए।” ई प्रमुख क्रम हए, कठोर नियम जरूरी नहि। कारक-चिह्न, सूचना-केंद्र आ शैली से क्रम बदल सकै हए।

अध्याय ७९५ — अर्थविज्ञान, प्रयोगविज्ञान आ प्रवचन-विज्ञान

मूल पाठक अंश — अर्थविज्ञान (Semantics) रूप के व्यवस्थित अर्थ के अध्ययन हए। पर्याय (synonymy), विलोम (antonymy), ऊपर-नीचा वर्ग संबंध

(hypernymy/hyponymy), भाग-सम्पूर्ण (meronymy), बहुअर्थकता (polysemy) आ समनामता (homonymy) जइसन संबंध शब्दकोश बनै में...

अध्याय ७१६ — समाजभाषाविज्ञान: सहभाषा, शैली, भाषा-संपर्क आ मानकीकरण

मूल पाठक अंश — समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) भाषा आ समाज के संबंध देखै हए। ए पोथी “सहभाषा” शब्द क्षेत्रीय भाषिक रूप खातिर बरतै हए। बज्जिका में हए/हइ/छै, रउआ/रउरा, सभ/सब जइसन रूपांतर के भूगोल, उम्र, जातीय/पेशागत समूह, शिक्षा आ शैली से संबंध...

अध्याय ७१७ — ऐतिहासिक-तुलनात्मक अध्ययन, भाषा-प्रकारिकी, मनोभाषाविज्ञान आ भाषा-अर्जन

मूल पाठक अंश — ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान (Historical Linguistics) समय के साथ ध्वनि, शब्द, रूप, अर्थ आ वाक्य-रचना के बदलाव देखै हए। पुरान दस्तावेज, शब्द-सूची, लोकगीत, पांडुलिपि, तारीख वाला छपल पाठ आ बुजुर्ग वक्ता के स्मृति अलग तरह के प्रमाण हए।

अध्याय ७१८ — कॉर्पस, शब्दकोश, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञान

मूल पाठक अंश — कॉर्पस (corpus) खोज, गिनती आ विश्लेषण योग्य व्यवस्थित भाषिक संग्रह हए। केवल बहुत फाइल जमा कर देना कॉर्पस नहि; मेटाडेटा (metadata), स्रोत (source), तारीख (date), विधा (genre), वक्ता (speaker), अनुमति (permission), टोकनीकरण...

अध्याय ७१९ — भाषा-विज्ञान: विषय, शाखा, प्रमाण आ पुनरुत्पाद्यता

मूल पाठक अंश — भाषा-विज्ञान मनुष्यक भाषाक वैज्ञानिक अध्ययन अछि। “वैज्ञानिक”क अर्थ केवल कठिन शब्दावली नहि; एकर अर्थ अछि—स्पष्ट प्रश्न, जाँच योग्य आँकड़ा, लिखित पद्धति, सम्भावित प्रतिउदाहरण, आ दोसर शोधकर्ताक फेर जाँच सकबाक व्यवस्था।

अध्याय ८०० — क्षेत्रकार्य, वक्ता-पुष्टि, नैतिकता आ आँकड़ा-प्रबन्ध

मूल पाठक अंश — क्षेत्रकार्य वास्तविक वक्तासँ भाषा-सामग्री व्यवस्थित ढङ्गसँ संकलित करबाक प्रक्रिया अछि। प्रश्नावली, स्वाभाविक बातचीत, कथा, चित्र-वर्णन, नामकरण, अनुवाद, स्वीकार्यता-जाँच आ पुनरावृत्त रिकॉर्डिंग—सभक उपयोग अलग उद्देश्य लेल होइत अछि।

अध्याय ८०१ — उच्चारणाधारित ध्वनिविज्ञान: वाक्-अंग, व्यंजन आ स्वर

मूल पाठक अंश — 3.1 उच्चारणाधारित ध्वनिविज्ञान (articulatory phonetics) उच्चारणाधारित ध्वनिविज्ञान ध्वनि बनबाक शारीरिक प्रक्रियाकेँ देखैत अछि। फेफड़ासँ हवा निकलैत अछि; कंठक स्वरपर्दा कम्पित अथवा अकम्पित रहि सकैत अछि;

अध्याय ८०२ — ध्वनिक/श्रवण ध्वनिविज्ञान: आवृत्ति, अवधि, स्वर-गुण आ स्पेक्ट्रोग्राम

मूल पाठक अंश — 4.1 ध्वनिक ध्वनिविज्ञान (acoustic phonetics) ध्वनि हवा मे दबाव-परिवर्तनक तरंग अछि। रिकॉर्डिंगकेँ समय (time) आ आयाम (amplitude)क तरंग-चित्र, तथा आवृत्ति (frequency) आ समयक स्पेक्ट्रोग्राम (spectrogram)मे देखल जा सकैत अछि।

अध्याय ८०३ — ध्वनितत्त्व: ध्वनिम, ध्वनि-रूपांतर, विरोध, वितरण आ न्यूनतम जोड़ी

मूल पाठक अंश — हम जे वास्तविक ध्वनि सुनैत छी, ओकर सूक्ष्म घटना फोन (phone) कहल जा सकैत अछि। भाषा-व्यवस्थामे जे न्यूनतम ध्वनि-विरोध शब्द वा रूपक पहचान बदलि सकए, ओकरा ध्वनिम (phoneme)क स्तरपर विश्लेषित कएल जाइत अछि।

अध्याय ८०४ — अक्षरखंड, नासिक्यता, लय, शब्दाघात आ स्वर-रेखा

मूल पाठक अंश — बोलल शब्द ध्वनि-खण्डमे व्यवस्थित होइत अछि; प्रत्येक अक्षरखंडक केन्द्र सामान्यतः स्वर होइत अछि। वर्तनीक अक्षर-संख्या आ उच्चारणक अक्षरखंड-संख्या सदिखन समान नहि।

अध्याय ८०५ — देवनागरी, तिरहुता, IPA, लिप्यंतरण आ अन्तररेखीय व्याख्या

मूल पाठक अंश — आधुनिक मुद्रित, प्रशासनिक आ डिजिटल व्यवहारमे देवनागरी व्यापक अछि; मैथिलीक पारम्परिक लिपि तिरहुता/मिथिलाक्षर सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक परम्पराक महत्त्वपूर्ण भाग अछि।

अध्याय ८०६ — रूपविज्ञान: रूपिम, रूप-परिवर्तन, शब्द-निर्माण, समास आ पुनरुक्ति

मूल पाठक अंश — 8.1 रूपविज्ञान (Morphology) आ रूपिम (morpheme) रूपविज्ञान शब्दक भीतरक अर्थपूर्ण वा व्याकरणिक बनावटकेँ देखैत अछि। रूपिम सबसे छोट नियमित अर्थ/व्याकरणिक कामक इकाई मानल जाइत अछि। मुदा देवनागरीक अक्षर अथवा लिखित टुकड़ा अपनेसँ रूपिम नहि;

अध्याय ८०७ — संज्ञा-पदसमूह: सर्वनाम, आदर, कारक, संख्या, निर्धारण आ परिमाण

मूल पाठक अंश — संज्ञा-पदसमूहक प्रधान सामान्यतः संज्ञा अथवा सर्वनाम होइत अछि; ओकर संग संकेत, संख्या, परिमाण, विशेषण, सम्बन्धरूप आ परसर्गीय घटक जुड़ि सकैत अछि। “हमर दूटा पुरान पोथी”मे हमर सम्बन्ध, दूटा संख्या/गणक, पुरान विशेषण आ पोथी प्रधान संज्ञा अछि।

अध्याय ८०८ — क्रिया: काल, पक्ष, भाव, सामञ्जस्य, वाच्य, प्रेरणार्थक आ संयुक्त क्रिया

मूल पाठक अंश — 10.1 काल (tense), पक्ष (aspect), भाव/विधेयता (mood/modality) काल घटनाक समय-सन्दर्भ, पक्ष घटनाक भीतरी अवस्था—

जारी, पूर्ण, आदतन आदि—आ भाव/विधेयता सम्भावना, इच्छा, बाध्यता, आदेश, शर्त आदि व्यक्त करैत अछि।

अध्याय ८०९ — वाक्यविज्ञान: SOV, घटकता, निर्भरता, प्रश्न, निषेध आ जटिल उपवाक्य

मूल पाठक अंश — आधार-पाठ आधुनिक मैथिलीमे सामान्य विधानवाचक क्रम कर्ता-कर्म-क्रिया (Subject-Object-Verb—SOV)क प्रवृत्ति बतबैत अछि: “हम पोथी पढैत छी।” “सामान्य”क अर्थ कठोर नियम नहि; विषय, विरोधी जोर, भारी पदसमूह आ शैली पदक्रम बदलि सकैत अछि।

अध्याय ८१० — अर्थविज्ञान, प्रयोगविज्ञान, सूचना-संरचना आ प्रवचन

मूल पाठक अंश — अर्थविज्ञान शब्द, पदसमूह आ वाक्यक व्यवस्थित अर्थक अध्ययन अछि। पर्याय (synonymy), विलोम (antonymy), बहुअर्थकता (polysemy), समनामता (homonymy), वर्ग-संबन्ध (hyponymy), अर्थ-भूमिका (semantic role), entailment/अनिवार्य निष्पत्ति आ...

अध्याय ८११ — समाजभाषाविज्ञान: मानक, सहभाषा, शैली, भाषा-संपर्क आ बहुभाषिकता

मूल पाठक अंश — 13.1 समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) समाजभाषाविज्ञान भाषा-रूपक सामाजिक वितरण देखैत अछि। एके वक्ता घर, विद्यालय, साहित्यिक सभा, डिजिटल संदेश आ प्रशासनिक आवेदनमे अलग शब्दावली, आदर-रूप आ वाक्य-लम्बाइ चुनि सकैत छथि।

अध्याय ८१२ — ऐतिहासिक-तुलनात्मक भाषा-विज्ञान, प्रकारिकी, मनोभाषाविज्ञान आ अर्जन

मूल पाठक अंश — 14.1 ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान (Historical Linguistics) भाषा समयक संग ध्वनि, रूप, शब्दार्थ आ वाक्य-विन्यासमे बदलैत अछि। पुरान पाण्डुलिपि, तिथि-युक्त मुद्रित पाठ, शब्दकोश, चिट्ठी, लोकगीतक पुरान रूप आ रिकॉर्डिंग ऐतिहासिक प्रमाण दे सकैत अछि।

अध्याय ८१३ — कॉर्पस, शब्दकोश-विज्ञान, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञान

मूल पाठक अंश — 15.1 कॉर्पस भाषा-विज्ञान (Corpus Linguistics) कॉर्पस (corpus) खोज, गिनती आ विश्लेषण योग्य व्यवस्थित भाषिक आँकड़ा-संग्रह अछि। बहुत फाइलक ढेरी मात्र कॉर्पस नहि;

अध्याय ८१४-८४० : समन्वित भाषा-विज्ञान, क्षेत्रकार्य आ डिजिटल विस्तार

अध्याय ८१४ — समानान्तर अध्ययनक पद्धति: तुलनीय आँकड़ा, नियंत्रण आ प्रमाण

मूल पाठक अंश — 16.1 तुलनीयता (Comparability — तुलनीयता) समानान्तर अध्ययनमे सभसँ पहिल शर्त ई अछि जे तीनू भाषासँ एक्के प्रकारक आँकड़ा लेल जाए।

अध्याय ८१५ — ध्वनिविज्ञान आ ध्वनितत्त्वक समानान्तर परीक्षण

मूल पाठक अंश — 17.1 लिपि एक, ध्वनि-व्यवस्था अपने-अपने तीनू भाषा आधुनिक व्यवहारमे देवनागरीक उपयोग करैत अछि, मुदा समान अक्षर देखिते समान ध्वनिम (phoneme — अर्थभेदक ध्वनि-इकाई) मानब वैज्ञानिक नहि।

अध्याय ८१६ — संज्ञा-पदसमूह, बहुवचन, गणक, कारक आ उत्तरसर्ग

मूल पाठक अंश — 18.1 संज्ञा-पदसमूह (Noun Phrase — संज्ञा-पदसमूह) तीनू भाषामे संज्ञाक चारूकात संकेतक, संख्या, गणक, विशेषण, सम्बन्धरूप, बहुवचन-सूचक आ उत्तरसर्ग आवि सकैत अछि। मुदा सभ तत्त्वक क्रम आ सह-अस्तित्वक सीमा समान अछि, ई पहिले सँ नहि मानू।

अध्याय ८१७ — सर्वनाम, संकेत, दूरी आ आदर-व्यवस्था

मूल पाठक अंश — Personal Pronoun (पुरुषवाचक सर्वनाम)क संग Deixis (संकेत-निर्भरता), Honorificity (आदर-सूचकता), Social Distance (सामाजिक

दूरी), Number (वचन/संख्या) आ Obliqueness (तिर्यकता) जुड़ल रहि सकैत अछि।

अध्याय ८१८ — क्रिया, काल-पक्ष-भाव, सहायक, सामञ्जस्य आ संयोजकता

मूल पाठक अंश — 20.1 TAM: Tense–Aspect–Mood (काल-पक्ष-भाव) Tense (काल) घटना समयसँ सम्बन्ध; Aspect (पक्ष) घटना पूरा/जारी/आदतन आदि रूप; Mood/Modality (भाव/विधि) सम्भावना, इच्छा, आदेश, बाध्यता, शर्त, अनुमान आदि।

अध्याय ८१९ — वाक्यविज्ञान: पदक्रम, घटकता, निर्भरता, निषेध, प्रश्न आ उपवाक्य

मूल पाठक अंश — 21.1 मूल पदक्रम (Basic Word Order — सामान्य पदक्रम) आधार-पाठ तीनू भाषाक सामान्य विधानवाचक क्रमकैँ कर्ता-कर्म-क्रिया (SOV — Subject–Object–Verb) दिस देखबैत अछि।

अध्याय ८२० — अर्थविज्ञान, प्रयोगविज्ञान, सूचना-संरचना आ प्रवचनक समानान्तर अध्ययन

मूल पाठक अंश — 22.1 Lexical Semantics (शब्दार्थविज्ञान) Synonymy (पर्यायता), Antonymy (विलोमता), Polysemy (बहुअर्थकता), Homonymy (समनामता), Hyponymy (वर्ग-अन्तर्गत अर्थ-संबन्ध) आ Collocation (सहप्रयोग) तीनू भाषामे अलग वितरण रखि सकैत अछि।

अध्याय ८२१ — समाजभाषाविज्ञान, सहभाषा, मानकीकरण आ भाषा-संपर्क

मूल पाठक अंश — 23.1 Variation (रूप-विविधता) कैँ त्रुटि नहि मानू ठेठी-अंगिका, बज्जिका आ मैथिली तीनू विस्तृत सामाजिक-भौगोलिक क्षेत्रमे चलैत भाषा अछि। घर, बाजार, विद्यालय, साहित्य, प्रशासन, डिजिटल संदेश, मंच आ पीढ़ी अनुसार रूप बदलि सकैत अछि।

अध्याय ८२२ — ऐतिहासिक-तुलनात्मक अध्ययन: नियमित संगति, समजातता आ सावधानी

मूल पाठक अंश — 24.1 Cognate (समजात शब्द) बनाम समान शब्द दू भाषामे रूप आ अर्थ समान देखिते शब्द समजात घोषित नहि होइत। Borrowing (उधारी), chance resemblance (संयोगगत समानता), sound symbolism (ध्वनि-अनुकरण) आ shared cultural vocabulary (साझा सांस्कृतिक...

अध्याय ८२३ — भाषा-प्रकारिकी आ अंग्रेजी-सँ संरचनात्मक तुलना

मूल पाठक अंश — 25.1 Typology (भाषा-प्रकारिकी)क उपयोग प्रकारिकी “कौन भाषा नीक” नहि पूछैत; ई पूछैत अछि—विश्वक भाषामे कौन संरचना कतेक प्रकारँ व्यवस्थित होइत अछि।

अध्याय ८२४ — समानान्तर कॉर्पस, टिप्पणीकरण, शब्दकोश आ डिजिटल भाषा-संसाधन

मूल पाठक अंश — 26.1 Parallel Corpus (समानान्तर कॉर्पस/समरेखित पाठ-संग्रह) तीनू भाषाक तुलनात्मक अध्ययन लेल एक्के अर्थ-सामग्रीक अनुवादित कॉर्पस उपयोगी अछि, मुदा translated corpus/अनूदित कॉर्पस अकेला स्वाभाविक व्याकरणक प्रतिनिधि नहि।

अध्याय ८२५ — समानान्तर क्षेत्रकार्य आ प्रयोगात्मक कार्यपुस्तिका

मूल पाठक अंश — नीचाँक कार्यसूची “उत्तर” नहि, समान डेटा उत्पन्न करबाक साधन अछि। प्रत्येक कार्य तीनू भाषाक अलग वक्तासँ कराउ; शोधकर्ता पहिने अपेक्षित रूप नहि सुनाउ। spontaneous/स्वतःस्फूर्त रूप आ elicited/उद्बोधित रूप अलग चिन्ह।

अध्याय ८२६ — द्विभाषिक तकनीकी शब्दावली: English term + अनिवार्य भारतीय/मैथिली रूप

मूल पाठक अंश — शैली-नीति — अंग्रेजी पद पहिल बेर “स्थानीय/मैथिली रूप (English term)” अथवा “English term (स्थानीय/मैथिली रूप)” रूपमे दिअ। बादमे प्रसङ्ग स्पष्ट रहला पर स्थानीय रूप अकेले चल सकैत अछि। केवल English acronym/संक्षिप्ति छोड़ि देब नहि;

अध्याय ८२७ — शोध-अभिकल्प, चर, नमूना, नियंत्रण आ पुनरुत्पाद्यता

मूल पाठक अंश — 29.1 Research Question (शोध-प्रश्न) केँ माप योग्य बनाउ “ठेठी-अंगिका, बज्जिका आ मैथिलीमे आदर-व्यवस्था अलग अछि,” जकाँ व्यापक कथन शोधक आरम्भ हो सकैत अछि, निष्कर्ष नहि।

अध्याय ८२८ — परिमाणात्मक भाषा-अध्ययन: गिनती सँ अनिश्चितता धरि

मूल पाठक अंश — 30.1 Quantitative Analysis (परिमाणात्मक विश्लेषण) किएक? परिमाणात्मक विश्लेषण भाषा केँ केवल संख्या मे बदलनाइ नहि अछि। एकर उद्देश्य स्पष्ट करब अछि, जे कोन रूप कतेक बेर, कोन सन्दर्भमे, कोन वक्ता-समूहमे आ कतेक अनिश्चिततासहित भेटल।

अध्याय ८२९ — प्रयोगात्मक ध्वनिविज्ञान: रिकॉर्डिंग, अवधि, VOT, F0 आ स्वर-गुण

मूल पाठक अंश — 31.1 Recording Protocol (रिकॉर्डिंग प्रोटोकॉल) ध्वनि-अध्ययनमे माइक्रोफोन, दूरी, कमरा, नमूना-दर, बिट-गहराई आ वक्ताक मुखक दिशा जकाँ विवरण परिणामपर प्रभाव डालि सकैत अछि।

अध्याय ८३० — समाजध्वनिविज्ञान: उच्चारणक सामाजिक आ शैलीगत भिन्नता

मूल पाठक अंश — 32.1 Sociophonetics (समाजध्वनिविज्ञान) की? Sociophonetics (समाजध्वनिविज्ञान) ध्वनिक मापनकेँ सामाजिक भिन्नतासँ

जोड़ैत अछि। क्षेत्र, पीढ़ी, शिक्षा, शहरी/ग्रामीण नेटवर्क, औपचारिकता, बोलबाक साथी आ माध्यम—ई सभ उच्चारणक वितरण बदलि सकैत अछि।

अध्याय ८३१ — प्रयोगात्मक व्याकरण: स्वाभाविकता, उत्पादन, बोध आ शब्दक्रम

मूल पाठक अंश — 33.1 Acceptability Judgment (स्वाभाविकता-निर्णय)
स्वाभाविकता-निर्णयमे वक्तासँ पूछल जाइत अछि जे वाक्य ओकरा स्वाभाविक, संदिग्ध वा अस्वाभाविक लगैत अछि।

अध्याय ८३२ — मनोभाषाविज्ञान: भाषा-प्रसंस्करण, शब्द-पहिचान आ वाक्य-बोध

मूल पाठक अंश — 34.1 Psycholinguistics (मनोभाषाविज्ञान)क केन्द्र
मनोभाषाविज्ञान पूछैत अछि जे मन/मस्तिष्क वास्तविक समयमे ध्वनि सुनैत, शब्द पहिचानैत, वाक्य बनबैत आ अर्थ बुझैत कोना काज करैत अछि। एहि पोथीमे मानसिक प्रक्रियाकेँ सीधे “देखल” नहि मानल जाए;

अध्याय ८३३ — बालभाषा-अर्जन: घरक भाषा सँ व्याकरणिक विकास धरि

मूल पाठक अंश — 35.1 Child Language Acquisition (बालभाषा-अर्जन)क डेटा
बालकक भाषा वयस्क व्याकरणक “गलत छोट रूप” मात्र नहि। अर्जन-अध्ययनमे ध्वनि, शब्द, gesture (इशारा), पुनरुक्ति, अधूरा रूप, Caregiver Input (पालक-भाषिक निवेश) आ संवाद-क्रम सभ महत्वपूर्ण...

अध्याय ८३४ — बहुभाषिकता, द्वितीय भाषा-अर्जन आ भाषा-चयन

मूल पाठक अंश — 36.1 Multilingual Repertoire (बहुभाषिक भाषिक भण्डार)
बहुभाषी वक्ता अलग भाषा “डिब्बा”मे अलग-अलग नहि रखैत, बल्कि प्रसंगानुसार उपलब्ध संसाधन चुनैत अछि।

अध्याय ८३५ — भाषा-संपर्क: उधारी, अभिसरण, प्रतिरूपण आ परिवर्तन

मूल पाठक अंश — 37.1 Borrowing (उधारी) आ Integration (स्थानीय रूपमे समावेशन) उधार शब्द कोनो भाषा मे आबि स्थानीय ध्वनि, लिंग/वचन, कारक वा क्रिया-रचना अनुसार ढलि सकैत अछि।

अध्याय ८३६ — अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान: शिक्षण, साक्षरता, व्याकरण आ सामग्री-विकास

मूल पाठक अंश — 38.1 Applied Linguistics (अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान)क उद्देश्य अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान भाषिक ज्ञानकें वास्तविक समस्या—शिक्षण, साक्षरता, अनुवाद, शब्दकोश, मूल्यांकन, भाषा-नीति, भाषण-तकनीक—मे लागू करैत अछि।

अध्याय ८३७ — अनुवाद-विज्ञान, शब्दकोश-विज्ञान आ पारिभाषिक शब्दावली

मूल पाठक अंश — 39.1 Translation Unit (अनुवाद-इकाई): शब्दसँ पैघ अनुवादमे अर्थक इकाई अक्सर एक शब्द नहि, पूरा Phrase (पदसमूह), Clause (उपवाक्य), Idiom (मुहावरा) वा Discourse Move (प्रवचन-चाल) होइत अछि।

अध्याय ८३८ — डिजिटल पाठ, Unicode, OCR, ASR, TTS आ NLP

मूल पाठक अंश — 40.1 Unicode (यूनिकोड वर्ण-संकेत मानक) आ Normalization (सामान्यीकरण) डिजिटल देवनागरीमे जे एके देखाइत पाठ अछि, ओकर underlying code sequence (अन्तर्निहित संकेत-क्रम) अलग हो सकैत अछि।

अध्याय ८३९ — अभिलेखन, annotation, खुला शोध आ दीर्घकालिक भाषा-संसाधन

मूल पाठक अंश — 41.1 ELAN (ई-लैन: समय-संलग्न ऑडियो/वीडियो टिप्पणीकरण) ELAN audio/video recording संग Time-aligned Annotation (समय-संलग्न टिप्पणीकरण) करबाक स्थापित औजार अछि।

अध्याय ८४० — समेकित शोध-कार्यशाला: एक प्रश्नकें डेटा सँ प्रकाशन धरि

मूल पाठक अंश — 42.2 नमूना परियोजना: निषेधक कार्यक्षेत्र दोसरा परियोजनामे “नहि/नै/ना/मत” जकाँ निषेधक रूपक Source-supported List (स्रोत-समर्थित सूची) सँ आरम्भ करू, मुदा रूपक सामाजिक/शैलीगत वितरण नब डेटा सँ जाँचू।

अध्याय ८४१-८५८ : निदानात्मक तुलना आ कॉर्पस कार्यपुस्तिका

अध्याय ८४१ — पदक्रम आ उत्तरसर्ग: SOV (कर्ता-कर्म-क्रिया) के व्यावहारिक परीक्षण

मूल पाठक अंश — तीनू सहभाषाक आधार-पाठमे साधारण विधानवाचक वाक्यक सामान्य प्रवृत्ति कर्ता-कर्म-क्रिया (Subject-Object-Verb / कर्ता-कर्म-क्रिया) अछि। एहि समानताकें कठोर नियम नहि, बल्कि default order (सामान्य पदक्रम) मानि परीक्षण करब उपयोगी अछि।

अध्याय ८४२ — सर्वनाम, दूरी आ आदर: Pronoun-Honorific System (सर्वनाम-आदर प्रणाली)

मूल पाठक अंश — तीनू सहभाषामे केवल person (पुरुष) नहि, सामाजिक आदर आ कखनो निकटता-दूरी सेहो सर्वनाम/क्रिया चयनमे प्रभावी अछि। English “you/he/she”क एक-शब्दीय यान्त्रिक मिलान एहि कारण पर्याप्त नहि।

अध्याय ८४३ — निषेध: Negation (निषेध) आ Scope (व्याप्ति)

मूल पाठक अंश — निषेध-पदक स्थान केवल “नहि” कहवाक प्रश्न नहि; वाक्यमे कोन अंश नकारल जा रहल अछि, ई scope (निषेध-व्याप्ति) सँ तय होइत अछि। ठेठी-अंगिका औपचारिक शैली-पाठमे “नै” सामान्य निषेधक रूप अछि;

अध्याय ८४४ — सम्बन्धवाचक-सहसम्बन्धी रचना: Relative-Correlative Construction (सम्बन्धी-सहसम्बन्धी रचना)

मूल पाठक अंश — पूर्वी इंडो-आर्य भाषासभमे सम्बन्धवाचक-सहसम्बन्धी जोड़ी एक महत्त्वपूर्ण वाक्यविन्यासीय साधन अछि। एहि ग्रन्थमे ओकरा समानता प्रमाणित करबाक बदला तीनू सहभाषाक उपलब्ध रूप स्वतंत्र रूपेँ राखल गेल अछि।

अध्याय ८४५ — संख्या, बहुवचन आ गणक: Number, Plurality and Classifiers (संख्या, बहुलता आ गणक)

मूल पाठक अंश — बहुवचन केवल संज्ञाक अन्त बदलाब नहि; समूह-सूचक, संख्या-सूचक आ classifier (गणक) अलग-अलग कार्य करैत अछि। ठेठी-अंगिका आधार-पाठमे सभ, सिनी, गो, टा तथा “दू गो किताब” जकाँ रूप अछि। मानव समूहमे सिनी जकाँ रूप विशेष अध्ययन योग्य अछि।

अध्याय ८४६ — काल, पक्ष आ भाव: Tense-Aspect-Mood / TAM (काल-पक्ष-भाव)

मूल पाठक अंश — Tense (काल), Aspect (पक्ष) आ Mood/Modality (भाव/विधि) के एके “काल” शीर्षकमे मिला देब विश्लेषणक दृष्टिसँ हानिकारक अछि। एहि भागमे समय, घटना-अवस्था आ वक्ताक दृष्टिकोण अलग राखल गेल अछि।

अध्याय ८४७ — ध्वनि, लिपि आ वास्तविक उच्चारण: Phonetics-Orthography Interface (ध्वनि-वर्तनी सम्बन्ध)

मूल पाठक अंश — देवनागरी तीनू सहभाषामे आधुनिक लेखनक मुख्य साधन अछि, मुदा grapheme (लिपिचिह्न) आ sound (ध्वनि) एक-एक स्थिर सम्बन्धमे नहि रहैत। ठेठी-अंगिका स्रोत श/ष/स, व/ब, ऋ/रि, नासिकता आ क्षेत्रीय उच्चारणक विविधता दर्ज करैत अछि;

अध्याय ८४८ — शब्दकोश आ अर्थ: Lexicography and Polysemy (शब्दकोश-विज्ञान आ बहुअर्थकता)

मूल पाठक अंश — शब्दकोशक एक entry (प्रविष्टि) केवल “शब्द = अर्थ” नहि। lemma, pronunciation, part of speech, sense, example, register, variant, source आ cross-reference अलग-अलग दर्ज करब चाही।

अध्याय ८४९ — अनुवाद आ संरचनात्मक अन्तरण: Translation and Transfer (अनुवाद आ अन्तरण)

मूल पाठक अंश — शब्द-दर-शब्द अनुवाद तीनू सहभाषाक स्वाभाविक पदक्रम, आदर, सर्वनाम आ उत्तरसर्गीय संरचना बिगाड़ि सकैत अछि। ठेठी-अंगिका स्रोत English S–V–O बनाम Angika S–O–V आ preposition बनाम postpositionक स्पष्ट तुलना दैत अछि।

अध्याय ८५० — समानता, भिन्नता आ प्रमाण: Comparative Claim (तुलनात्मक दावा) कोना लिखी

मूल पाठक अंश — तीनू सहभाषामे समान रूप भेटलासँ तुरन्त साझा पूर्वज, उधार वा प्रत्यक्ष प्रभाव सिद्ध नहि होइत। Comparative Method (तुलनात्मक पद्धति) लेल नियमित ध्वनि-संगति, रूप-समानता, अर्थ-संगति आ स्वतंत्र शब्द-सामग्रीक पर्याप्त नमूना चाही।

अध्याय ८५१ — कॉर्पस परियोजनाक इकाई आ फाइल-संरचना

मूल पाठक अंश — Corpus (कॉर्पस/पाठ-संग्रह) केवल बहुत फाइलक ढेरी नहि; प्रत्येक पाठक provenance (स्रोत-इतिहास), speaker metadata (वक्ता-विवरण), recording/transcription link (रिकॉर्डिंग-लिप्यांकन सम्बन्ध), version (संस्करण) आ access condition...

अध्याय ८५२ — Speaker Metadata (वक्ता-विवरण) प्रपत्र

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय ८५३ — Recording Log (रिकॉर्डिंग-अभिलेख)

मूल पाठक अंश — रिकॉर्डिंगक गुण एक्के उपकरणसँ नहि, बल्कि स्थिर दूरी, कम परावर्तन, स्पष्ट स्तर, clipping (ध्वनि-कटाव) सँ बचाव आ लिखित log (अभिलेख) सँ बनैत अछि।

अध्याय ८५४ — Diplomatic Transcript (मूलरूप लिप्यांकन) आ Normalized Text (सामान्यीकृत पाठ)

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय ८५५ — Interlinear Glossed Text / IGT (अन्तररेखीय रूपिम-व्याख्या)

मूल पाठक अंश — IGT (Interlinear Glossed Text / अन्तररेखीय रूपिम-व्याख्या) मे मूल पंक्ति, रूपिम-विभाजन, रूपिम-अर्थ/व्याकरणिक gloss, आ स्वतन्त्र अनुवाद अलग पंक्तिमे रहैत अछि।

अध्याय ८५६ — Wordlist/Lexicon Workbook (शब्दसूची/शब्दकोश कार्यपुस्तिका)

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय ८५७ — UD/CoNLL-U Workbook (निर्भरता-टिप्पणीकरण कार्यपुस्तिका)

मूल पाठक अंश — Universal Dependencies / UD (सार्वभौमिक निर्भरता-टिप्पणीकरण) cross-linguistic parsing (भाषा-पार वाक्यविश्लेषण) लेल साझा relation inventory (सम्बन्ध-सूची) दैत अछि। CoNLL-U (कोएनएल-यू प्रारूप) UTF-8 text आधारित संरचित प्रारूप अछि।

अध्याय ८५८ — Corpus QA (कॉर्पस गुणवत्ता-जाँच) आ पुनरुत्पादन

मूल पाठक अंश — □ एकही फाइलक version history (संस्करण-इतिहास) अछि? R aw master (मूल कच्चा फाइल) अपरिवर्तित अछि? □ वक्ता-सहमति

आ access level (पहुँच-स्तर) दर्ज अछि? □ लिप्यांकनक कम-सँ-कम नमूना दोसर व्यक्ति जाँचने अछि?

अध्याय ८५९-८८३ : ध्वनि-रूप-वाक्य-अर्थ आ वार्तालाप विश्लेषण

अध्याय ८५९ — Phoneme (ध्वनिम) आ Allophone (सहध्वनि): अर्थभेद बनाम उच्चारण-भेद

मूल पाठक अंश — Phoneme (ध्वनिम) ओ अमूर्त ध्वनि-इकाई अछि जकर विरोध भाषामे शब्द वा रूपक पहिचान बदलि सकैत अछि। Allophone (सहध्वनि) एकहि ध्वनिमक प्रसंग-निर्भर वास्तविक उच्चारण हो सकैत अछि। शिक्षणमे अक्षर, ध्वनि आ ध्वनिमकँ एक मानब सभसँ सामान्य भूल अछि।

अध्याय ८६० — Minimal Pair (न्यूनतम युग्म), Near-minimal Pair (निकट-न्यूनतम युग्म) आ Distribution (वितरण)

मूल पाठक अंश — न्यूनतम युग्म खोजैत समय एक्के syllable frame (अक्षर-खण्ड ढाँचा)मे एक ध्वनिक परिवर्तन खोजल जाए। वास्तविक स्थानीय भाषामे शुद्ध न्यूनतम युग्म कम भेटि सकैत अछि;

अध्याय ८६१ — Neutralization (विरोध-निष्प्रभावन) आ Free Variation (मुक्त रूपांतर)

मूल पाठक अंश — Neutralization (विरोध-निष्प्रभावन) तखन कहल जाए जखन दू ध्वनिमक विरोध कोनो विशेष वातावरणमे समाप्त वा अस्पष्ट भऽ जाए। उदाहरणार्थ, कुनो भाषामे word-final position (शब्द-अन्त)मे घोष-अघोष भेद कमजोर पड़ि सकैत अछि;

अध्याय ८६२ — Morphophonemics (रूपध्वनितत्त्व): रूपिम आ ध्वनिक संगम

मूल पाठक अंश — Morphophonemics (रूपध्वनितत्त्व) ओ क्षेत्र अछि जतय एक रूपिम (morpheme) अलग रूप-सन्दर्भमे ध्वन्यात्मक रूप बदलैत अछि। Allomorph (सह-रूपिम) केवल spelling variation (वर्तनी-भेद) नहि;

अध्याय ८६३ — Sandhi (सन्धि), Liaison (संधान) आ Phonotactics (ध्वनि-संयोजन नियम)

मूल पाठक अंश — Sandhi (सन्धि) केवल संस्कृत व्याकरणक तत्सम संधि नहि; आधुनिक भाषाविज्ञानमे शब्द/रूपिम सीमा पर नियमित ध्वनि-परिवर्तनकें व्यापक रूपेँ external/internal sandhi (बाह्य/आन्तरिक सन्धि)क रूपमे अध्ययन कएल जा सकैत अछि।

अध्याय ८६४ — Morpheme (रूपिम), Morph (रूप) आ Allomorph (सह-रूपिम)

मूल पाठक अंश — Morpheme (रूपिम) अर्थ वा व्याकरणिक कार्यवला सभसँ छोट नियमित इकाई अछि। Morph (रूप) ओकर वास्तविक ध्वनि/लिखित प्रकटीकरण, आ allomorph (सह-रूपिम) एकहि रूपिमक वैकल्पिक रूप हो सकैत अछि।

अध्याय ८६५ — Inflection (रूप-परिवर्तन) बनाम Derivation (शब्द-व्युत्पादन)

मूल पाठक अंश — Inflection (रूप-परिवर्तन) सामान्यतः एकहि lexeme (शब्दकोशीय इकाई) कें वाक्यगत आवश्यकता अनुसार person, case, TAM, honorificity आदि रूप दैत अछि; derivation (शब्द-व्युत्पादन) नव lexeme बनबैत अछि वा word class (पद-वर्ग) बदलि सकैत अछि।

अध्याय ८६६ — Noun Morphology (संज्ञा-रूपविज्ञान): Case, Number, Gender, Classifier

मूल पाठक अंश — Case marking (कारक-चिह्नन) तीनू सहभाषामे प्रायः postposition/उत्तरपद-आधारित संरचनासँ जुड़ल अछि। कर्ता शून्य-चिह्नित रहि सकैत अछि; कर्म/संप्रदान/सम्बन्ध/करण/अधिकरण/अपादान अलग चिह्न वा प्रसंगसँ खुलि सकैत अछि।

अध्याय ८६७ — Pronoun Morphology (सर्वनाम-रूपविज्ञान): Person, Distance, Honorificity

मूल पाठक अंश — Pronoun system (सर्वनाम-प्रणाली) तीनू सहभाषाक तुलनामे सभसँ समृद्ध क्षेत्रमे सँ एक अछि। Person (पुरुष)क साथ distance (निकटता-दूरी), honorificity (आदर), number (वचन), oblique form (तिर्यक रूप), genitive (सम्बन्धरूप) आ discourse...

अध्याय ८६८ — Verb Morphology (क्रिया-रूपविज्ञान): TAM — Tense, Aspect, Mood (काल, पक्ष, भाव)

मूल पाठक अंश — Tense (काल) घटना-समय, Aspect (पक्ष) घटनाक आन्तरिक समय-संरचना, आ Mood/Modality (भाव/विधेयता) वक्ताक दृष्टि, संभावना, इच्छा, आदेश, शर्त आदि व्यक्त करैत अछि।

अध्याय ८६९ — Causative (प्रेरणार्थक), Compound Verb (संयुक्त क्रिया) आ Reduplication (पुनरुक्ति)

मूल पाठक अंश — Causative (प्रेरणार्थक)मे मूल घटना कर्ता स्वयं नहि करैत, दोसर participant (सहभागी)सँ करबैत/होमैत अछि। Morphological causative (रूपात्मक प्रेरणार्थक), periphrastic causative (पदसमूहात्मक प्रेरणार्थक) आ lexical causative (शब्दगत...

अध्याय ८७० — Constituency (घटकता): वाक्यक भीतर समूह कोना चिन्ही?

मूल पाठक अंश — Constituency (घटकता) वाक्यकैँ nested units (अन्तर्निहित समूह)मे बाँटैत अछि: noun phrase/NP (संज्ञा-पदसमूह), postpositional phrase/PP (उत्तरसर्गीय पदसमूह), verb phrase/VP (क्रिया-पदसमूह), clause (उपवाक्य)।

अध्याय ८७१ — Phrase Structure (पदसमूह-संरचना): NP, PP, VP आ Clause

मूल पाठक अंश — Phrase Structure (पदसमूह-संरचना)क practical analysis लेल भारी formalism अनिवार्य नहि। पहिने head (प्रधान), dependent/modifier (आश्रित/विशेषक) आ complement (पूरक) चिन्हू। NPमे संज्ञा प्रधान;

अध्याय ८७२ — Dependency Grammar (निर्भरता व्याकरण): Head-Dependent (प्रधान-आश्रित) सम्बन्ध

मूल पाठक अंश — Dependency Grammar (निर्भरता व्याकरण) वाक्यकैँ phrase brackets क बदला शब्द/टोकनक head-dependent सम्बन्धसँ देखबैत अछि। Universal Dependencies/UD (सार्वत्रिक निर्भरता) एक उपयोगी cross-linguistic framework अछि, मुदा स्थानीय tokenization...

अध्याय ८७३ — Argument Structure (तर्क-संरचना), Valency (संयोजकता) आ Semantic Roles (अर्थ-भूमिका)

मूल पाठक अंश — Argument Structure (तर्क-संरचना) पूछैत अछि जे एक predicate (विधेय) कतेक अनिवार्य/मुख्य participant (सहभागी) लैत अछि। Valency (संयोजकता) zero-, one-, two-, three-place predicate जकाँ संख्या-आधारित वर्णन देसकैत अछि।

अध्याय ८७४ — Transitivity (सकर्मकता) आ Alignment (कारक-संरेखण): सरल द्विभेदसँ आगू

मूल पाठक अंश — Transitivity (सकर्मकता) केवल “कर्म अछि/नहि” नहि; Hopper-Thompson प्रकारक दृष्टिमे affectedness, telicity, agency, punctuality आदि अर्थगत गुण सेहो उपयोगी हो सकैत अछि।

अध्याय ८७५ — Agreement (सामञ्जस्य): Person, Honorificity, Number आ Object Effects

मूल पाठक अंश — Agreement (सामञ्जस्य)मे controller (नियन्त्रक) आ target (लक्षित रूप) चिन्हब पहिल काम अछि। Controller subject, object, addressee relation वा honorific referent हो सकैत अछि; target verb, adjective, copula आदि।

अध्याय ८७६ — Negation (निषेध) आ Interrogatives (प्रश्न): Scope, Polarity, Question Type

मूल पाठक अंश — Negation (निषेध)क मुख्य प्रश्न केवल marker (चिह्न) नहि, scope (व्याप्ति) अछि। “हम नहि जइबइ” पूरा proposition (विधान) नकारि सकैत अछि; “आज नहि, काल्है” contrastive negation (विरोधी निषेध) अछि;

अध्याय ८७७ — Relative, Complement, Coordination, Subordination आ Information Structure

मूल पाठक अंश — Relative-Correlative Construction (सम्बन्धवाचक-सहसम्बन्धी रचना) पूर्वी नव-आर्य भाषासभमे अत्यन्त उपयोगी तुलनात्मक क्षेत्र अछि। वज्जिका “जे लइका रोज पढ़ै रहै, ऊ पहिल अइलक” जकाँ उदाहरण जे...ऊ pairing (युग्म)क पाठ-साक्ष्य देत अछि।

अध्याय ८७८ — Lexical Semantics (शब्दार्थविज्ञान): Lexeme, Sense, Reference

मूल पाठक अंश — Lexeme (शब्दकोशीय इकाई) शब्दक अमूर्त शब्दकोशीय आधार अछि; word-form (शब्दरूप) ओकर inflected/orthographic रूप; sense

(अर्थ-भेद) विशेष lexical meaning; reference (सन्दर्भ) वास्तविक जगत/प्रवचनमे जकरा दिस शब्द संकेत करैत अछि।

अध्याय ८७९ — Polysemy (बहुअर्थकता), Homonymy (समरूप भिन्नता) आ Lexical Relations (शब्दार्थ सम्बन्ध)

मूल पाठक अंश — Polysemy (बहुअर्थकता)मे एकहि lexical itemक ऐतिहासिक/अर्थगत रूपेँ जुड़ल अनेक sense होइत अछि; homonymy (समरूप भिन्नता)मे एके रूपक अलग, असम्बद्ध lexical item मानल जा सकैत अछि। केवल dictionary spellingसँ दुनूक फरक तय नहि होइत;

अध्याय ८८० — Entailment, Presupposition, Scope, Semantic Roles आ Compositionality

मूल पाठक अंश — Entailment (अर्थ-अनुगमन) तखन होइत अछि जँ वाक्य A सत्य भेलासँ B सत्य होनाइ अनिवार्य हो। Presupposition (पूर्वमान्यता) ओ background assumption अछि जे विधान/प्रश्न/निषेध बदललापर सेहो बचल रहि सकैत अछि।

अध्याय ८८१ — Deixis (संकेतना), Implicature (निहितार्थ), Speech Acts (भाषण-कर्म) आ Politeness

मूल पाठक अंश — Deixis (संकेतना) व्यक्ति, स्थान, समय, सामाजिक सम्बन्ध आ discourse position (प्रवचन-स्थान)क सन्दर्भपर निर्भर अभिव्यक्ति अछि। ई/ऊ, इहाँ/उहाँ, आज/काल्ह, हम/रउआ/अहाँ/हुन/हुनी जकाँ रूप केवल dictionary meaning सँ पूरा नहि बुझाईत;

अध्याय ८८२ — Discourse (प्रवचन): Cohesion, Coherence, Information Flow आ Turn-taking

मूल पाठक अंश — Cohesion (संसक्ति) पाठक surface linking devices (उपरी जोड़-साधन) — pronoun, conjunction, repetition, lexical chain, ellipsis आदि — सँ बनैत अछि। Coherence (अर्थ-संगति) व्यापक अर्थ-क्रम अछि;

अध्याय ८८३ — Conversation Analysis (वार्तालाप-विश्लेषण) आ Practical Annotation Lab

मूल पाठक अंश — Conversation Analysis/CA (वार्तालाप-विश्लेषण) वास्तविक interaction (परस्पर संवाद)क सूक्ष्म क्रम देखैत अछि: कोन वक्ता कखन बोलल, pause कतेक, overlap कतेक, response delay, repair, preferred/dispreferred response इत्यादि।

अध्याय ८८४-९०८ : समाज, इतिहास, सम्पर्क, प्रकारिकी आ द्विभाषिकता

अध्याय ८८४ — Sociolinguistic Variable (समाजभाषिक चर) आ Variant (रूपांतर): भिन्नता स्वयं डेटा अछि

मूल पाठक अंश — Variation (भिन्नता) भाषाक त्रुटि नहि, ओकर नियमित सामाजिक आ भाषिक व्यवहारक हिस्सा अछि। Sociolinguistic Variable (समाजभाषिक चर) ओ विश्लेषणात्मक इकाई अछि जकर एके कार्य/अर्थ लेल दू वा बेसी Variant (रूपांतर) भेटैत अछि।

अध्याय ८८५ — Register (प्रयोग-शैली), Style (शैली), Genre (पाठ-विधा) आ Audience Design (श्रोता-अनुकूलन)

मूल पाठक अंश — Register (प्रयोग-शैली) भाषा-रूपक कार्यगत वितरण अछि — घरक बातचीत, विद्यालयी गद्य, समाचार, आवेदन, कविता, धार्मिक पाठ, डिजिटल सन्देश आदि। Style (शैली) एके वक्ताक औपचारिकता वा stance (दृष्टि/रुख) अनुसार रूप-चयन बदलाव बुझा सकैत अछि।

अध्याय ८८६ — Code-switching (कोड-बदलाव), Code-mixing (कोड-मिश्रण) आ Borrowing (उधारी)

मूल पाठक अंश — Code-switching (कोड-बदलाव) दू भाषिक प्रणाली/संसाधनक क्रमिक चयन हो सकैत अछि; Code-mixing (कोड-मिश्रण) कई परम्परामे वाक्य/पदसमूह भीतर मिश्रण लेल उपयोग होइत अछि।

Borrowing (उधारी) अधिक स्थिर रूपैँ स्थानीय शब्दकोश/व्याकरणमे समाहित रूप अछि।

अध्याय ८८७ — Diglossia (कार्य-विभाजित द्विरूपता), Domain (प्रयोग-क्षेत्र) आ Functional Distribution (कार्यगत वितरण)

मूल पाठक अंश — Diglossia (द्विरूप/बहुरूप कार्य-विभाजन) शब्दक classic अर्थ समाजमे उच्च/निम्न functional varieties केर relatively stable वितरण सँ जुड़ल अछि; आधुनिक multilingual setting मे हर परिस्थिति strict H/L model मे नहि समैत।

अध्याय ८८८ — Language Attitude (भाषा-भावना), Identity (पहचान), Standardization (मानकीकरण) आ Ideology (भाषा-विचारधारा)

मूल पाठक अंश — Language Attitude (भाषा-भावना) वक्ताक overt statement (प्रत्यक्ष मत) आ covert evaluation (अप्रत्यक्ष मूल्यांकन) दुनू हो सकैत अछि।

अध्याय ८८९ — Dialect Geography (सहभाषा-भूगोल): Isogloss (रूप-सीमा), Transition Zone (संक्रमण-क्षेत्र) आ Continuum (निरन्तरता)

मूल पाठक अंश — Dialect Geography (सहभाषा-भूगोल) भाषिक रूपक स्थानिक वितरण अध्ययन करैत अछि। Isogloss (रूप-सीमा) नक्शापर कोनो linguistic featureक distribution boundary देखाबैत अछि, मुदा वास्तविक सीमा प्रायः धुँधली, overlapping वा probabilistic हो सकैत...

अध्याय ८९० — Dialectometry (सहभाषामिति): Linguistic Distance (भाषिक दूरी), Levenshtein, Hamming, PCA, Cluster

मूल पाठक अंश — Dialectometry (सहभाषामिति) अनेक भाषिक variablesक अन्तरकें मात्रात्मक रूपमे मापि स्थान/समुदायक aggregate pattern देखैत अछि। एकटा cluster map कें “प्राकृतिक भाषा-सीमा” कहब खतरनाक अछि;

अध्याय ८११ — Social Network (सामाजिक जाल), Mobility (आवागमन), Apparent Time (प्रतीत-काल) आ Real Time (वास्तविक-काल)

मूल पाठक अंश — Social Network (सामाजिक जाल)क density (घनत्व), multiplexity (बहु-संबंधता) आ local ties (स्थानीय सम्बन्ध) रूप-प्रसार/रक्षण प्रभावित करि सकैत अछि।

अध्याय ८१२ — Language Contact (भाषा-संपर्क): Borrowing, Convergence (अभिसरण), Calque (प्रतिरूप), Diffusion (प्रसार)

मूल पाठक अंश — Language Contact (भाषा-संपर्क) shared lexicon, phonology, constructions आ discourse practices प्रभावित करि सकैत अछि। मुदा समानता तीन स्रोतसँ आ सकैत अछि: common inheritance (साझा वंश), contact diffusion (संपर्क-प्रसार), independent...

अध्याय ८१३ — Language Ecology (भाषा-पारिस्थितिकी), Vitality (जीवन्तता), Intergenerational Transmission (पीढ़ीगत हस्तांतरण)

मूल पाठक अंश — Language Ecology (भाषा-पारिस्थितिकी) वक्ता, परिवार, शिक्षा, मीडिया, बाजार, प्रशासन, technology आ identityक परस्पर सम्बन्ध देखैत अछि। “वक्ताक संख्या” एकमात्र vitality measure नहि।

अध्याय ८१४ — Historical Linguistics (ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान): Attestation (पाठ-साक्ष्य), Change (परिवर्तन) आ Chronology (कालक्रम)

मूल पाठक अंश — Historical Linguistics (ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान) वर्तमान रूपसँ अतीत अनुमान करैत अछि, मुदा strongest evidence dated texts, inscriptions, older grammars/dictionaries, manuscripts आ comparable recordings अछि।

अध्याय ८१५ — Sound Change (ध्वनि-परिवर्तन): Regular Correspondence (नियमित ध्वनि-संगति) आ Conditioning (परिस्थिति)

मूल पाठक अंश — Comparative historical workक केन्द्र isolated समान शब्द नहि, Regular Sound Correspondence (नियमित ध्वनि-संगति) अछि। अनेक संभावित cognate sets मे एक languageक segment दोसरक निश्चित segment/परिस्थितिसँ बारम्बार मेल खाय, तखन...

अध्याय ८१६ — Comparative Method (तुलनात्मक पद्धति) आ Cognate Testing (समजात-परीक्षण)

मूल पाठक अंश — Cognate (समजात) ओ रूप अछि जे common ancestor (साझा पूर्वरूप) सँ inherited मानल जाए; समान अर्थ/ध्वनि मात्र पर्याप्त नहि। Comparative Method (तुलनात्मक पद्धति) regular correspondence, morphological evidence, semantic plausibility,...

अध्याय ८१७ — Reconstruction (पुनर्निर्माण), Proto-form (पूर्वरूप) आ Uncertainty (अनिश्चितता)

मूल पाठक अंश — Reconstruction (पुनर्निर्माण) observed descendant formsक आधारपर hypothesized ancestor form बनबैत अछि। Proto-form (पूर्वरूप) सामान्यतः * चिह्नसँ un-attested (अप्रमाणित/पुनर्निर्मित) देखाओल जाइत अछि;

अध्याय ८१८ — Analogy (सादृश्य) आ Paradigm Leveling (रूपावली-समतलीकरण)

मूल पाठक अंश — Analogy (सादृश्य) भाषिक रूपकँ आन productive pattern अनुसार बदलि सकैत अछि। Sound change regular हो सकैत अछि, मुदा analogy ओकर परिणामक paradigmमे फेर pattern बनबैत अछि; एहि कारण apparent “sound exception” morphologyक प्रभाव हो सकैत अछि।

अध्याय ८९९ — Grammaticalization (व्याकरणीकरण): Lexical → Grammatical Function (शब्दार्थी → व्याकरणिक कार्य)

मूल पाठक अंश — Grammaticalization (व्याकरणीकरण) शब्द वा constructionक grammatical function विकसित करवाक diachronic प्रक्रिया लेल प्रयुक्त होइत अछि।

अध्याय ९०० — Inheritance (वंशपरम्परा), Contact (संपर्क) आ Parallel Innovation (समानान्तर नवाचार) अलग कोना करी?

मूल पाठक अंश — तीनू सहभाषामे समान SOV tendency, postposition, honorific contrasts वा shared lexicon देखलासँ कारण स्वतः तय नहि होइत। Inheritance, areal contact आ widespread Indo-Aryan/typological pattern—तीनू candidate explanation हो सकैत अछि।

अध्याय ९०१ — Linguistic Typology (भाषा-प्रकारिकी): Feature (विशेषता), Value (मान) आ Dominance (प्रधानता)

मूल पाठक अंश — Linguistic Typology (भाषा-प्रकारिकी) भाषासभकेँ एक-दोसरा सँ तुलना कऽ structural possibilities आ distributions अध्ययन करैत अछि। Typological label diagnostic shorthand अछि; पूरा grammar नहि।

अध्याय ९०२ — Word-order Typology (पदक्रम-प्रकारिकी): SOV, NP Order, Adposition Order आ Correlations

मूल पाठक अंश — तीनू आधार-पाठमे general SOV tendency वर्णित अछि। अब corpus codingक प्रश्न: lexical S+O+V वाक्यमे SOV प्रतिशत कतेक? OSV/SVO जकाँ विकल्प कोन information-structure contextमे? Pronoun objects lexical NPसँ अलग? subordinate clause अलग?

अध्याय १०३ — Case Marking (कारक-चिह्न), Alignment (संरेखण) आ Differential Marking (भेदात्मक चिह्न)

मूल पाठक अंश — Typological Alignment (संरेखण) केवल school-grammar “कारक” सूची नहि। S/A/P coding सँ intransitive subject, transitive agent आ patientक case/agreement comparison कएल जाए।

अध्याय १०४ — Agreement Typology (सामञ्जस्य-प्रकारिकी), Honorificity (आदर) आ Locus of Marking (चिह्न-स्थान)

मूल पाठक अंश — Agreement (सामञ्जस्य)क controller (नियंत्रक) subject, object, recipient, honorific referent वा discourse participant हो सकैत अछि; target (लक्ष्य) verb, adjective, copula आदि।

अध्याय १०५ — Head/Dependent Marking (प्रधान/आश्रित चिह्न), NP Typology आ Possession (सम्बन्ध)

मूल पाठक अंश — Possessive constructionमे Possessor (सम्बन्धकर्ता) आ Possessee (सम्बन्धित वस्तु) अलग चिन्हू। हमर घर/हमर किताब, तोहर मित्र, ओकर किताब जकाँ source-attested genitive forms comparison candidates छथि।

अध्याय १०६ — Clause Typology (उपवाक्य-प्रकारिकी): TAM, Negation, Question, Relative, Complement, Coordination

मूल पाठक अंश — Clause typologyक practical matrixमे finite/nonfinite, TAM location, negator position, question strategy, relative-correlative construction, complementizer, coordinator, subordinate marker, auxiliary order आ verb-finality code करू।

अध्याय १०७ — Bilingual Word Recognition (द्विभाषिक शब्द-पहिचान): Lexical Access (शब्दकोशीय पहुँच) आ Cross-language Activation (अन्तर्भाषिक सक्रियण)

मूल पाठक अंश — Bilingual psycholinguisticsमें प्रमुख प्रश्न अछि—एक भाषा देखल/सुनलासँ दोसर भाषाक lexical candidates सेहो सक्रिय होइत अछि कि नहि।

अध्याय १०८ — Language Control (भाषा-नियंत्रण), Switching Cost (बदलाव-मूल्य), Multilingual Processing (बहुभाषिक प्रसंस्करण) आ स्थानीय प्रयोग-डिजाइन

मूल पाठक अंश — Greenक Inhibitory Control (निरोधात्मक नियंत्रण) model bilingual productionमें competing language representationsक controlक framework दैत अछि।

अध्याय १०९-१२६ : प्रमाण-सारणी, अभ्यास आ सन्दर्भ-अनुक्रम

अध्याय १०९ — Evidence Hierarchy (प्रमाण-स्तर), Source Citation (स्रोत-उद्धरण) आ Example Status (उदाहरण-स्थिति)

मूल पाठक अंश — भाषा-विज्ञानमे उदाहरणक विश्वसनीयता ओकर सुन्दरता सँ नहि, स्रोत आ जाँच-पद्धतिसँ निर्धारित होइत अछि। एहि अन्तिम भागमे चार प्रमाण-स्तर उपयोग कएल गेल अछि: A = प्रत्यक्ष स्रोत-पाठ/प्रकाशित व्याकरणमे भेटल रूप;

अध्याय ११० — ठेठी-अंगिका: Source-backed Example Bank (स्रोत-पुष्ट उदाहरण-बैंक)

मूल पाठक अंश — नीचाँक उदाहरणसभक उद्देश्य साहित्यिक पाठ वा व्याकरणक पुनर्मुद्रण नहि, बल्कि छोट linguistic tokens केँ रूप, कार्य आ विश्लेषणक आधार बनायब अछि। “पीरा”क उदाहरणसभ पीराक मूल पाठसँ प्रत्यक्ष पाठ-आधारित छथि;

अध्याय १११ — बज्जिका: Source-backed Example Bank (स्रोत-पुष्ट उदाहरण-बैंक)

मूल पाठक अंश — बज्जिका स्रोत-संग्रहमे मानक बज्जिका व्याकरण, व्याकरण-बोध, प्रथम व्याकरण, व्याकरणिक संरचना-अध्ययन, लोकगीत, लोककथा, कहानी आ शब्द-अध्ययन सहित व्यापक सामग्री अछि।

अध्याय ११२ — मैथिली: Source-backed Example Bank (स्रोत-पुष्ट उदाहरण-बैंक)

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय ११३ — Pronoun-Honorific Paradigms (सर्वनाम-आदर रूप-सारणी): समानान्तर त्वरित सन्दर्भ

मूल पाठक अंश — ई सारणी source-attested रूपक teaching/reference synthesis अछि; एकर उद्देश्य “तीनू एके प्रणाली” सिद्ध करब नहि। खाली कोष्टक/वैकल्पिक रूप क्षेत्रीय वितरणक प्रत्यक्ष field verification चाहैत अछि। सर्वनाम-सामञ्जस्य विश्लेषणक पाँच प्रश्न

अध्याय ११४ — Case, Postposition, Number, Classifier (कारक, उत्तरसर्ग, वचन, गणक)क समानान्तर रूप-सारणी

मूल पाठक अंश — Differential Marking (भेदात्मक चिह्न)क अध्ययन लेल “के/कै” देखिते कर्म मानब उचित नहि; recipient, genitive/postpositional phrase, human object आदि कार्य context सँ अलग करब आवश्यक अछि। Zero markingक अर्थ “case नहि” सेहो नहि;

अध्याय ११५ — Verb Paradigms (क्रिया-रूप-सारणी): TAM, Honorificity, Causative, Complex Predicate

मूल पाठक अंश — नीचाँक सारणी “जाय/पढ़ाय/खाय” सम्बन्धी source-attested teaching forms कै समानान्तर सन्दर्भ रूपमे संगठित करैत अछि। तीनू सहभाषामे एके tense-label mechanically equal नहि; form-function mapping corpus/fieldwork सँ जाँचल जाए।

अध्याय ११६ — Phonetics/Phonology Reference Charts (ध्वनिविज्ञान/ध्वनितत्त्व सन्दर्भ-सारणी)

मूल पाठक अंश — ई charts articulatory analysis लेल working reference छथि, “तीनू सहभाषक पूर्ण phoneme inventory” नहि। देवनागरीक वर्ग, source descriptions, IPA articulatory categories आ recorded-data workflow एकसाथ देखाओल गेल अछि।

अध्याय ११७ — Syntax Diagnostics (वाक्यविज्ञान परीक्षण): Constituency, Dependency, Valency, Clause Structure

मूल पाठक अंश — Phrase Structure (पदसमूह-संरचना)क पाठ्य-ढाँचा Head-Dependent (प्रधान-आश्रित) विश्लेषण Dependency analysisमे finite/main verb clauseक structural head मानि arguments/adjuncts ओकरा संग जोडा जा सकैत छथि;

अध्याय ११८ — Semantics (अर्थविज्ञान): Lexical Relations, Entailment, Presupposition, Scope, Roles, Compositionality

मूल पाठक अंश — Practical semantic annotationमे एक sentenceक lexical meaning, grammatical contribution, reference, inference आ discourse context अलग columnsमे राखू। “हम काल्हि नहि जाएब”मे negation event propositionपर;

अध्याय ११९ — Pragmatics and Discourse (प्रयोगविज्ञान आ प्रवचन): Deixis सँ Conversation Analysis धरि

मूल पाठक अंश — Conversation Analysis (वार्तालाप-विश्लेषण) लेल constructed sentence पर्याप्त नहि। Audio/video natural interaction, precise transcription, pause/overlap markers, participant consent आ sequential context चाही।

अध्याय १२० — Final Integrated Exercises (अन्तिम समेकित अभ्यास): 120 कार्य

मूल पाठक अंश — ई अभ्याससभ “परिभाषा याद करू” प्रकार नहि; data classification, source checking, paradigm building, corpus counting, experiment design आ critical interpretation पर आधारित छथि। खुलल कार्यक एकाधिक उचित उत्तर सम्भव अछि।

अध्याय १२१ — Answer Framework (उत्तर-ढाँचा) आ मूल्यांकन-मापदण्ड

मूल पाठक अंश — खुलल शोध-अभ्यासक एक मात्र “उत्तरमाला” नहि होइत; गुणवत्ताक मापदण्ड चाही। नीचाँक framework प्रत्येक exercise पर लागू कएल जा सकैत अछि। • दावा: एक वाक्यमे सीमित, falsifiable statement लिखू।

अध्याय १२२ — English-अनूदित पारिभाषिक शब्दावली (Glossary)

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय १२३ — Abbreviations and Symbols (संक्षेप आ संकेत)

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय १२४ — Subject Index by Chapter (विषय-अनुक्रमणिका: अध्याय-सन्दर्भ)

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय १२५ — Language/Form Index (सहभाषा/रूप-अनुक्रमणिका)

स्रोत-अनुक्रममे अध्यायक शीर्षक उपलब्ध अछि।

अध्याय १२६ — समेकित निष्कर्षः समानान्तर व्याकरणसँ आधुनिक भाषा-विज्ञान धरि

मूल पाठक अंश — एहि ग्रन्थक अन्तिम अध्याय चारू मुख्य स्तर—वर्णनात्मक व्याकरण, समानान्तर तुलना, आधुनिक भाषा-विज्ञान आ प्रमाण-आधारित शोध-पद्धति—केँ एक सूत्रमे जोड़ैत अछि।

चतुर्थ भाग — भाग/परिशिष्ट आधारित अतिरिक्त पूर्ण आवरण

खण्ड १ — ठेठी-अंगिका : व्याकरण आ रचना

ठेठी-अंगिका व्याकरण आरो रचना

भाग १ : व्याकरण

भाग २ : रचना कला

व्यवहारिक संदर्भ-पोथी

ठेठी-अंगिका व्याकरण आ रचना

पोथी के बात

ई पोथी कोना पढ़ी

भाग १ — भाषा, ध्वनि आरो लिखाय

१. भाषा आरो व्याकरण

२. मानक आरो क्षेत्रीय रूप

३. स्वर, मात्रा आरो नासिकता

४. व्यंजन आरो उच्चारण

५. वर्तनी आरो विराम-चिह्न

भाग २ — शब्द आरो रूप

६. संज्ञा

७. लिंग

८. वचन आरो समूह-सूचक

९. कारक आरो उत्तरसर्ग

१०. सर्वनाम आरो आदर

११. विशेषण, निर्धारक आरो संख्या

१२. क्रिया के आधार

१३. काल, पक्ष आरो भाव

- १४. पुरुष, आदर आरो क्रिया-सामंजस्य
- १५. आज्ञा, निषेध, संयुक्त आरो प्रेरणार्थक क्रिया
- १६. अव्यय आरो जोड़निहार शब्द
- १७. शब्द-रचना, समास आरो दोहराव

भाग ३ — वाक्य-विचार

- १८. वाक्य के बुनियादी ढाँचा
- १९. निषेध
- २०. प्रश्न
- २१. आज्ञा, विनती आरो सलाह
- २२. उपवाक्य आरो संबंधी-वाक्य
- २३. अर्थ अनुसार वाक्य-भेद
- २४. वाच्य आरो सूचना के केंद्र
- २५. प्रत्यक्ष आरो परोक्ष कथन
- २६. अंग्रेजी व्याकरण सँ व्यवहारिक तुलना

भाग ४ — रचना-कला

- २७. शुद्ध आरो असरदार वाक्य
- २८. अनुच्छेद
- २९. चिट्ठी, आवेदन आरो ई-मेल
- ३०. निबंध
- ३१. संवाद आरो साक्षात्कार
- ३२. समाचार आरो रिपोर्ट
- ३३. सार-लेखन आरो अनुवाद
- ३४. संपादन के पाँच फेरा
- ३५. काव्य-भाषा, छंद आरो अलंकार

भाग ५ — अभ्यास आरो सहायक सामग्री

- ३६. मिश्रित अभ्यास

३७. उत्तरमाला

३८. सर्वनाम-सारणी—त्वरित संदर्भ

३९. क्रिया-सारणी—त्वरित संदर्भ

४०. व्यवहारिक शब्दावली

४१. ठेठी-अंगिका लेखनक शैली-पत्र

४२. स्रोत आरो संपादकीय सीमा

अंतिम बात

खण्ड २ — बज्जिका : व्याकरण आ रचना

बज्जिका व्याकरण आ रचना

बज्जिका भाषा में लिखल एगो व्यवहारिक व्याकरण

पहिल भाग : भूमिका

१.१ बज्जिका के परिचय

१.२ एह पोथी के ढंग

दोसर भाग : ध्वनि-विचार

२.१ स्वर आ व्यंजन

२.२ अनुनासिकता

२.३ बज्जिका के खास ध्वनि-आदत

(क) द्वित्व — अक्षर के दोहरावल जाना

तेसर भाग : संज्ञा

३.१ संज्ञा आ भेद

३.२ लिंग

३.३ वचन

३.४ कारक आ परसर्ग

चौथा भाग : सर्वनाम

४.१ पुरुष आ आदर

४.२ रूप (कारक के साथ)

४.३ आन सर्वनाम

पाँचवाँ भाग : विशेषण

५.१ भेद आ “-का” रूप

५.२ तुलना

छठा भाग : गिनती आ संख्या-शब्द

सातवाँ भाग : क्रिया

७.१ धातु आ पुरुष

७.२ सहायक क्रिया (होना)

७.३ काल-तालिका (“स्वा-” धातु)

सामान्य वर्तमान

तात्कालिक वर्तमान (चालू काम)

पूर्ण वर्तमान

सामान्य भूत

अपूर्ण भूत (चालू भूत)

सामान्य भविष्यत्

७.४ व्यक्ति-प्रत्यय के सार

७.५ आज्ञा, संयुक्त क्रिया, वाच्य

आठवाँ भाग : क्रिया-विशेषण

नवाँ भाग : परसर्ग आ निपात

दसवाँ भाग : समुच्चयबोधक

ग्यारहवाँ भाग : विस्मयादिबोधक

बारहवाँ भाग : वाक्य-रचना

१२.१ रचना के आधार पर

१२.२ अर्थ के आधार पर (नौ भेद)

तेरहवाँ भाग : शब्द-रचना

१३.१ उपसर्ग

१३.२ प्रत्यय

चौदहवाँ भाग : रचना

१४.१ चिट्ठी (अपन बाबूजी के)

१४.२ अरजी (प्रधानाध्यापक के, छुट्टी लेल)

१४.३ निबन्ध : हम्मर गाँव

१४.४ संवाद (दू दोस के बीच)

१४.५ कहानी : प्यासा कौआ

परिशिष्ट — १ : बज्जिका मुहावरा-कहावत कोश

(अ) मुहावरा

(आ) कहावत / लोकोक्ति

नारी-विषयक

धन-धमंड आ तुलना-विषयक

व्यवहार-नीति

परिशिष्ट — २ : बज्जिका-हिन्दी शब्दकोश (सम्पूर्ण)

परिशिष्ट — ३ : अभ्यास-पुस्तिका

अभ्यास-सेट १ : ध्वनि

अभ्यास-सेट २ : संज्ञा आ सर्वनाम

अभ्यास-सेट ३ : विशेषण आ गिनती

अभ्यास-सेट ४ : क्रिया

अभ्यास-सेट ५ : वाक्य आ रचना

उत्तर-संकेत (कुछ)

व्यवहारिक संदर्भ-पोथी

बज्जिका व्याकरण आ रचना

ए पोथी के बात

ए पोथी के कइसे पढ़ी

भाग १ — भाषा, ध्वनि आ लिखाइ

१. भाषा आ व्याकरण

भाषा के मुख्य इकाई

नियम आ व्यवहार

अभ्यास १

२. मानक बज्जिका आ क्षेत्रीय रूप

लिखित मानक के चार कसौटी

शैली के तीन स्तर

अभ्यास २

३. देवनागरी, स्वर आ मात्रा

मुख्य स्वर

मात्रा के सावधानी

अनुस्वार आ चंद्रबिंदु

अभ्यास ३

४. व्यंजन आ उच्चारण

संयुक्ताक्षर

उच्चारण-जाँच

अभ्यास ४

५. शुद्ध लिखाई आ शब्द-विभाजन

एक शब्द कि अलग शब्द

समान वर्तनी के नियम

विराम-चिह्न

अभ्यास ५

भाग २ — शब्द आ रूप

६. संज्ञा

संज्ञा के भेद

संज्ञा के वाक्य में काम

गणनीय आ अगणनीय

अभ्यास ६

७. लिंग

बनावट

विशेषण आ लिंग

गलती-सुधार

अभ्यास ७

८. वचन आ बहुवचन

अभ्यास ८

९. कारक आ संबंध-बोधक

सर्वनाम के बदलल रूप

अभ्यास ९

१०. सर्वनाम आ आदर

आदर के चुनाव

निजवाचक

प्रश्नवाचक सर्वनाम

अभ्यास १०

११. विशेषण, निर्धारक आ संख्या

विशेषण के भेद

संख्या आ गणक

अभ्यास ११

१२. क्रिया के बुनियाद

सकर्मक आ अकर्मक

अपूर्ण रूप

सहायक क्रिया

अभ्यास १२

१३. काल, पक्ष आ भाव

वर्तमान

भूत

भविष्य

संभावना, शर्त आ इच्छा

अभ्यास १३

१४. व्यक्ति, आदर आ क्रिया-सामंजस्य

क्रमिक जाँच

संख्या के सावधानी

अभ्यास १४

१५. प्रेरणार्थक, संयुक्त आ अनुज्ञार्थक क्रिया

प्रेरणार्थक

संयुक्त क्रिया

अनुज्ञार्थक

अभ्यास १५

१६. अव्यय आ जोड़ै वाला शब्द

मुख्य समूह

संबंध-बोधक जोड़ी

अभ्यास १६

१७. शब्द-रचना, संधि आ समास

उपसर्ग आ प्रत्यय

दोहराव

समास-जइसन जोड़

संधि

अभ्यास १७

भाग ३ — वाक्य-विचार

१८. वाक्य के मूल ढाँचा

वाक्य के अंग

सरल, संयुक्त आ मिश्र

स्थान आ समय

बेकार दोहराव

अभ्यास १८

१९. निषेध

दायरा

दोहरा निषेध

‘नहि’ आ ‘मत’

अभ्यास १९

२०. प्रश्न

प्रश्न-शब्द

शिष्ट प्रश्न

अभ्यास २०

२१. आज्ञा, विनती, सलाह आ शर्त

आज्ञा के स्तर

शर्त

अभ्यास २१

२२. उपवाक्य आ संबंधी-वाक्य

‘जे-ऊ’ ढाँचा

‘कि’ वाला कथन

कारण, समय आ उद्देश्य

अभ्यास २२

२३. वाच्य आ बात के केंद्र

कर्तृवाच्य पहिले

कर्मवाच्य कहिया

अभ्यास २३

२४. सीधा आ परोक्ष कथन

बदलाव

संवाद में विराम

अभ्यास २४

२५. अंग्रेजी व्याकरण से संरचनागत तुलना

मुख्य अंतर

अनुवाद के नियम

अभ्यास २५

भाग ४ — रचना

२६. शुद्ध आ असरदार वाक्य

चार जाँच

गलती आ सुधार

अभ्यास २६

२७. अनुच्छेद-लेखन

नमूना: हमर गाँव के भिनसर

अनुच्छेद बनाबै के तरीका

अभ्यास २७

२८. चिट्ठी, आवेदन आ ई-मेल

निजी चिट्ठी

आवेदन

अभ्यास २८

२९. निबंध

रूपरेखा: बज्जिका आ हमनी के जिम्मेदारी

नमूना अंश

अभ्यास २९

३०. संवाद आ साक्षात्कार

नमूना: पुस्तकालय में

साक्षात्कार

अभ्यास ३०

३१. समाचार आ रिपोर्ट

नमूना

रिपोर्ट के जाँच

अभ्यास ३१

३२. सार-लेखन

तरीका

शीर्षक

अभ्यास ३२

३३. अनुवाद

पाँच चरण

उदाहरण

अभ्यास ३३

३४. संपादन आ प्रूफ-जाँच

पाँच चक्कर

खोज-सूची

अंतिम पाठ

अभ्यास ३४

भाग ५ — अभ्यास, उत्तर आ सारणी

३५. मिश्रित अभ्यास

क. रूप पहिचानी

ख. रूप बदली

ग. वाक्य सुधारी

घ. वाक्य जोड़ी

ङ. रचना

३६. उत्तरमाला

मिश्रित अभ्यास के उत्तर

३७. सर्वनाम झटपट सारणी

३८. क्रिया झटपट सारणी

‘जा’

‘खा’

३९. व्यवहारिक बज्जिका शब्दावली

४०. लेखक-संपादक के शैली-पत्र

समापन

खण्ड ३ — मैथिली : व्याकरण आ रचना

समेकित निष्कर्ष : चार खण्डक पारस्परिक स्वायत्तता

एकहि पोथीक भीतर बहुविध भाषाक व्याकरण आ वैज्ञानिक भाषा-अध्ययन जोड़बाक योजना बहुभाषिक सम्पादनक चुनौती उत्पन्न करैत अछि। शब्दरूपक समानता आ भाषागत समानता एक नहि; प्रत्येक स्रोतकें अपन अनुक्रम आ प्रमाणक अधिकार रहबाक चाही।

१२६ अध्यायक सतत क्रम सत्यापित अछि; एहि पञ्जीमे क्रमांक १ सँ १२६ धरि प्रत्येक मूल शीर्षकक अन्तर्गत पाठ-साक्ष्य अथवा स्रोत-उपस्थितिक स्थिति आ स्वतंत्र परीक्षण-विषय राखल गेल अछि।

भावी विस्तारित आलोचनामे अध्यायवार मूल उदाहरणक पृष्ठ, संस्करणान्तर, पाठ-समानता, क्षेत्रीय साक्षात्कार आ परीक्षण-कोड अलग जोड़ल जा सकैत अछि। एखन अविश्वस्त तर्ककें प्रमाणित निष्कर्ष बनि नहि देखाओल गेल अछि।

सन्दर्भ-सूची

मुख्य ग्रन्थ — गजेन्द्र ठाकुर, मैथिलीक समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा विज्ञान (परिवर्धित संस्करण, २०२६)।

main — <https://videha-ejournal.github.io/videha/index.htm>

archive — <https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm>

samagra — <https://www.videha.co.in/gajendra-thakur-samagra.htm>

समापन — मैथिली, बज्जिका आ ठेठी-अंगिकाक समानान्तर पाठ भाषा-वर्णन, क्षेत्रीय व्यवहार आ आधुनिक भाषा-विज्ञानक बीच संवादक बाट खोलैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५५

एहि खण्डमे ठेठी-अंगिका, बज्जिका आ मैथिलीक स्वतंत्र भाषिक रूपसँ संवाद करैत समानान्तर व्याकरणक समग्र पद्धति, रचना-शिक्षण आ भाषा-विज्ञानक विस्तारित अध्याय-संरचनाक समीक्षा प्रस्तुत अछि।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह